पन्ने पलटने पर.....


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | **अनुताप** | **लघुकथा** | **सुकेश साहनी** | 2 |
| | सारांश | | | 2 |
| | प्रश्न और उत्तर | | | 2 |
| | यात्री की डायरी | | | 5 |
| | पिछले सालों के प्रश्न पत्रों से | | | 5 |
| | परीक्षा की तैयारी केलिए | | | 6 |
| 2. | **मधुऋतु** | **कविता** | **जयशंकर प्रसाद** | 8 |
| | कवितांश पढ़ें और उत्तर लिखें | | | 8 |
| | आस्वादन टिप्पणी | | | 11 |
| | पिछले सालों के प्रश्न पत्रों से | | | 11 |
| | परीक्षा की तैयारी केलिए | | | 13 |
| 3. | **जुलूस** | **नाट्यरूपांतर** | **चित्रा मुद्गल** | 14 |
| | सारांश | | | 14 |
| | प्रश्न और उत्तर | | | 14 |
| | चरित्र चित्रण - इब्राहिम अली | | | 15 |
| | दारोगा बीरबल सिंह, शंभुनाथ | | | 16 |
| | मैकू, दीनदयाल | | | 17 |
| | पिछले सालों के प्रश्न पत्रों से | | | 18 |
| | परीक्षा की तैयारी केलिए | | | 20 |
| 4. | **दोहे** | **कविता** | **कबीरदास** | 21 |
| | दोहें पढ़े और प्रश्नों के उत्तर लिखें | | | 21 |
| | पिछले सालों के प्रश्न पत्रों से | | | 24 |
| 5. | **आनंद की फुलझड़ियाँ** | **निबंध** | **अनंत गोपाल शेवड़े** | 27 |
| | सारांश | | | 27 |
| | प्रश्न और उत्तर | | | 27 |
| | वार्तालाप (संभ्रांत महिला और सहयात्री), विज्ञापन (रक्तदान) | | | 33 |
| | रकम की आत्मकथा | | | 34 |
| | परीक्षा केंद्रित प्रश्न | | | 34 |
| | पिछले सालों के प्रश्न पत्रों से | | | 35 |
| 6. | **पत्थर की बेंच** | **कविता** | **चंद्रकांत देवताले** | 38 |
| | सारांश | | | 38 |
| | कवितांश पढ़ें और उत्तर लिखें | | | 38 |
| | आस्वादन टिप्पणी | | | 39 |
| | लेख (समाज निर्माण में सार्वजनिक जहगों का योगदान) | | | 40 |
| | पिछले सालों के प्रश्न पत्रों से | | | 40 |
| 7. | जीवन-वृत्त | | | 42 |
| 8. | विज्ञापन | | | 45 |
| 9. | पोस्टर | | | 45 |
| 10. | अनुवाद | | | 47 |
| 11. | निबंध/संगोष्ठी केलिए आलेख | | | 47 |

**Lessons Out of FOCUS AREA**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 12. | सूचना का अधिकार पत्र | | | 48 |


Do Not Copy

13. फिल्मी समीक्षा 51
14.पारिभाषिक शब्दावली 52

## अनुताप — सुकेश साहनी

हिंदी लघुकथा क्षेत्र का सशक्त हस्ताक्षर है, श्री सुकेश साहनी। टूटते सामाजिक मूल्यों पर चिंता, ग्रामीण संस्कृति का भोला–भाला चित्रण, शहरी सभ्यता के खोखलेपन, निम्न मध्यवर्ग की पीड़ा और निराशा आदि इनकी रचनाओं की विशेषताएं है।

**प्रमुख पात्रः** असलम, बाबूजी (यात्री), नया रिक्शावाला

## सारांश:

यात्री दफ़्तर जाने केलिए रिक्शा की प्रतीक्षा में खड़ा है। रोज़ असलम नामक एक रिक्शावाला उसे दफ़्तर पहुँचाता था। उस दिन नए रिक्शेवाले आया। रिक्शा में चढ़कर, बातचीत के बीच उसको मालुम हुआ कि असलम की मृत्यु हुई है।

असलम की मृत्यु की खबर सुनते ही यात्री चौंक पड़ी। कल भी असलम की रिक्शा में यात्रा किया था। उसकी दोनों गुर्दे खराब थे। डॉक्टर ने उसे रिक्शा चलाने से मना कर दिया था।

उसे याद आया कि कल रिक्शा चलाते समय वह एक साथ से पेट पकड़कर धीरे–धीरे कराह रहा था। आगे चढ़ाई ही चढ़ाई था। यात्री तो रिक्शा से उतरने के बारे में भी सोचा। लेकिन हमदर्दी के अभाव में,अधिक पैसे माँगने का नाटक होगा, ऐसा सोचकर वह रिक्शा से नहीं उतरा।

आज असलम की मृत्यु की खबर सुनकर यात्री पश्चाताप विवश हो गया। डाकघर की चढ़ाई तक आते ही वह होश में आ गया और रिक्शा रोकने को कहा। वह रिक्शे से उतरकर एक अपराधी की तरह रिक्शे के साथ चला।

## प्रश्न और उत्तर:

1. 'उसे शाक–सा लगा', क्यों?

   कल तक दफ़्तर ले जानेवाला असलम की मृत्यु के बारे में सुनकर यात्री शाक–सा लगा।

2. 'उसे शाक–सा लगा', क्यों?

   रोज़ की तरह यात्री असमल की प्रतीक्षा में रास्ते में खड़ा तो एक नया रिक्शावाला आया। उसकी रिक्शा में चढ़कर असलम के बारे में पूछा तो उसने बताया कि कल असलम की मृत्यु हुई है। कल भी उन्होंने असलम की रिक्शा में यात्रा किया था। असलम की आकस्मिक मृत्यु की खहर सुनकर यात्री शाक–सा लगा।

3. 'उसे शाक–सा लगा', किसको? क्यों?

   असलम की आकस्मिक मृत्यु के बारे में सुनकर यात्री शाक–सा लगा।

4. डॉक्टर ने किसको रिक्शा चलाने से मना कर रखा था, क्यों?

   असलम को। क्योंकि उनके दोनों गुर्दों में खराबी थी।

5. उसकी आवाज़ में गहरी उदासी थी। किसकी आवाज़ में? क्यों?

   नए रिक्शेवाले की आवाज़ में गहरी उदासी थी क्योंकि वह अपना दोस्त असलम की मृत्यु के बारे में बता रहे हैं।

6. असलम की मृत्यु कैसे हुई?

   यात्री को दफ़्तर पहुँचाकर लौटते समय असलम के पेशाब बंद हो गया था। आस्पताल ले जाते वक्त रास्ते में ही उसकी मृत्यु हुई।

7. रास्ते में ही किसकी दम तोड़ दिया? कैसे?

   रास्ते में असलम की दम तोड़ दिया। यात्री को दफ़्तर पहुँचाकर लौटा तो उसके पेशाब बंद हो गया था और आस्पताल ले जाते वक्त रास्ते में ही दम तोड़ दिया था।

Do Not Copy

8. आगे वह कुछ नहीं सुन सका – कौन? क्यों?

यात्री। असलम की मृत्यु के बारे में सुनकर एक सन्नाटे ने उसे अपने आगोश में ले लिया। इसलिए वह आगे कुछ नहीं सुन सका।

9. एक सन्नाटे ने उसे अपने आगोश में ले लिया – किसको?क्यों?

यात्री को। असलम की मृत्यु के बारे में सुनकर उसे शाक–सा लगा। असलम से अपना व्यवहार के बारे में सोचते वक्त एक प्रकार का सन्नाटे ने उसे आगोश में ले लिया।

10. कल की घटना किसकी आँखों के सामने सजीव हो उठी?

कल की घटना यात्री की आँखों के सामने सजीव हो उठी।

11. 'कल की घटना किसकी आँखों के सामने सजीव हो उठी' – घटना क्या है?

कल असलम की रिक्शा में वह दफ़्तर गया था। नटराज टाकीज़ पार करते समय असलम धीरे–धीरे कराह रहा था। बीच–बीच में वह एक हाथ से पेट भी पकड़ लेता था। उसकी दर्द देखकर पहले यात्री को रिक्शे से उतरने की इच्छा हुई। लेकिन अगले क्षण उसने सोचा कि ये सब उसके नाटक होगा। उस दिन वह उसी रिक्शा में बैठकर दफ़्तर पहुँचा।

12. 'कल की घटना किसकी आँखों के सामने सजीव हो उठी' – क्यों?

कल असलम की रिक्शा में वह दफ़्तर गया था। नटराज टाकीज़ पार करते समय असलम धीरे–धीरे कराह रहा था। बीच–बीच में वह एक हाथ से पेट भी पकड़ लेता था। उसकी दर्द देखकर पहले यात्री को रिक्शे से उतरने की इच्छा हुई। लेकिन अगले क्षण उसने सोचा कि ये सब उसके नाटक होगा। उस दिन वह उसी रिक्शा में बैठकर दफ़्तर पहुँचा।

लेकिन आज जब असलम की मृत्यु की खबर सुनते ही एक सन्नाटे ने उसे आगोश में ले लिया और कल की घटना उसकी आखों के सामने सजीव हो उठी।

13. असलम कैसे रिक्शा चलाते थे?

रिक्शा चलाते हुए असलम कराह रहा था। वह बीच–बीच में एक हाथ से पेट पकड़ लेता था। बीच में वह रिक्शा से उतर पड़े और अपने दाहिना हाथ गद्दी पर जमाकर उस चढ़ाई पर रिक्शा खींच रहे थे। वह बुरी तरह हाँफ रहा था, उसके गंजे सिर पर पसीने दिखाई देने लगी।

14. 'रोज़ का मामला हैं..... कब तक उतरना रहेगा.... ये लोग नाटक भी खूब कर लेते हैं, इसके साथ हमदर्दी जताना बेवकूफ़ी होगी' – यात्री ने असलम के प्रति हमदर्दी क्यों नहीं दिखाई?

यात्री असलम की रिक्शा में दफ़्तरजा रहे थे। उस दिन रिक्शा चलाते–चलाते असलम धीरे–धीरे कराह रहा था। चढ़ाई में रिक्शा चलाने में उसकी प्रयास देखकर यात्री रिक्शा से उतरने के बारे में भी सोचा। लेकिन उसने सोचा कि इन लोगों के साथ हमदर्दी जताना बेवकूफ़ी होगी। असलम के प्रति कोई सहानुभूति नहीं प्रकट किया।

15. 'रोज़ का मामला हैं..... कब तक उतरना रहेगा.... ये लोग नाटक भी खूब कर लेते हैं, इसके साथ हमदर्दी जताना बेवकूफ़ी होगी' – कौन ऐसा सोचते हैं? क्या आप इस अभिप्राय से सहमत हैं या नहीं? अपना मत प्रकट करें।

यात्री ऐसा सोचते हैं। मैं इस अभिप्राय ,से सहमत नहीं हुँ। श्रमजीवियों की पीड़ा और उनके साथ होनेवाले अनादर और उपेक्षा का भाव यहाँ विद्यमान है। यदि असलम के प्रति ज़रा सहानुभूति प्रकट किए तो वह अब भी जीवित रहेगा। यहाँ हमदर्दी का अभाव उस निरीह की मृत्यु का कारण बन गया। मैं चाहती हुँ कि यदि हमें अवसर मिलें तो ज़रूर दूसरों की सहायता अवश्य करें।

16. 'इनके साथ हमदर्दी जताना बेवकूफी होगी' – कौन ऐसे सोचते हैं?

यात्री ऐसे सोचते हैं।

Do Not Copy

17. 'इनके साथ हमदर्दी जताना बेवकूफी होगी' – यहाँ यात्री का कौन–सा मनोभाव प्रकट हो रहा है?

यात्री असलम की रिक्शा में दफ़्तर जा रहे थे। रिक्शा चलाते–चलाते वह धीरे–धीरे कराह रहा था। डाक बंगला की चढ़ाई में रिक्शा चलाने में उसका प्रयास देखकर यात्री रिक्शा से उतरने के बारे में भी सोचा। लेकिन अगले क्षण उसने सोचा कि इन लोगों से हमदर्दी जताना बेवकूफी होगी। असलम के प्रति कोई सहानुभूति नहीं प्रकट किया। श्रमजीवियों की पीड़ा और उसके साथ होनेवाले अनादर और उपेक्षा का भाव यहाँ विद्यमान है। आजकल समाज में श्रमजीवियों के प्रति दया, सहानुभूति आदि संवेदनाएँ दिखानेवाले लोगों का अभाव अवश्य हम देख सकेंगे।

18. 'इनके साथ हमदर्दी जताना बेवकूफी होगी' – क्या आप यात्री के इस मनोभाव से सहमत है? अपना मत प्रकट कीजिए।

मैं, यात्री के इस मनोभाव से सहमत नहीं हुँ। 'इनके साथ हमदर्दी जताना बेवकूफी होगी' – ऐसा सोचकर यात्री उस रिक्शावाले के प्रति सहानुभूति नहीं प्रकट किया। यदि वह सहानुभूति दर्शाया तो वह रिक्शावाले अब भी जीवित रहेगा।

श्रमजीवियों की पीड़ा और उनके साथ होनेवाले अनादर और उपेक्षा भाव में बदलाव आना अनिवार्य है। आजकल समाज में श्रमजीवियों के प्रति दया, सहानुभूति आदि संवेदनाएँ दिखानेवाले लोग बहुत कम है।

19. कौन अपराधी की भाँति सिर झुकाकर रिक्शे से साथ–साथ चल रहा?

यात्री किसी अपराधी की भाँति सिर झुकाकर रिक्शे के साथ–साथ चल रहा।

20. किसी कार के हार्न से चौंककर वह वर्तमान में आ गया, कौन? यात्री।

21. कार के हार्न सुनकर यात्री क्यों चौंक पड़ा?

असलम की मृत्यु के बारे में सुनकर यात्री शाक–सा लगा। एक सन्नाटे ने उसे अपने आगोश में ले लिया। कल की घटना उसकी आँखों के सामने सजीव हो उठी। सोचकर वे स्तब्ध हो गए और एक कार के हार्न से वह चौंक पड़ी।

22. रिक्शा तेज़ी से नटराज डाकीज़ से डाक बंगलेवाली चढ़ाई की ओर बढ़ रहा था। 'रुको!' किसने किससे ऐसा कहा? क्यों?

यात्री ने नए रिक्शेवाले से इस प्रकार कहा। नए रिक्शेवाले से असलम की मृत्यु के बारे में सुनकर यात्री शाक–सा लगा। एक सन्नाटे ने उसे अपने आगोश में ले लिया। कल भी वह असलम के साथ दफ़्तर गया था। रिक्शा चलाते हुए वह धीरे–धीरे कराह रहा था। सामने की चढ़ाई में रिक्शा खींचना उतना आसान नहीं था। लेकिन असलम की परेशानी यात्री न समझा। उसे दफ़्तर पहुँचाकर लौटते समय रास्ते में ही उसकी मृत्यु हुई। आज उस मृत्यु के बारे में सुनकर, पिछले दिन की घटना और असलम के साथ अपने व्यवहार वह स्तब्ध हो गए और एक कार के हार्न से वह चौंक पड़ी। फिर वह रिक्शा से उतर पड़ा।

23. कौन हैरानी से किसकी ओक देखा? क्यों?

नए रिक्शेवाले हैरानी से यात्री की ओर देखा। बीच में रिक्शा रुक कर यात्री नीचे उतर पड़ा। उद कदकाठी आदमी केलिए वह रिक्शेवाले केलिए वह चढ़ाई खास मायने नहीं थी। इसलिए वह हैरानी से यात्री को देखा।

24. किस केलिए वह चढ़ाई कोई खास मायने नहीं थीं? क्यों?

नए रिक्शेवाले बहुत मज़बूत कदकाठी का था। इसलिए उस केलिए वह चढ़ाई कोई खास मायने नहीं थी।

25. असलम के प्रति यात्री का व्यवहार कैसे थे?

असलम के प्रति यात्री का व्यवहार कठोर था। असलम की परेशानी देखकर एक बार वह रिक्शे से उतरने के बारे में सोचते है। लेकिन अगले क्षण, ये लोग नाटक कर लेते हैं, ऐसा सोचकर वह रिक्शे में हीं बैठते हैं। असलम के साथ वह हमदर्दी नहीं जताया।

26. 'वह किसी अपराधी की भाँति सिर झुकाकर रिक्शे के साथ–साथ चल रहा था' – क्यों?

Do Not Copy

यात्री असलम की प्रतीक्षा में घर से निकला। लेकिन एक नए रिक्शेवाला आया। उन्होंने असलम के बारे में उससे पूछा तो पता चला कि कल उसकी मृत्यु हुई थी। पश्चाताप से विवश यात्री की आँखों के आगे कल की घटना सजीव हो उठी। चढ़ाई में रिक्शा चलाते–चलाते वह कराह रहा था। उसके प्रयास देखकर यात्री ने रिक्शा से उतरने के बारे में भी सोचा। लेकिन उसी रिक्शा में बैठकर वह दफ़्तर पहुँचा। वहाँ से लौटते वक्त रास्ते में ही असलम की मृत्यु हुई।

असलम की मृत्यु की खबर सुनते ही यात्री अपने हमदर्दी के अभाव के बारे में सोचकर रिक्शे से उतरकर अपराधी की भाँति सिक झुकाए, रिक्शे के साथ–साथ चला।

## ➢ यात्री की डायरी।

20.7.2019 सोमवार

आज.....मैं क्या लिखूँ? कैसे लिखूँ?रोज़ की तरह घर से निकला। असलम की प्रतीक्षा में रास्ते में खड़ा। एक नए रिक्शेवाले आए। उसके रिक्शे में बैठना उतना आराम नहीं लगा। असलन कितनी सावधानी से रिक्शा चलाते थे। उसको क्या हुआ? किससे पूछूँ?

नए रिक्शेवाले से असलम के बारे में पूछा। लेकिन उत्तर सुनकर मुझे शाक–सा लगा। उसकी मृत्यु कल हुई थी! विश्वास नहीं हुआ। आगे की बातें... ..मैं सुन नहीं सका। कल भी मैं ने उसकी रिक्शा में बैठा था।

कल मैं ने क्या किया? उसकी कराह देखकर रिक्शा से उतरने के बारे में भी सोचा था। लेकिन अगले क्षण मेरा दिमाग खराब हो गया। मैं न सोचा, वह उसका नाटक होगा, ऐसे लोगों के साथ हमदर्दी जताने से क्या फायदा है?

शायद उसकी मृत्यु इतनी जल्दी होने का कारण मैं हूँगा। मेरी हमदर्दी का अभाव! यदि मैं ज़रा सहानुभूति दिखाएँ तो..... आज भी वह हमारे साथ होगा.....। उसका चेहरा, दयनीय आँखें.... कैसे भूलूँ?

पश्चाताप से भरे मन से मैं रिक्शा से उतरा। अपराध बोध से मेरा मन भर उठा। नटराज टाकीज़ से डाक बंगलेवाली वह चढ़ाई..... मैं ने टहलाकर पार किया। मन की बोझ दूर होने की प्रतीक्षा में..... यदि मनुष्य में अपने सहजीवियों के प्रति सहानुभूति है तो कितना अच्छा होगा.....

## पिछले सालों के परीक्षा में आए प्रश्न:

**MARCH 2015**

1. यात्री शाम को घर पहुँचा। उसकी परेशानी देखकर पत्नी ने कारण पूछा। यात्री ने असलम की मृत्यु की खबर सुनाई। यात्री और पत्नी के बीच का वार्तालाप लिखिए। **सहायक बिंदु:** असलम की मृत्यु की खबर – असलम के प्रति अपना व्यवहार – हमदर्दी का अभाव – पश्चाताप से उत्पन्न अनुताप (Score 8)

**SEPT 2016 (Imp)**

2. यात्री का मन संघर्ष से भरा था। वह अपना संघर्ष ड़ायरी में लिख रहा है। वह डायरी लिखिए।

**सहायक बिंदु:** असलम की मृत्यु की खबर – असलम के प्रति अपना व्यवहार – हमदर्दी का अभाव – श्वाताप से उत्पन्न अनुताप (Score 7)

**MARCH 2018**

3. उसके दोनों गुर्दों में खराबी थी, डॉक्टर ने रिक्शा चलाने से मना कर रखा था। डॉक्टर द्वारा मना करने पर भी असलम क्यों रिक्शा चलाते रहा? (एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखें।) (Score 2)

4. असलम की मृत्यु की खबर सुनकर यात्री बहुत दुखी हुए। घर पहुँचकर यात्री अपनी पत्नी से इसके बारे में बातें करता है। वह बातचीत तैयार कीजिए। **सहायक बिंदु:** रोज़ की तरह दफ़्तर की यात्रा – मृत्यु की खबर सुनना – अपने व्यवहार से उत्पन्न पश्चाताप (Score 6)

**MARCH 2019**

5. 'उसे शाक–सा लगा' किसको? क्यों?
(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखें।) (Score 2)

Do Not Copy

6. यात्री किसी अपराधी की भाँति सिर झुकाए रिक्शा के साथ–साथ चल रहा था, क्यों?

(चार या पाँच वाक्यों में उत्तर लिखें) (Score 4)

**JULY 2019 (Imp)**

7. 'उसे शाक–सा लगा' किसको? कब?

(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखें।) (Score 2)

8. बाबूजी असलम नहीं रहा .....। यात्री को शाक–सा रहा। इस घटना के बारे में यात्री अपने मित्र को पत्र लिखता हैं। वह पत्र तैयार करें।**सहायक बिंदु:** असलम की मृत्यु की खबर, शाक–सा लगना, असलम की बीमारी, हमदर्दी का अभाव, पश्चाताप से उत्पन्न अनुताप (Score 6)

**MARCH 2020**

9. डॉक्टर ने असलम को क्या करने से मना किया था?

(दौड़ने से, बोझ उठाने से, रिक्शा चलाने से) (Score 1)

10. .यात्री का मन संघर्ष से भरा था। वह अपना संघर्ष डायरी में लिख रहा हैं। वह डायरी लिखें।

(40 – 60 शब्दों में) (Score 6)

## परीक्षा केंद्रित कुछ प्रश्न। सबका उत्तर स्वयं लिखने का प्रयास करें:

1. 'उसके दोनों गुर्दों में खराबी थी,डॉक्टर ने रिक्शा चलाने से मना कर रखा था।' उस संदर्भ में असलम और डॉक्टर के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें। **सहायक संकेत:** पेट में दर्द, दोनों गुर्दों में खराबी, रिक्शा चलाने से मना करना

डॉक्टर : बताइए, क्या हुआ आपको?
असलम : जी, मेरे पेट में दर्द ज़रा है।
.....

2. असलम की मृत्यु के बारे में नया रिक्शावाला यात्री से बताते है। उन दोनों के बीच के वार्तालाप कल्पना करके लिखें। **सहायक संकेत:** नए रिक्शेवाले का आगमन, असलम की मृत्यु की खबर, यात्री शाक सा लगना

नए रिक्शेवाला : जी, रिक्शा यहाँ है। मैं पहुँचाया देता हुँ।
यात्री : मैं असलम की प्रतीक्षा में हुँ। वह तो अभी तक
.....

3. रिक्शा नटराज टाकीज़ पार कर बडे कारखाने की ओर जा रहा था। रिक्शा चलाते हुए असलम धीरे-धीरे कराह रहा था। उस समय असलम और यात्री के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें। **सहायक संकेत:** असलम की रिक्शा में, चढ़ाई में रिक्शा चलाना, रिक्शा चलाते हुए कराहना

यात्री : असलम, क्या हुआ?
असलम : जी, पेट में ज़रा दर्द है।
.....

4. यात्री घर जाकर अपनी पत्नी से असलम की मृत्यु, उसके प्रति अपना व्यवहार आदि के बारे में कहते हैं। यात्री और पत्नी के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें। **सहायक संकेत:** रोज़ असलम की रिक्शा में जाना, मृत्यु की खबर, अपना व्यवहार

यात्री की पत्नी : क्या हुआ आपको? क्यों इतना दुःखी है।
यात्री : असलम की मृत्यु हुई है।
.....

5. असलम की मृत्यु की खबर अगले दिन के समाचार पत्र में आया। वह समाचार तैयार करें। **सहायक संकेत:** गुर्दों में खराबी, रिक्शा चलाने से मना करना, असलम की मत्यु

**सड़क में रिक्शावाले की मृत्यु**

लखनऊः कल यहाँ एक रिक्शेवाले की मृत्यु हुई। .....

Do Not Copy

6. यात्री अपने मित्र के साथ असलम के घर जाते है। घर पहुँचकर वह अपनी डायरी में असलम की घर की अवस्था के बारे में लिखते है। यात्री की डायरी का वह पन्ना कल्पना करके लिखें।

या

असलम की मृत्यु की खबर, उस यात्री के मन में अनुताप जगाता है। मान लें, वह अपनी संवेदना डायरी में लिखता है। डायरी का वह पन्ना तैयार करें। **सहायक संकेतः** असलम की मृत्यु, उसके प्रति अपना व्यवहार, हमदर्दी का अभाव, उसके घर की अवस्था

11-6-2019 सोमवार

असलम से मेरा व्यवहार.....

7. असलम की घर की अवस्था समझकर यात्री उनकी सहायता करने केलिए फिर अपने पत्नी के साथ जाता है। उस अवसर पर यात्री की पत्नी और असलम की पत्नी के बीच का संभावित वार्तालाप लिखें।

**सहायक संकेतः** असलम की मृत्यु, अपने पति का व्यवहार, हमदर्दी का अभाव, उस घर की अवस्था,

असलम की पत्नी : आइए, बैठिए। कौन है? मुझे याद तो आती नहीं।

यात्री की पत्नी : मैं शहर से आती हूँ। यहाँ पहली बार है।

.....

8. असलम की मृत्यु के बारे में सुनकर यात्री बहुत अधिक दुःखी हो गया। असलम के प्रति अपने व्यवहार के बारे में वह अपने मित्र को पत्र लिखता है। वह पत्र तैयार करें।

**सहायक संकेतः** असलम की मृत्यु, उसके प्रति अपना व्यवहार, हमदर्दी का अभाव, पश्चाताप

प्यारे मित्र,

सकुशल है न? ज़रा कुछ बताना है.....

9. असलम की मृत्यु के बाद कई साल बीत गए। बीच-बीच में यात्री के मन में उसकी स्मृति जाग उठती है, और अब भी वह अपने व्यवहार में दुःखी है। अपने आत्मकथा लिखते वक्त वह अपनी अनुभवों का भी जिक्र करते है। वह आत्मकथांश तैयार करें।

**सहायक संकेतः** असलम के प्रति अपना व्यवहार, हमदर्दी का अभाव, पश्चाताप से उत्पन्न अनुताप

**असलमः एक रिक्शावाला**

कुछ साल पूर्व की बात है। मुझे तो नौकरी मिला ही था। मैं रोज़ रिक्शा में दफ्तर चलाता रहा....

10. मान लें, आज घर से निकलते वक्त रास्ते में एक छोटे बच्चे को देखा, जो सड़क के किनारे पर पड़े कूड़े-कचरों से कुछ लेकर खाते है। ऐसे अवसर पर आप क्या करेगा? उस दिन की डायरी कल्पना करके लिखें।

**सहायक संकेतः** दुबला पतला लड़का, कूडे-कचरे के कुछ लेकर खाना, होटल लेकर कुछ खरीदकर देना

12-3-2019 शुक्रवार

आज सबरे में घर से निकला। सरकारी गाड़ी में बैठकर स्कूल जा रहे थे। वहाँ सड़क के किनारे एक गंदा ....

**कोष्ठक से उत्तर ढूँढें।**

1. अनुताप किस विधा की रचना है?
   (निबंध, लघुकथा, कविता)
2. अनुताप किस की रचना है?
   (सुकेश साहनी की, जयशंकर प्रसाद की, चित्रा मुद्गल की)
3. डॉक्टर ने असलम को क्यों रिक्शा चलाने से मना कर रखा था?
   (असलम कदकाठी था, उनके गुर्दे खराब थे, वे भला चंगा था)
4. किसी अपराधी की तरह कौन रिक्शे के साथ-साथ चला?
   (असलम, यात्री, नया रिक्शावाला)
5. किस केलिए वह चढ़ाई खास मायना नहीं हैं?
   (यात्री, असलम, नया रिक्शावाला)
6. किसकी आवाज़ में गहरी उदासी थी?
   (असलम की, नया रिक्शावाला, यात्री की)

Do Not Copy

7. रिक्शा चलाते हुए कौन कराह रहा था?
(नया रिक्शावाला, असलम, यात्री)
8. बहुत मज़बूत कदकाठी का है, कौन?
(असलम, नया रिक्शावाला, लेखक)
9. कौन बुरी तरह हाँफ रहा था?
(नया रिक्शावाला, यात्री, असलम)
10. यात्री कब शाक-सा लगा?
(नया रिक्शावाला को देखकर, असलम की खबर सुनकर, रिक्शा से उतरने पर)

Kite Victers Hindi Class 1: https://youtu.be/WowTe4_tTKA
Kite Victers Hindi Class 2: https://youtu.be/YvcjHBxQdYQ
Kite Victers Hindi Class 3: https://youtu.be/J6Ye4EZ47B8

## मधुऋतु — जयशंकर प्रसाद

### कवितांश पढ़कर उत्तर लिखें:

I. **अरे आ गई ..... सूखे तिनको!** (8 Lines)

1. समानार्थी शब्द कवितांश से चुनकर लिखें।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मौसम | – ऋतु | मार्गच्युत | – भूली–सी | वसंतकाल | – मधुऋतु |
| झोंपड़ी | – कुटिया | दुःखी | – व्यथा | सहेली | – साथिन |
| भूमि/धरती | – वसुधा | आकाश | – नभ | घोंसला | – नीड़ |
| वन/जंगल | – झारखंड | स्थाई | – चिर | पत्तों का झड़ना | – पतझड |
| सूखी घास | – तिनका | | | | |

2. 'अरे आ गई है भूली–सी' – कौन आ गई है?
मधुऋतु (वसंतकाल)
3. कौन आ गई है? कैसे?
वसंतकाल (मधुऋतु) अपना पथ भूलकर आ गई है।
4. मधुऋतु कौन है?
कवि की प्रेमिका है।
5. मधुऋतु रूपी प्रेमिका क्यों अपनी रास्ता भूलकर आई?
प्रेमिका के मन में अपने प्रेमी के प्रति तीव्र अनुराग है, लेकिन वह अपने प्रणय को प्रकट करना नहीं चाहती। वह अपने प्रणय को दिल में ही छिपाना चाहती है। इसलिए मधुऋतु रूपी प्रेमिका अपना पथ भूलकर एक दुःखी सहेली के रूप में आई।
6. अपने व्यथा साथिन केलिए कवि क्या रचा देना चाहता है?
अपने व्यथा साथिन केलिए कवि एक छोटी कुटिया रचा देना चाहता है।
7. अपने व्यथा साथिन केलिए कवि छोटी कुटिया कहाँ रचा देना चाहता है?
अपने व्यथा साथिन केलिए धरती और आकाश के बीचकवि छोटी कुटिया रचा देना चाहता है।
8. कुटिया की विशेषता क्या है?
धरती और आकाश के बीच सबसे अलग होकर स्थित कुटिया छोटी है।
9. नीड़ कहाँ स्थित है?

Do Not Copy
HSS REPORTER SINCE 2015

धरती और आकाश के बीच सबसे अलग होकर नीड़ स्थित है।

10. मधुऋतु कितने दिन केलिए आ गई है?

मधुऋतु दो दिन केलिए आ गई है।

11. प्रेम का नीड़ कहाँ स्थित है?

प्रेम का नीड़ धरती और आकाश के बीच. सबसे अलग होकर स्थित है। अर्थात प्रेमी–प्रेमिका के मन में तीव्र अनुराग छा आने पर, वे न धरती में रहते हैं, न आस्मान में। इन दोनों के बीच में एक प्रकार की उन्माद अवस्था में फैली जाती है। वसंतकालीन वातावरण प्रेमी–प्रेमिकाओं केलिए सबसे प्रिय है।

12. जंगल के स्थाई पतझड़ में किनको भागना है?

जो सूखे और फालतू है, उनको जंगल के स्थाई पतझड़ में भागना है।

13. झारखंड़ के चिर पतझड़ में किसको भागना है?

झारखंड के चिर पतझड़ में सूखे तिनको को भागना है।

14. वसंत के आगमन में सूखे तिनको को क्या करना है?

वसंत के आगमन पर सूखे तिनकों को जंगल के स्थिर पतझड से भागना है।

15. 'सूखे तिनको' से क्या तात्पर्य है?

'सूखे तिनका' का शाब्दिक अर्थ है 'सूखे घास का टुकड़ा'। वसंत ऋतु के हरियाली में सूखे पत्तों को कोई स्थान नहीं है। 'सूखे तिनका' शब्द यहाँ प्रेम विहीन लोगों को सूचित करते है। सूखे घास का टुकडा जैसा प्रेम–विहीन लोगों को जंगल के स्थाई पतझड में भागना है।

16. कवितांश का आस्वादन टिप्पणी लिखें।

जयशंकर प्रसाद छायावादी कवियों में अग्रणी है। कामायनी, झरना, लहर आदि उनकी श्रेष्ठ काव्य रचनाएँ है। 'मधुऋतु' छायावादी गीतिशैली में लिखी गई प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य की कविता है। इस कविता में वसंत ऋतु को कवि अपने प्रेमिका के रूप में खींचा है।

कवि कहते हैं कि कवि के शून्य हृदय में पथ भूलकर आनेवाली 'वसंतकाल' के समान अचानक प्रेमिका आ गई। इस व्यथा साथिन केलिए कवि अपने मन में एक छोटी-सी कुटिया बना देना चाहता है।

प्रेम का वह नीड़ धरती और आकाश के बीच सबसे अलग होकर स्थित है। जो सूखे और फालतू अर्थात प्रणय विहीन व्यक्तियाँ को जंगल के स्थिर पतझड़ में भागना है।

प्रस्तुत कवितांश में वसंतकालीन प्रकृति का चित्रण हुआ है। प्रेम एवं प्रकृति का अटूट संबंध है।

## II. आशा से अंकुर..... रंगेंगा दिन को। (12 Lines)

1. समानार्थी शब्द कवितांश से ढूँढकर लिखें।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आग्रह | - आशा | रोमांच भरी | - सिहर भरी | कली | - अंकुर |
| मलयसमीर | - मलयानिल | लहराना/हिलना | - झूलना | बुरा लगेगा | - खलेगा |
| पल्लव | - किसलय | किसलय | - पल्लव | संसार | - भव |
| मन | - मानस | लाल | - जवा/अरुण | कमल | - नलिन |
| फूल | - कुसुम | आँख | - नयन | होंठ | - अधर |
| पूरब | - प्राची | प्रभात | - उषा | | |

2. आशा से अंकुर झूलेंगे

पल्लव पुलकित होंगे – कब?

जो सूखे है, उसे जंगल के स्थाई पतझड में भागना है। तब आशा के नए–नए अंकुर झूलेंगे और पल्लव पुलकित होंगे।

Do Not Copy
HSS REPORTER SINCE 2015

3. प्रेमी–प्रेमिका के मन में कब आशा के नए अंकुर झूलेंगे?

वसंत काल के आगमन पर।

4. आशा के नए–नए अंकुर झूलने से क्या हो सकती है?

आशा के नए–नए अंकुर झूलने से पल्लव पुलकित हो जाएँगे।

5. मलयानिल की लहरें कैसे आएँगी?

मलयानिल की लहरें रोमांचित होकर काँपते हुए आएँगी।

6. 'सिहर भरी कँपती आवेंगी' – कौन?किसलिए?

मलयानिल की लहरें। मन के नयनरूपी कमल को चुंबन देकर जगाने केलिए।

7. 'उषा' शब्द किन–किन की ओर इशारा करता है?

यहाँ 'उषा' शब्द 'लाल कुसुम' और 'प्रेमिका' की ओर संकेत करता है। कवि के छोटे संसार में लाल फूल की तरह अर्थात जीवन में सौंदर्य की लालिमा फैलाकर पूरब से उषा रूपी प्रेमिका आएँगी।

8. उषा कहाँ खिलेगी? कैसे?

उषा लाल कुसुम की तरह जीवन में सौंदर्य फैलाते हुए कवि के छोटी संसार की पूरब से खिलेगी।

9. दिन कैसे रंगीन बन जाता है?

उषा के, हँसी भरे लाल होंठों का रंग दिन को रंगीन बना देगा।

10. वसंत काल में प्रकृति में क्या–क्या परिवर्तन आ सकते हैं?

वसंत काल में नए–नए अंकुर झूलेंगे और पल्लव पुलकित हो जाएँगे। मलयानिल की लहरें रोमांचित होकर काँपते हुए आकर मनरूपी कमल को चूमकर जगाएँगी। लाल कुसुम की तरह पूरब से उषा खिलेगी।

11. कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

जयशंकर प्रसाद छायावादी कवियों में अग्रणी है। कामायनी, झरना, लहर औंद उनकी श्रेष्ठ काव्य रचनाएँ है। 'मधुऋतु' छायावादी गीतिशैली में लिखी गई प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य की कविता है। इस कविता में वसंत ऋतु को कवि अपने प्रेमिका के रूप में खींचा है।

कवि कहते हैं कि, वसंत की प्रेममयी वातावरण में आशा के नए-नए अंकुर झूलेंगे और प्रेमी, पल्लव की तरह पुलकित हो जाएँगे। प्रेम एक उन्माद अवस्था है, और प्रेम का मधुर मोहक संसार किसी को बुरा नहीं लगेगा। मलयानिल की लहरें काँपते हुए आएँगी और कवि के मन के नयन रूपी कमलों को चुंबन करके जगाएँगी। कवि के छोटे संसार में पूरब दिशा से लाल कुसुम की तरह उषा खिलेगी। उषा की लाल होंठों से निकलने वाली लालिमा से दिन रंगीन बनेगा।

## III. अंधकार का जलधि ..... देने दो इनको। (8 Lines)

1. समानार्थी शब्द कविता से ढूँढकर लिखे।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| समुद्र/सागर | - जलधि | पारकर - | - लाँघकर | चंद्र | - शशि |
| रश्मि | - किरण | रात | - निशि | हिमकण | - तुहिन |
| सृष्टि | - सृजन | अँधेरा | - अँधकार | ओस की बूँद | - तुहिन |

2. अँधकार के सागर को पार कर कौन आता है?

रात में अँधकार रूपी सागर को पार करके चंद्र की किरणें आती है।

3. चंद्र किरणें कब आएँगी? कैसे?

रात में अँधकार रूपी सागर को पार कर आएँगी।

Do Not Copy

4. शशि किरनें कैसे आएँगी?
अंधकार की जलधि पार करके शशि किरनें आएँगी।

5. हिमकणों को कौन छिड़कता है? कब?
रात के अंधकार में अंतरीक्ष से प्रकृति के कण-कण में ओस की बूँदों की वर्षा होगी।

6. अंतरीक्ष रात में क्या छिडकेगा?
अंतरीक्ष रात में मधुर हिमकण को छिडकेगा।

7. कवि ने वसंत काल की रात का वर्णन कैसे किए है?
रात की वेला में अंधकार के सागर पार करके चंद्रमा की किरणें आएँगी। धरती पर चाँदनी फैली जाएगी और अंतरीक्ष से प्रकृति के कण–कण में हिमकणों की वर्षा भी होगी।

8. एकांत में कौन-कौन बैठे है?
प्रेमी और प्रेमिका।

9. 'जो कुछ अपने में सुंदर से हैं
दे देने दो इनको।'
किनको आपस में क्या देना है?
प्रेमयुग्मों को अपने में जो कुछ सुंदर है, उसे इन प्रेम युग्मों को देना है।

10. प्रेम-युग्मों को आपस में क्या देना है?
अपने में जो कुछ सुंदर है, उसे इन प्रेम युग्मों को देना है।

11. कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखे।
जयशंकर प्रसाद छायावादी कवियों में अग्रणी है। कामायनी, झरना, लहर आदि उनकी श्रेष्ठ काव्य रचनाएँ है। 'मधुऋतु' छायावादी गीतिशैली में लिखी गई प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य की कविता है। इस कविता में वसंत ऋतु को कवि अपने प्रेमिका के रूप में खींचा है।

रात में अंधकार रूपी सागर को पार करके चंद्रमा की शीतल किरणें आएगी। अर्थात रात में चंद्रमा फैली जाएगी। अंतरीक्ष से प्रकृति के कण-कण में ओस की बूँदों की वर्षा करती है। इस तरह की एकांतता में वसंत और प्रकृति तीव्रानुराग में अपस में पूर्ण समर्पित होने लगते हैं। सृजन की इस एकांतता में कोई बाधा मत डालो और अपने में जो कुछ सुंदर है उन्हें इनको दे देने है।

प्रेमी-प्रेमिकाओं का मिलन, विरहावस्था रूपी अंधकार को दूर करके मिलन के उन्माद रूपी प्रकाश फैलाता है।

## कविता की आस्वादन टिप्पणी:

श्री जयशंकर प्रसाद हिंदी के छायावादी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। प्रेम, प्रकृति-सौंदर्य, मानवीकरण, काल्पनिकता, कोमल-कांत पदावली आदि छायावाद की खास विशेषताएँ हैं। छायावादी गीतिशैली में लिखी प्रेम और प्रकृति की कविता है 'मधुऋतु'।

मधुऋतु रूपी प्रेमिका दो दिन केलिए भूली-भटकी सी आई है। इस व्यथा साथिन केलिए मैं एक छोटी-सी कुटिया रच दूँगा। वह प्रेम का नीड़ आकाश और धरती के बीच सबसे अलग होकर स्थित है। जो सूखे और फालतु है, उसे जंगल के स्थाई पतझड में भाग जाना पडेगा। अर्थात प्रेम विहीन लोगों को यहाँ कोई स्थान नहीं चाहिए।

आगे कवि कहते हैं इस प्रेमपूर्ण वातावरण में आशा के अंकुर झूलेंगे और पल्लव पुलकित हो जाएँगे। मेरे किसलय के लघु संसार किसको बुरा लगेगा? अर्थात किसी को बुरा नहीं लगेगा। मलयानिल की लहरें काँपते हुए आएँगी और मन के नयन रूपी कमल को चुंबन देकर जगाएँगी।

इस रागात्मक संसार में पूरब से लालिमा फैलाती हुई लाल कुसुम की तरह उषा खिलेगा। उषा की हँस भरे होंठों का लाल रंग से दिन रंगीन बनेगा। रात की वेला में अँधकार को पार करके चंद्रमा फैलेगी, अर्थात धरती चंद्र किरणों से आलोकित होते है। अंतरिक्ष से प्रकृति ओस की बूँदों की वर्षा करेगी।

अंत में कवि कहते हैं प्रेम के इस एकांत सृजन कार्य में कोई भी बाधा न डालें और अपने में जो कुछ सुंदर हैं उसे इन प्रेम युग्मों को देना है।

Do Not Copy

कविता के दो पक्ष है - प्रकृति सुषमा और प्रेम भंगिमा। छायावादी काव्य शैली के सारी विशेषताएँ से समाहित यह कविता में प्रेम एवं प्रकृति के रागात्मक दुनिया खींचने में कवि सफल हुए है।

## परीक्षा में आए प्रश्न:

**OCT 2015 (Imp)**

**सूचना:** निम्नलिखित कवितांश पढ़िये और 1 से 4 तक के प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

अरे आ गई ..... भागो सूखे तिनको!

1. यह कवितांश किस कविता से लिया गया है? (Score 1)
2. कविता के 'नभ' शब्द का समानार्थी शब्द कोष्ठक से चुनकर लिखिए। (Score 1)
   (आकाश, नीड़, भूमि, पतझड़)
3. वसंत के आगमन पर सूखे तिनकों को क्या करना है? (Score 2)
4. कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखिए। (Score 6)

**SEPT 2016 (Imp)**

**सूचना:** निम्नलिखित कवितांश पढ़िये और 1 से 4 तक के प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

आशा से अंकुर ... ... ... ..नयन नलिन को।

5. यह कवितांश किस कविता से लिया गया है? (Score 1)
6. कविता के 'नयन' शब्द का समानार्थी शब्द कोष्ठक से चुनकर लिखिए। (Score 1)
   (कमल, आँख, हवा, लहर)
7. मलयानिल की लहरें कैसे आती है? (Score 2)
8. कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखिए। (Score 6)

**MARCH 2018**

9. 'अंधकार की जलधि लाँघकर
   आवेंगी शशि–किरनें'
   शशि–किरनें कैसे आएँगी?
   (एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखें।) (Score 2)

**MARCH 2019**

**सूचना:** निम्नलिखित कवितांश पढ़िये और 1 से 3 तक के प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

अरे आ गई ..... भागो सूखे तिनको!

10. इस कवितांश के रचयिता कौन है? (Score 1)
    (जयशंकर प्रसाद, रामधारीसिंह 'दिनकर', चंद्रकांत देवताले, पवन करण)
11. प्रेम का नीड़ कहाँ स्थित है? (Score 1)

Do Not Copy

12. कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखिए। (Score 6)

**JULY 2019**

13. 'मधुऋतु' कविता की ये पंक्तियाँ पढ़ें।

इस एकांत सृजन में कोई
कुछ बाधा मत डालो
जो कुछ अपने सुंदर से हैं
दे देने दो इनको।

प्रेमी सब बाधाओं से दूर रहकर अपनी प्रेमिका के साथ एकांत में रहना चाहता है। कवितांश का विश्लेषण करके अपना मत प्रकट करें। (4 या 5 वाक्यों में उत्तर लिखें।) (Score 4)

**MARCH 2020**

14. जवा कुसुम–सी खिलेगी – कौन? (Score 1)
(शशि किरनें, उषा, वसंत)

15. इस एकांत सृजन में कोई
कुछ बाधा मत डालो – कवि क्यों ऐसा कहते हैं? (4 या 5 वाक्यों में उत्तर लिखें।) (Score 4)

**परीक्षा केंद्रित कुछ प्रश्न। सबका उत्तर स्वयं लिखने का प्रयास करें:**

1. वसंत ऋतु कैसे और कितने दिन केलिए आ गई है?
2. 'झारखंड के चिर पतझड़ में' – पंक्ति में छायावाद की कौन–सी प्रवृत्ति विद्यमान है?
(मानवीकरण, प्रकृति चित्रण, सौंदर्यवर्णन)
3. प्रेमिका की नयन की उपमा किस से किया है?
(जवा कुसुम, नलिन, अंकुर)
4. 'चुंबन लेकर और जगाकर' – पंक्ति में छायावाद की कौन–सी प्रवृत्ति विद्यमान है?
(प्रेमानुभूति, मानवीकरण, प्रकृति चित्रण)
5. अंतरीक्ष क्या छिड़केगा?
(वर्षा, हिमकण, शशि किरण)
6. अंतरीक्ष छिड़केगा कन-कन, कब?
(दिन में, रात में, प्रातः काल में)
7. कौन सिहर भरी काँपती आवेंगी?
(शशि-किरनें, मलयानिल की लहरें, उषा)
8. जवा कुसुम की तरह कौन खिलेगी?
(निशि, उषा, फूल)
9. झारखंड के चिर पतझड में किसको भाग जाना है?
(वसंतकाल को, सूखे तिनके को, साथिन को)
10. अंधकार की जलधि लाँघकर कौन आवेंगी?
(सूर्य किरनें, शशि किरनें, उषा)
11. कवि के छोटे संसार में उषा कैसे खिलेगे?

Do Not Copy

12. निशि में मधुर तुहिन को कौन छिड़केगा? कब?

13. प्रेम युग्मों को आपस में क्या दे देना है?

14. कविता में किन–किन ऋतुओं को वर्णन हुआ है? वे किन–किन के प्रतीक है?

15. वसंत ऋतु की विशेषताएँ क्या–क्या है?

16. छायावादी कविता की विशेषताएँ क्या–क्या है? 'क्या मधुऋतु' कविता इन विशेषताओं से युक्त है या नहीं? कुछ विशेषताएँ और उनसे संबंधित पंक्तियाँ लिखकर अपना मत प्रकट करें।

Kite Victers Class 4: https://youtu.be/Wn6_BQD-GLI
Kite Victers Class 5 :https://youtu.be/miEDsr0sFiE
Kite Victers Class 6: https://youtu.be/aGg9mlfH1ys

Do Not Copy

## जुलूस — चित्रा मुद्गल

### सारांश:-

नेपथ्य में अंग्रेज़ देश छोडो नारे बुलंद करते हुए स्वतंत्र सेनानियों का जुलूस आ रहा है। भारत माता की जय कर रहे है।

सड़क के पास के बाज़ार में दूकानदार शंभुनाथ और दीनदयाल बहस कर रहे थे। नारे सुनकर शंभुनाथ व्यंग्यभरी स्वर में कहते है कि सब लोग काल के मुँह में जा रहे है, आगे जो पुलिस सवारों का दल है, मार-मार कर भगा देगा। दीनदयाल हँसी उठाते हैं कि जुलूस के द्वारा कैसे स्वतंत्रता मिलेगी, गाँधीजी भी अब बूढा हो गया है, धनी लोग तो जुलूस में भाग नहीं लेते। इसलिए हम जैसे व्यापारी लोग इसमें भाग लेने की आवश्यकता नहीं है।

बाज़ार में चप्पलों का व्यापार करनेवाला मैकु इन बातें सुनकर हँसते है कि धनी लोगों को अंग्रेज़ी शासन में कोई कमी नहीं है। वे तो बंगलों में रहनेवाले हैं। हमारे नेता गाँधीजी है। देश की स्वतंत्रता केलिए अपना जान भी देनेवाले उसके आगे किसी भी बडा आदमी नहीं।

इतने में दारोगा बीरबल सिंह के नेतृत्व में सिपाहियों ने जुलूस को रोक दिया। घोडेवाले दारोगा ने उसे वापस लौट जाने को कहा। लेकिन इब्राहिम अली के नेतृत्व में स्वराजियों ने कहा कि -हम कोई लूटने केलिए नहीं आए हैं, हमारा लक्ष्य पूर्ण स्वतंत्रता है। डी. एस. पी साहब के निर्देश का पालन करने केलिए लाठी चार्ज शुरु किया। कई स्वाराजियों घायल हो गए। इब्राहिम अली घोडे से कुचल गए, उसके सिर पर गहरी चोट लगी और वह बुरी तरह घायल हुए।

शहर में संघर्ष आरंभ हुआ। देशप्रेम से प्रभावित मैकु, शंभुनाथ, दीनदयाल आदि जुलूस में भाग लिया। उमडती चली आ रही भीड़ को देखते ही डी. एस. पी साहब चल गए। साथ ही बीरबल सिंह के नेतृत्व की सिपाहियों भी। लोगों की मनोवृत्ति में आया बदलाव देखकर इब्राहिम अली खुश हुए। उन्होंने बताया कि लड़ाई नहीं, जनता की सहानुभूति प्राप्त करना हमारा लक्ष्य है। इस प्रकार भारतीय एक साथ, एक ही मन से खड़ें तो कल स्वराज्य साकार हो जाएगा। सभी जोशीले स्वर में जय भारत माता कहते रहे।

### प्रश्न और उत्तर:

(1) दूकानदार स्वराजियों के जुलूस में भाग लेने केलिए तैयार नहीं होते थे, क्यों?

स्वराजियों के जुलूस में शहर के कोई बड़ा आदमी नहीं भाग लेते थे। इसलिए वे भी अपने दूकान बंद कर जुलूस में भाग लेने केलिए तैयार नहीं थे।

(2) मैकू क्या कर रहे थे?

मैकू बाज़ार में चप्पलों का दूकान चलाते थे।

(3) 'जिस दिन हम इस लक्ष्य पर पहुँच जाएँगी, उसी दिन स्वराज्य सूर्य का उदय होगा।' यह किसकी कथन है?

इब्राहिम अली का।

(4) जिस दिन हम इस लक्ष्य पर पहुँच जाएँगी, उसी दिन स्वराज्य सूर्य का उदय होगा।' यहाँ वक्ता के चरित्र की कौन सी विशेषता प्रकट होती है।?

इब्राहिम अली आत्मविश्वासी है। उनको विश्वास था कि एक दिन स्वराज्य सूर्य का उदय होगा और हम अपने लक्ष्य तक पहुँचेगा।

(5) 'हमारा मकयद इससे कहीं ऊँचा है।' यह किस का कथन है? यहाँ किस मकसद की ओर सूचना देती हैं?

इब्राहिम अली का कथन है। यहाँ देश की स्वतंत्रता की ओर सूचना देती है।

(6) 'हमारा मकयद इससे कहीं ऊँचा है।' किसका मकसद?

स्वराजियों का मकसद।

(7) 'हमारा हुक्म क्या आपको सुनाई नहीं पड़ा?' हुक्म क्या है?

स्वराजियों के जुलूस को आगे जाने का हुक्म नहीं है।

(8) हमारा बड़ा आदमी कौन है? महात्मा गाँधी

(9) हमारा बड़ा आदमी क्या कर रहे है?

हमारा बड़ा आदमी तो अपने देशवासियों की दशा सुधारने केलिए अपनी जान हथेली पर लिए फिरता है।

(10) 'जो हमारी दशा सुधारने केलिए अपनी जान हथेली पर लिए फिरता है।' कौन? किस की दशा सुधारने केलिए?

गाँधीजी। अपने देशवासियों की दशा सुधारने केलिए अपनी जान हथेली पर लिए फिरता है।

(11) 'उसके आगे हमें किसी बड़े आदमी की परवाह नहीं' – किसके आगे? क्यों?

गाँधीजी के आगे, क्योंकि लंगोटी बाँधे नंगे पाँव घूमकर वह देशवासियों की दशा सुधारने केलिए अपनी जान हथेली पर लिए फिरता है।

(12) 'उसके आगे हमें किसी बड़े आदमी की परवाह नहीं।' यह किसका कथन है? यहाँ वक्ता के चरित्र की कौन सी विशेषता प्रकट होती है?

यह मैकु की कथन है। मैकू गाँधीजी के अनुयायी है। गाँधीजी पर उन्हें पूरा विश्वास है कि भारतीयों की दशा सुधारने केलिए वह अपनी जान हथेली पर लेकर नंगे पाँव घूमता है। गाँधीजी के आगे कोई भी बड़ा आदमी नहीं है।

(13) 'अंग्रेज़ों का पिट्ठू' किसे कहते हैं? क्यों?

दारोगा बीरबल सिंह को 'अंग्रेज़ों का पिट्ठू' इसलिए कहते हैं कि वह अंग्रेज़ों का आज्ञाकारी है।

(14) 'हमारे भाईबंद ऐसे हुक्मों की तामील करने से साफ़ इसकार कर देंगे।' यहाँ इब्राहिम अली के चरित्र की कौन सी विशेषता प्रकट होती है।?

इब्राहिम अली अपने साथियों पर भरोसा रखनेवाले थे। उनको पूर्ण विश्वास था कि एक दिन जनता एक साथ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेगा।

(15) 'मैं कैसे अपनी दूकान खुली रख सकता हुँ?' – यह किसका कथन हैं? क्यों ऐसा सोचते हैं?

यह शंभूनाथ का कथन हैं। अंग्रेज़ों के विरोध में शहर में तनाव फैल रहा। साथ ही दूकानों के शटरें गिरने लगे और सारा बाज़ार बंद हो चुका है। तभी शंभूनाथ में भी देशप्रेम की भावना जागृत होते हैं और वह भी जुलूस में भाग लेने केलिए तैयार होते हैं।

(16) 'एक दिन तो मरना ही है' – ऐसा कौन कहते हैं?पात्र के चरित्र के कौन–सी विशेषता यहाँ प्रकट होती हैं?

शंभूनाथ की। वह तो स्वराजियों के जुलूस को देखकर पहले वे हँसी–मज़ाक उठाते हैं। लेकिन बाद में उनमें देशप्रेम की जागृति होती है और आखिर वह अपने देश केलिए जान भी देने केलिए तैयार हो जाते हैं।

(17) 'लोगों की मनोवृत्ति में आया वह परिवर्तन ही हमारी असली विजय है।' यह किसकी कथन है? यहाँ किस परिवर्तन की ओर सूचना देती है?

यह इब्राहिम अली की कथन है। इब्राहिम अली के नेतृत्व में जो जुलूस निकाला, वह देश में देशप्रेम की लहरें उठाया। अंग्रेज़ों की आज्ञा का साफ इनकार करके जुलूस में भाग लेने केलिए सैकड़ों लोग आने लगा।

Do Not Copy

## 1. इब्राहिम अलीः

**आदर्श देशप्रेमी इब्राहिम अली**

कहानी सम्राट श्री प्रेमचंद की कहानी का नाट्यरूपांतर है, चित्रा मुद्गल का जुलूस। यह भारत की स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित भावपूर्ण आदर्शात्मक कहानी है। स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक इब्राहिम अली, दारोगा बीरबल सिंह, पत्नी मिट्ठनबाई आदि इस कहानी के प्रमुख पात्र है। इसके अतिरिक्त मैकु, शंभुनाथ, दीनदयाल जैसे कुछ पात्र भी है, जो अपनी-अपनी भूमिकाओं में कहानी को आगे खींचते है।

इब्राहिम अली देश केलिए समर्पित **आदर्श देशप्रेमी** था। देश की स्वतंत्रता केलिए जनता को एकत्रित करके अंग्रेज़ों के विरुद्ध आवाज़ उठाते है। इब्राहिम अली **गाँधीजी से प्रभावित** है। गाँधीजी की तरह वह **अहिंसा मार्ग** को स्वीकार किया। हम दूकानों लूटने या मोटरों तोड़ने नहीं निकाले है- इस कथन से अहिंसा के तत्व का स्पष्ट प्रभाव विद्यमान है।

इब्राहिम अली **साहसी एवं निड़र** है। बीरबल सिंह ने अंग्रेज़ी सेना के बल पर जुलूस को आगे जाने से रोका। लेकिन इब्राहिम अली के नेतृत्व में वे लौट न गए।

इब्राहिम अली अपने **साथियों पर भरोसा रखनेवाला** है। उनको पूर्ण विश्वास था कि एक दिन जनता एक साथ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेगा। अंत में उनके घायल होने की बात सुनते ही जनता एक साथ जुलूस में शामिल हुए। वे मानते है कि लोगों की मनोवृत्ति में आया परिवर्तन ही उनका असली विजय है।

इब्राहिम अली **दृढचित्त** थे। बीरबल सिंह की आज्ञा के आगे वे अपना सिर झुकने केलिए तैयार नहीं। अंत में घोडे से कुचलकर गिरते समय तक अपने लक्ष्य से ज़रा भी पीछे न मुड़ा।

देश को पराधीनता से मुक्त कराना उनका लक्ष्य रहा। वे **शुभचिंतक** थे। उनको विश्वास था कि एक दिन स्वराज्य सूर्य का उदय होगा और हम अपने लक्ष्य तक पहुँचेगा।

देश की स्वतंत्रता केलिए वह **आत्मबलिदान** किया। इस आत्मबलिदान जनता के दिल में राष्ट्रीय भावना का बीज बोता है, देश प्रेम की लहरें उठाता है।

**इब्राहिम अलीः**

1. देशभक्त
2. अहिंसावादी
3. दृढचित्त
4. शुभचिंतक
5. निड़र
6. आत्मविश्वासी
7. साथियों पर भरोसा रखनेवाला

## नाटक के अन्य प्रमुख पात्रों के चरित्र चित्रणः-

### 1. अंग्रेज़ी दास-दारोगा बीरबल सिंहः

कहानी सम्राट श्री प्रेमचंद की कहानी का नाट्यरूपांतर है, चित्रा मुद्गल का जुलूस। यह भारत की स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित भावपूर्ण आदर्शात्मक कहानी है। स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक इब्राहिम अली, दारोगा बीरबल सिंह, पत्नी मिट्ठनबाई आदि इस कहानी के प्रमुख पात्र है। इसके अतिरिक्त मैकु, शंभुनाथ, दीनदयाल जैसे कुछ पात्र भी है, जो अपनी-अपनी भूमिकाओं में कहानी को आगे खींचते है।

बीरबल सिंह भारतीय होकर भी **अंग्रेज़ी सरकार का दास** था। स्वतंत्रता आंदोलन ज़ोरों पर था। दारोगा भारतीय होकर भी आंदोलन के विघातक के रूप में खडा था। उसके नाम सुनते ही जनता काँप उठते हैं। लोग उसे **'जल्लाद'** बुलाते थे।

बीरबल सिंह बडे **देश द्रोही** थे। भारतीय होकर भी हमेशा **स्वतंत्रता आंदोलन के विध्वंसक** रहा।

बीरबल सिंह **निष्ठूर** और **निर्दय** था। अपने सिपाहियों से लाठी चार्ज करने का आदेश देता है और स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक इब्राहिम अली के ऊपर घोडा चढ़ाते थे।

वह **अंग्रेज़ी सरकार का आज्ञाकारी** थे। अंग्रेज़ी सरकार की कृपा पाने केलिए वह स्वदेशी आंदोलन तो समाप्त करने का उपाय सोच रहा था।

बीरबल सिंह **भीरु** थे। डी.एस.पी साहब के चले जाने की खबर सुनते ही वह अपने सिपाहियों को पीछे हटाने की आज्ञा देता है और स्वयं पीछे हटाते हैं।

**बीरबल सिंहः-**

- देश द्रोही
- निष्ठूर
- अंग्रेज़ी सरकार के आज्ञावारी
- भीरू
- निर्दय
- स्वतंत्रता आंदोलन के विध्वंसक

### 2. शंभूनाथः

Do Not Copy
HSS REPORTER SINCE 2015

कहानी सम्राट श्री प्रेमचंद की कहानी का नाट्यरूपांतर है, चित्रा मुद्गल का जुलूस। यह भारत की स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित भावपूर्ण आदर्शात्मक कहानी है। स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक इब्राहिम अली, दारोगा बीरबल सिंह, पत्नी मिट्ठनबाई आदि इस कहानी के प्रमुख पात्र है। इसके अतिरिक्त मैकु, शंभुनाथ, दीनदयाल जैसे कुछ पात्र भी है, जो अपनी-अपनी भूमिकाओं में कहानी को आगे खींचते है।

शंभुनाथ एक दूकानदार है, जो सड़क के ओर की बाज़ार में दूकान चलाती है। स्वतंत्रता आंदोलन ज़ोरों पर था। दृश्य में शंभुनाथ, आस-पास के दूकानदारों से बहस कर रहे हैं। इनकी वाणी और भाव देखकर ऐसा लगता है कि उनमें देश प्रेम नहीं है। दूर से स्वराजियों के जुलूस में 'भारत माता का जय हो', 'अंग्रेज़ों भारत छोडो', जैसे नारें सुनते ही उनके मन में परिहास उठती है। व्यंग्य भरी शब्दों में वह, पास की दूकानदार से कहते हैं कि ये सब लोग काल के मुँह में जा रहे हैं। उसको भारतीयों पर व्यंग्य है और कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह अंग्रेज़ी सरकार का दास है। उनको पूरा विश्वास था कि अंग्रेज़ी सरकार और उनके पुलिस सिपाही इन स्वराजियों को मार-मार कर भगा देगा।

इब्राहिम अली के नेतृत्व में जुलूस आगे बढ़ रहा था। बीरबल सिंह ने अंग्रेज़ी सेना के हथियारों का खूब प्रयोग किया। इब्राहिम अली का सिर फट जाते है तो सभी स्वराजियों में देशप्रेम जागृत हो उठती है। बाज़ार के सभी दूकान बंद करते है, शंभुनाथ भी अपने दूकान को बंद करने में विवश पडती है। उसकी विवशता इन शब्दों में व्यक्त होती है- 'पूरा बाज़ार बंद हो रहा.... मैं कैसे अपनी दूकान खुल रख सकती हुँ?' आगे की उनकी स्वरों में एक निड़र देशस्नेही गूँज उठती है कि वे कहते हैं 'एक दिन तो मरना ही है....'।

पहले स्वतंत्रता आंदोलन के विरोध में व्यंग्य भरी आवाज़ उठाकर आगे चलकर शंभुनाथ एक असल देशप्रेमी बनते है। अपने देश केलिए शहीद बनने को भी वे तैयार होते हैं।

**शंभूनाथ**:

| | | |
|---|---|---|
| भीरू | हज़ी-मज़ाक उठानेवाला आदमी | नकारात्मक दृष्टिकोण वाला |
| विद्रोही मनोभावी | मन परिवर्तित होकर देशस्नेही बनते है। | |

HSS REPORTER SINCE 2015

3. **मैकू:**

कहानी सम्राट श्री प्रेमचंद की कहानी का नाट्यरूपांतर है, चित्रा मुद्गल का जुलूस। यह भारत की स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित भावपूर्ण आदर्शात्मक कहानी है। स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक इब्राहिम अली, दारोगा बीरबल सिंह, पत्नी मिट्ठनबाई आदि इस कहानी के प्रमुख पात्र है। इसके अतिरिक्त मैकु, शंभुनाथ, दीनदयाल जैसे कुछ पात्र भी है, जो अपनी-अपनी भूमिकाओं में कहानी को आगे खींचते है।

मैकु एक दरिद्र दूकानदार था, जो बाज़ार में चप्पलों का एक दूकान चलाता था। स्वतंत्रता आंदोलन ज़ोरों पर था। दृश्य में बाज़ार में दूकानदार बहस कर रहे हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के नारे सुनकर दीनदयाल और शंभूनाथ जैसे दूकानदारों में हँसी-मज़ाक उठाती है। लेकिन मैकू आरंभ से ही **स्वतंत्रता आंदोलन के अनुयायी** रहे। वे स्पष्ट कहते हैं कि बड़े आदमी सुरक्षा से महलों में रहते है, मोटरों में घूमते है। लेकिन यहाँ हम जैसे आम जनता की रोटियों का कोई प्रबंध नहीं है। इन शब्दों में उनकी दरिद्रता व्यक्त होती है।

आरंभ से ही मैकु **स्वाराजियों का समर्थन** करते रहा। वे जुलूस में भाग लेना भी चाहते थे। जब बाज़ार के अन्य व्यापारियाँ जुलूस पर शंका प्रकट करते हैं, तब मैकू उनके विरोध करते रहा।

मैकू **गाँधीजी के अनुयायी** है। गाँधीजी पर उन्हें पूरा विश्वास है कि भारतीयों की दशा सुधारने केलिए वह अपनी जान हथेली पर लेकर नंगे पाँव घूमता है। गाँधीजी के आगे कोई भी बड़ा आदमी नहीं है।

मैकू **साहसी** है। वे किसी को भी नहीं इब्राहिम अली के नेतृत्व में जुलूस आगे बढ़ रहा था। बीरबल सिंह ने अंग्रेज़ी सेना के हथियारों का खूब प्रयोग किया। इब्राहिम अली का सिर फट जाते है तो सभी स्वराजियों में देशप्रेम जागृत हो उठती है। बाज़ार के सभी दूकान बंद होती है। मैकू ही सबसे पहले अपने दूकान का शटर गिराकर जुलूस में शामिल होने केलिए तैयार होती है। अपने सह-दूकानदारों को अपने दूकान बंद कराने की प्रेरणा भी देती है।

Do Not Copy

नाटक में आद्यंत मैकू एक **सच्चे देशप्रेमी** है, **गाँधीजी के अनुयायी** थे। वह अपने पास की दूकानदारों को **देशप्रेमी होने की प्रेरणा भी देती** है।

- देशप्रेमी
- गाँधीजी के अनुयायी
- साहसी
- निड़र
- स्वराजियों का समर्थक
- दृढ़चित्त

4. **दीनदयाल:**

कहानी सम्राट श्री प्रेमचंद की कहानी का नाट्यरूपांतर है, चित्रा मुद्गल का जुलूस। यह भारत की स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित भावपूर्ण आदर्शात्मक कहानी है। स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक इब्राहिम अली, दारोगा बीरबल सिंह, पत्नी मिट्ठनबाई आदि इस कहानी के प्रमुख पात्र है। इसके अतिरिक्त मैकु, शंभुनाथ, दीनदयाल जैसे कुछ पात्र भी है, जो अपनी-अपनी भूमिकाओं में कहानी को आगे खींचते है।

दीनदयाल एक दूकानदार है, जो सड़क के ओर की बाज़ार में अपनी दूकान चलाती है। स्वतंत्रता आंदोलन ज़ोरों पर था। दृश्य में दीनदयाल, आस-पास के दूकानदारों से बहस कर रहे हैं। स्वराजियों के जुलूस देखकर वह उपहास करता है। उनके अपने मत यह हैं कि जुलूस निकालने से स्वराज नहीं मिलेगा। वे हँसी उठाकर कहते हैं कि महात्मा गाँधी तो अब बूढ़ा हो गया है, जुलूस में शहर के कोई भी बड़े आदमी नहीं है। केवल चरित्रहीन सिरे-फिरे लोग ही शामिल है। इसलिए हम जैसे व्यापारी उसमें भाग लेने की आवश्यकता नहीं है।

इब्राहिम अली के नेतृत्व में आगे बढ़नेवाले जुलूस पर उन्हें विश्वास नहीं थे। वे कहते हैं कि अंग्रेज़ों के आगे स्वराजियों दुम दबा कर भाग जाएँगे।

जुलूस चौरास्ते पर आते ही अंग्रेज़ों ने आक्रमण किया। इब्राहिम अली और अन्य सेनानियाँ घायल होकर गिर पड़े। खबर सुनते ही शहर में तनाव फैला। बाज़ार में दूकानों के शटर गिरने लगा तो मैकू से प्रभावित होकर वे भी जुलूस में भाग लेते है और शंभुनाथ को जुलूस में भाग लेने की प्रेरणा भी देते है।

आरंभ से ही दीनदयाल देशप्रेमी रहा, लेकिन अंग्रेज़ों के विरुद्ध जुलूस में भाग लेने की दिक्कत उनमें नहीं था। बाद में स्वराजियों के घायल होने का खबर सुनते ही वे सबकुछ भूलकर जुलूस में भाग लेते हैं।

HSS REPORTER SINCE 2015

## पिछले सालों के परीक्षा में आए प्रश्न:

### MARCH 2015

**सूचना:** जुलूस नाट्यरूपांतर का निम्नलिखित कथन पढ़िए और नीचे दिए प्रश्न का उत्तर लिखिए।

बीरबलसिंह : हमारा हुक्म क्या आपको सुनाई नहीं पड़ा?

: फिर से सोच लें! बहुत नुक्सान उठाना पड़ेगा!

: सिपाहियो, लाठी चार्ज करो!

इस कथन के आधार पर बीरबलसिंह के चरित्र पर टिप्पणी लिखिए। (Score 4)

### OCT 2015 (Imp)

**सूचना:** जुलूस नाट्यरूपांतर के दीनदयाल का निम्नलिखित कथन पढ़िए और नीचे दिए प्रश्न का उत्तर लिखिए।

दीनदयाल : जुलूस निकालने से स्वराज मिल जाता तो कब का मिल गया होता।

: जुलूस के चौरास्ते पर पहुँचते ही हंटर लेकर पिल पड़ेगा।

: दूकान बंद कर मैं भी तुम्हारे साथ चलता हुँ मैकू!

इस कथन के आधार पर दीनदयाल के चरित्र पर टिप्पणी लिखिए। (Score 4)

Do Not Copy

**MARCH 2016**

**सूचना:** जुलूस नाट्यरूपांतर के बीरबलसिंह के निम्नलिखित कथन पढ़िए और नीचे दिए प्रश्न का उत्तर लिखिए।

बीरबलसिंह : तुम लोगों को आगे जाने का हुक्म नहीं है।

: फिर से सोच लें! बहुत नुक्सान उठाना पड़ेगा!

: अभी तो वक्त है, इब्राहिम अली साहब ... ... . आप मेरे सामने से हट जाएँ।

इस कथन के आधार पर दीनदयाल के चरित्र पर टिप्पणी लिखिए। (Score 4)

**SEPT 2016 (Imp)**

**सूचना:** जुलूस नाट्यरूपांतर के इब्राहिम अली का निम्नलिखित कथन पढ़िए और नीचे दिए प्रश्न का उत्तर लिखिए।

इब्राहिम अली : दोरोगा साहब। मैं आपको इतमीनान दिलाता हुँ कि किसी किस्म का दंगा–फसाद न होगा।

: वापस तो हम न जाएँगे। आपको या किसी को हमें रोकने का हक नहीं है।

: आप बेटन चलाएँ दोरोगाजी।

इस कथन के आधार पर इब्राहिम अली के चरित्र पर टिप्पणी लिखिए। (Score 4)

**MARCH 2017**

**सूचना:** 'जुलूस' के दीनदयाल के निम्नलिखित कथन पढ़िए और नीचे दिए प्रश्न का उत्तर लिखिए।

- जुलूस निकालने से स्वराज मिल जाता तो कब का मिल गया होता।
- नया दारोगा बीरबल सिंह बड़ा जल्लाद है मैकू।
- दूकान बंद कर, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हुँ मैकू।

कथनों के आधार पर दीनदयाल के चरित्र पर टिप्पणी लिखिए। (Score 4)

**JULY 2017 (Imp)**

**सूचना:** 'जुलूस' के इब्राहिम अली के निम्नलिखित कथन पढ़िए और नीचे दिए प्रश्न का उत्तर लिखिए।

- हम दूकानें लूटने या मोटरें तोड़ने नहीं निकले हैं। हमारा मकसद इससे कहीं ऊँचा है।
- हमें अपने भाईयों से लड़ाई नहीं करनी है।
- जिस दिन हम इस लक्ष्य पर पहुँच जाऐंगे, उसी दिन स्वराज्य सूर्य का उदय होगा।

5. उपरोक्त कथनों के आधार पर दीनदयाल के चरित्र पर टिप्पणी लिखिए। (Score 4)

**MARCH 2018**

6. 'मैं आपको इतमीनान दिलाता हुँ कि किसी किस्म का दंगा–फसाद न होगा। हम दूकान लूटने या मोटरें तोडने नहीं निकले हैं .....'

यहाँ इब्राहिम अली के चरित्र की कौनसी विशेषता प्रकट होती है?

(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखिए।) (Score 2)

7. 'जुलूस' नाट्यरूपांतर के बीरबल सिंह के ये कथन पढ़िए।

- मुझे यह हुक्म है कि जुलूस यहाँ से आगे न जाने पाए।
- यहाँ खडे होने का भी हुक्म नहीं है। आप लोगों को वापस जाना पडेगा।
- फिर से सोच लें! बहुत नुकसान उठाना पडेगा।

इन कथनों के आधार पर बीरबल सिंह के चरित्र पर टिप्पणी लिखिए।

Do Not Copy

(चार–पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए।) (Score 4)

**MARCH 2019**

8. 'जुलूस' नाट्यरूपांतर के इब्राहिम अली के ये कथन पढ़िए।

- उसी दिन से स्वराज सूर्य का उदय होगा।
- हमें रोकना चाहते हैं, रोक लीजिए। मगर आप हमें लौटा नहीं सकते।
- आप बेटन चलाएँ।
- हमें दूकानों लूटने या मोटरें तोडने नहीं निकले हैं।

इन कथनों के आधार पर इब्राहिम अली के चरित्र पर टिप्पणी लिखिए।

(चार–पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए।) (Score 4)

**JULY 2019 (Imp)**

9. 'जुलूस' नाट्यरूपांतर के इब्राहिम अली के ये कथन पढ़िए।

- मैं आपको इतमीनान दिलाता हुँ कि किसी किस्म का दंगा–फसाद न होगा।
- आप अपने सवारों, संगीनों और बंदूकों के ज़ोर से हमें रोकना चाहते हैं, रोक लीजिए। मगर आपको हमें लौटा नहीं सकते।
- हमारे भाईबंद ऐसे हुक्मों की तालीम करने से साफ़ इनकार कर देंगे जिनकी मंशा महज़ कौम को गुलामी की जंजीरों में जकड़े रखना है।
- लोगों की मनोवृत्ति में आया परिवर्तन ही हमारी असली विजय है।

इन कथनों के आधार पर इब्राहिम अली के चरित्र पर टिप्पणी लिखिए।

(चार–पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए।) (Score 4)

**MARCH 2020**

10. नया दारोगा कौन है? वह कैसा आदमी है?

(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखिए।) (Score 2)

11. 'जुलूस' नाट्यरूपांतर के इब्राहिम अली के ये कथन पढ़िए।

- उसी दिन स्वराज सूर्य का उदय होगा।
- हमें दूकानों लूटने या मोटरें तोडने नहीं निकले हैं।
- हमारा उद्देश्य केवल जनता की सहानुभूति प्राप्त करना है।

इन कथनों के आधार पर इब्राहिम अली के चरित्र पर टिप्पणी लिखिए।

(चार–पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए।) (Score 4)

## परीक्षा की तैयारी केलिए:

(1) मान लें, 'जुलूस' का बीरबल सिंह सालों बाद अपनी आत्मकथा लिखता है। सूचना के आधार पर उसकी आत्मकथा का अंश तैयार करें।

**सहायक संकेत**: स्वराजियों का जुलूस को रोकना - लाठी चार्ज करना - इब्राहिम अली की मृत्यु

(2) आपके स्कूल के वार्षिकोत्सव में 'जुलूस' नाटक का मंचन भी हुआ। नाटक के अभिनेता सुमेश उसके बारे में अपने मित्र अनीष को पत्र लिखता है। वह पत्र तैयार करें।

**सहायक संकेत:** नाटक के मंचन, देशप्रेम, इब्राहिम अली का जीव त्याग

(3) 'जुलूस' नाटक का कौन-सी पात्र आपको अच्छा लगा? क्यों? अपने शब्दों में टिप्पणी लिखें।

Do Not Copy
HSS REPORTER SINCE 2015

(4) इब्राहिम अली की मृत्यु की खबर अगले दिन के समाचार पत्रों में आते हैं। समाचार कल्पना करके लिखें।

**सहायक संकेत:** स्वराजियों का जुलूस - लाठी चार्ज करना - इब्राहिम अली की मृत्यु

Kite Victers Class 8: https://youtu.be/QTPsm2IgqxQ
Kite Victers Class 9: https://youtu.be/Aok8ydLUPP8
Kite Victers Class 10: https://youtu.be/2gU_PtafiH8

Do Not Copy
HSS REPORTER SINCE 2015

## दोहे — कबीरदास

कबीरदास भक्तिकाल के ज्ञानाश्रयी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। समाज सुधारक कबीर, अपने समय में प्रचलित सभी धर्मों की अच्छाइयों को ग्रहण करके बुराइयों को खंडन करने का सफल प्रयास किया है। मन में मानवता रखने की प्रेरणा देकर आगे कबीरदास के दोहे.....

### दोहे पढ़ें और उत्तर लिखें:

**बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।**

**जो दिल खोजौं आपना, मुझ–सा बुरा न कोय।।**

1. समानार्थी शब्द दोहे से चुनकर लिखें।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बुराई | – बुरा | खोजना/ढूँढना | – खोजौं | अपना | – आपना |
| देखने केलिए | – देखन | मिला | – मिलिया | कोई | – कोय |
| हृदय | – दिल | मैं जैसा | – मुझ–सा | | |

2. कबीरदास किसकी खोज में निकला? कबीरदास बुरा व्यक्ति की खोज में निकला।
3. कबीरदास की राय में सबसे बुरा कौन है?

   अपने में जो कुछ बुरा है उसे छिपाकर, दूसरों की बुराई ढूँढनेवाले लोग ही कबीरदास की राय में बुरा है।
4. इस दुनिया में सबसे बुरा कौन है?

   अपने में जो कुछ बुरा या गलतियाँ हैं उसे छिपाकर, दूसरों की बुराई ढूँढनेवाले लोग।
5. अपने दिल खोजने पर कबीरदास ने क्या समझा?

   अपने दिल खोजने पर कबीरदास ने समझा कि उनसे बुरा और कोई व्यक्ति नहीं है।
6. 'जो दिल खोजौ आपना, मुझ–सा बुरा न कोय' – कबीर ने ऐसा क्यों कहा?

   हर मनुष्य में भलाई और बुराई दोनों होना संभव है। लेकिन वह अपनी बुराई को छिपाकर दूसरे लोगों को बुरा दिखाक, अपने को स्वयं अच्छे स्थापित करने की कोशिश करते हैं। दूसरों की बुराइयों को छोडकर स्वयं पहचानने पर वह ज्ञानी बन जाता है।
7. सच्चे ज्ञानी कौन हो सकता है?

   अपने आप को पहचाननेवाला व्यक्ति सच्चे ज्ञानी हो सकता है।
8. इस दोहे का तत्व क्या है?

   अपने को पहचाचननेवाला सच्चा ज्ञानी है।
9. दोहे का भावार्थ लिखें।

   कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ संत कवि थे। अनपढ़ होकर भी देशाटन और साधु–संतों के संपर्क से वे बडे ज्ञानी बन गए। अपने समय में प्रचलित अनाचार और अंधविश्वासों का खुला खंडन उन्होंने किया। उनकी प्रामाणिक रचना 'बीजक' है. जिसके भाग है – साखी, सबद और रमैनी। उवकी दोहाओं में गुरु–सेवा, नाम–महिमा, सत्संग, भक्ति, समाज–सुधार आदि भावों का समन्वय विद्यमान है।

   कबीरदास कहते हैं, जब मैं दूसरे व्यक्तियों में बुराई ढूँढने निकला तो कोई भी बुरा व्यक्ति को नहीं मिला। जब मैं अपने दिल में खोजा अर्थात आत्मनिरीक्षण करने पर पता चला कि मुझ से बुरा और कोई नहीं।

   प्रस्तुत दोहे से कबीरदास एक बड़े तत्व की ओर इशारा करते हैं कि दूसरों की बुराइयों ढूँढने के पहले हम में जो बुराइय़ों या गलतियाँ है , उसे पहचानकर सुधारें।

   दोहे का तत्व है – अपने को पहचाचननेवाला सच्चा ज्ञानी है।

**लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूरि।**

**चींटी ले शक्कर चली, हाथी के सिर धूरि।।**

1. समानार्थी शब्द दोहे से चुनकर लिखें।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सादगी | – लघुता | दूर | – दूरि | विनम्रता | – प्रभुता |
| ईश्वर | – प्रभु | धूलि | – धूरि | चीनी | – शक्कर |

2. महत्व कैसे मिलते है?

   विनम्रता से महत्व मिलते है।
3. महत्व मिलने से क्या फायदा है?

   मन में जो अहं का भाव है, वह नष्ट हो सकते है।

Do Not Copy

4. ईश्वर प्राप्ति कब हो सकते हैं?

   जब हम विनम्र और सरल होते हैं, तभी ईश्वर प्राप्ति हो सकते हैं।

5. अहंकार कैसे दूर हो जाते हैं?

   विनम्र और सरल जीवन बिताने से अहंकार दूर हो जाते है।

6. हाथी और चींटी के सिर पर क्या–क्या है?

   हाथी के सिर पर धूलि और चींटी के सिर पर शक्कर है।

7. हाथी और चींटी किन–किन के प्रतीक है?

   हाथी बड़ा होकर भी अहंकार का प्रतीक है। चींटी सबसे छोटा होकर भी लालित्य और विनम्रता का प्रतीक है।

8. इस दोहे का तत्व क्या है?

   जीवन की शांति सादगी में है।

9. 'जीवन की शांति सादगी में है' – इस तत्व के समर्थन केलिए कबीरदास किन–किन उदाहरणों को स्वीकार किए हैं?

   चींटी और हाथी। चींटी छोटी प्राणी है, लेकिन वे अपने सिर में शक्कर लेकर चलती है। बड़ा होकर भी हाथी के माथे पर केवल धूलि है।

   अर्थात अहं दूर होने से महत्व बढ़ता है।

10. प्रभुता का महत्व समझाने केलिए कबीर ने किसका सहारा लिया है?

    प्रभुता का महत्व समझाने केलिए कबीरदास ने चींटी और हाथी का सहारा लिया है।

11. दोहे का भावार्थ लिखें।

    कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ संत कवि थे। अनपढ़ होकर भी देशाटन और साधु-संतों के संपर्क से वे बडे ज्ञानी बन गए। कबीरदास अपने समय में प्रचलित अनाचार और अंधविश्वासों का खुला खंडन किया। उनकी प्रामाणिक रचना 'बीजक' है, जिसके तीन भाग है - साखी, सबद और रमैनी। उनकी कविता में गुरु-सेवा, नाम-महिमा, सत्संग, भक्ति, समाज-सुधार आदि भावों का समन्वय विद्यमान है।

    ललित जीवन बिताने पर ज़ोर देते हुए कबीरदास कहते है कि सादगी से विनम्रता मिलती है। विनम्रता से अहंकार नष्ट होते है। हम जितने सरल और ललित जीवन बिताते है, ईश्वर उतने अधिक हमारे पास आते है। मन में अहंकार होने पर ईश्वर भी हमें छोडकर दूर हो जाते है। इसके समर्थन केलिए कबीरदास ने चींटी और हाथी के उदाहरण का सहारा लिया है। आकार में सबसे छोटा होकर भी चींटी अपने सिर पर शक्कर लेकर चलता है। उनमें अहंकार नहीं है। वह विनम्रता का प्रतीक है। लेकिन हाथी बडा होकर भी सिर पर सिर्फ धूली है। बडे होने का गर्व उनमें ज़्यादा है।

    लालित्य एवं विनम्र जीवन बिताने की प्रेरणा देते हुए कबीरदास कहते है कि विनम्रता में मनुष्य का महत्व सौगुणा बढ़ता है।

**दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करैं न कोय।**
**जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय।।**

1. समानार्थी शब्द दोहे से चुनकर लिखें।

   स्मरण - सुमिरन  कोई - कोय  करता है - करै
   क्यों - काहे  होता है - होय

2. मनुष्य कब ईश्वर की स्मरण करता है?

   दुख के अवसर पर मनुष्य ईश्वर की स्मरण करता है।

3. सुख में ईश्वर की स्मरण करने से क्या फ़ायदा है?  जीवन में कभी भी दुःख नहीं होता।

4. दुःख को दूर रखने केलिए क्या करना है?

   सुख के अवसर पर भी ईश्वर की स्मरण करना है।

5. 'दुख काहे कोय' -इससे क्या तात्पर्य है?

Do Not Copy

सुख और दुख, दोनों जीवन के दो पहलु है। अपनी दुखी अवस्था में सब लोग ईश्वर की स्मरण करते है। ईश्वर स्मरणा में उनका दुख कम होता है। लेकिन सुख के अवसर में लेग ईश्वर को भूल जाता है। कबीरदास कहते हैं कि यदि सुख के अवसर में भी ईश्वर का स्मरण करें तो दुख कभी नहीं होता।

6. 'जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय'- अपना विचार प्रकट करे।

कबीरदास की प्रस्तुत पंक्ति एक बड़े तत्व की ओर हमें खीचता है। लोगों में एक आदत हैं कि अपने जीवन में कष्टता आने पर या जीवन में दुःख झेलने पर मंदिर-मस्ज़िद जाते हैं और खूब ईश्वर की प्रार्थना करती है। लेकिन सुख के अवसर पर ये लोग ईश्वर के बारे में नहीं सोचता।

ऐसे लोगों को चेतावनी देते हुए कबीरदास पूछते हैं कि यदि सुख में भी ईश्वर का स्मरण करें तो दुःख कैसे हो सकते हैं? अर्थात सुख के अवसर में भी ईश्वर स्मरण करें तो दुःख कभी भी होगा।

7. दोहे के तत्व क्या है? ईश्वर स्मरण का महत्व

8. दोहे का भावार्थ लिखें।

कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ संत कवि थे। अनपढ़ होकर भी देशाटन और साधु-संतों के संपर्क से वे बडे ज्ञानी बन गए। कबीरदास अपने समय में प्रचलित अनाचार और अंधविश्वासों का खुला खंडन किया। उनकी प्रामाणिक रचना 'बीजक' है, जिसके तीन भाग है - साखी, सबद और रमैनी। उनकी कविता में गुरु-सेवा, नाम-महिमा, सत्संग, भक्ति, समाज-सुधार आदि भावों का समन्वय विद्यमान है।

ईश्वर स्मरण के महत्व पर ज़ोर देते हुए कबीरदास कहते है कि सुख के अवसर पर ईश्वर का स्मरण करने से जीवन में दुख नहीं होता। जीवन में दुःख का अनुभव करते समय लोग ईश्वर की स्मरण करते है। लेकिन सुख के अवसर पर वे ईश्वर का नाम भूल सकते है। दुःख से बचने केलिए ईश्वर की कृपा-कटाक्ष अनिवार्य है। ऐसे लोगों से कबीरदार पूछते हैं कि सुख के अवसर पर भी ईश्वर स्मरण करने से दुःख क्यों होता है। इससे जीवन से दुःख सदा दूर रहेगा।

ईश्वर की याद करने की प्रेरणा देते हुए कबीरदास कहते है कि जीवन में दुःख एवं सुख के अवसर में ईश्वर हमारे साथ होना है।

**कामी क्रोधी लालची, इनते भक्ति न होय।**
**भक्ति करै कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय।।**

1. सामानार्थी शब्द दोहे से ढुँढकर लिखें।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लोभी | - लालची | शूर | - सूरमा | वर्ण | - बरन |
| खोकर | - खोय | इनसे | - इनते | से | - ते |

2. सच्चे शूर कैसे बनते हैं?

जाति, वर्ण और कुल का मोह को त्याग करने से सच्चे शूर बनते हैं।

3. किन-किन से भक्ति नहीं होती?

काम, क्रोध एवं लोभ से भक्ति नहीं होती।

4. कौन भक्ति कर सकता है?

जिसमें जाति, वर्ण, कुल महिमा आदि बंधनों को तोड़ने की क्षमता है, वे लोग भक्ति कर सकते है।

5. सच्चा शूर कैसे बनते है?

व्यक्ति जब जाति, वर्ण, कुल आदि को छोडकर समभाव रखता है, तब वह सच्चा शूर बनता है।

6. 'भक्ति करै कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय' - कबीर के मन में सच्चा वीर कौन है?

जाति, वर्ण, कुल आदि भेदभाव को छोडकर भक्ति करनेवाला ही कबीर के मन में सच्चा वीर है।

7. इस दोहे का तत्व क्या है?

समभाव शूर का लक्ष्ण है।

8. दोहे का भावार्थ लिखें।

कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ संत कवि थे। अनपढ़ होकर भी देशाटन और साधु-संतों के संपर्क से वे बडे ज्ञानी बन गए। कबीरदास अपने समय में प्रचलित अनाचार और अंधविश्वासों का खुला खंडन किया। उनकी प्रामाणिक रचना 'बीजक' है, जिसके तीन भाग है - साखी, सबद और रमैनी। उनकी कविता में गुरु-सेवा, नाम-महिमा, सत्संग, भक्ति, समाज-सुधार आदि भावों का समन्वय विद्यमान है।

बुरी वासनाओं से दूर रहने का उपदेश देते हुए कबीरदास कहते हैं कि काम, क्रोध और लोभ, ऐसे बुरी वासनाओं से भक्ति नहीं होती। भक्ति तो कोई भी निराला शूर कर सकता है, जिसने जाति, वर्ण, कुल आदि का मोह त्याग दिया हो। सच्चे भक्त का मन काम, क्रोध, लोभ आदि बुरी वासनाओं से दूर रहते है।

HSS REPORTER SINCE 2015
Do Not Copy

अतः भक्ति में जाति-पाँति या वर्ण का कोई स्थान नहीं है। ईश्वर के सामने सब एक समान है।

**साई इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय।**
**मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।**

1. समानार्थी शब्द दोहे से ढूँढ़कर लिखे।
   ईश्वर - साई जिसमें - जामे परिवार - कुटुंब
   संभाला - समाय संत - साधु
2. कबीरदास ईश्वर से क्या प्रार्थना करते है? या कबीरदास ईश्वर (साई) से क्या चाहते हैं?
   कबीरदास ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि, मुझे इतना ही धन या धान्य दीजिए जिससे अपने परिवार का देखभाल आसानी से करें। वे यह भी प्रार्थना करते हैं कि कोई भी भूखा न रहें।
3. इस दोहे का तत्व क्या है?
   अपने पास जो कुछ है, उसमें ही खुश होना चाहिए।
4. दोहे का भावार्थ लिखें।
   कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ संत कवि थे। अनपढ़ होकर भी देशाटन और साधु-संतों के संपर्क से वे बडे ज्ञानी बन गए। कबीरदास अपने समय में प्रचलित अनाचार और अंधविश्वासों का खुला खंडन किया। उनकी प्रामाणिक रचना 'बीजक' है, जिसके तीन भाग है - साखी, सबद और रमैनी। उनकी कविता में गुरु-सेवा, नाम-महिमा, सत्संग, भक्ति, समाज-सुधार आदि भावों का समन्वय विद्यमान है।
   कबीरदास ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि - हे ईश्वर, आप मुझे इतना ही धान्य या धन दीजिए जिससे अपने परिवार आसानी से सँभाल करें। साथ ही घर में कोई अतिथि आएँ तो उसको भी ज़रा कुछ देना है।
   धन हो या धान्य, ज़्यादा अधिक होने से कोई फायदा नहीं। ये सब हमें दुःख की ओर खींचते है।

## पिछले सालों की परीक्षाओं में आए प्रश्नः-

### मार्च 2015:

**सूचनाः** निम्नलिखित दोहा पठिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे कोय।।

1. 'स्मरण' शब्द का समानार्थी शब्द दोहे से ढूँठकर लिखिए। (1)
2. इस दोहे का भावार्थ लिखिए। (4)

### सितंबर 2015:

**सूचनाः** निम्नलिखित दोहा पठिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
कामी क्रोधी लालची, इनते भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सुरमा, जाति बरन कुल होय।।

3. 'वर्ण' शब्द का समानार्थी शब्द दोहे से ढूँठकर लिखिए। (1)
4. इस दोहे का भावार्थ लिखिए। (4)

### मार्च 2016:

**सूचनाः** निम्नलिखित दोहा पठिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूरि।
चींटी ले शक्कर चली, हाथी के सिर धूरि।।

5. 'धूली' शब्द का समानार्थी शब्द कोष्ठक से ढूँठकर लिखिए। (1)
   (चींटी, हाथी, धूरि, दूरि)
6. इस दोहे का भावार्थ लिखिए। (4)

### सितंबर 2016:

**सूचनाः** निम्नलिखित दोहा पठिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजौं आपना, मुझ-सा बुरा न कोय।।

7. 'कोई' शब्द केलिए दोहे में प्रयुक्त शब्द कोष्ठक से चुनकर लिखिए। (1)
   (खोजौं, देखना, आपना, कोय)

Do Not Copy
HSS REPORTER SINCE 2015

8. दोहे का भावार्थ लिखिए। (4)

**मार्च 2017:**

**सूचना:** निम्नलिखित दोहा पठिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

साई इतना दीजिए, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधू न भूखा जाय।।

9. 'संभालना' शब्द का आशय दोहे के किस शब्द से मिलता है? (1)
10. दोहे का भावार्थ लिखिए। (4)

**जुलाई 2017:**

**सूचना:** निम्नलिखित दोहा पठिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूरि।
चींटी ले शक्कर चली, हाधी के सिर धूरि।।

11. 'सादगी' इस शब्द का समानार्थी शब्द कविता से ढूँढकर लिखिए। (1)
12. इस दोहे का भावार्थ लिखिए। (4)

**मार्च 2018:**

13. निम्नलिखित दोहा पढिए।

'दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे कोय।।'

सुख और दुख दोनों में ईश्वर का स्मरण करता है।
दोहे का आशय स्पष्ट कीजिए। (चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखें।) (4)

**मार्च 2019:**

14. निम्न लिखित दोहा पढ़िए और दोहे का आशय स्पष्ट कीजिए।

लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूरि।
चींटी ले शक्कर चली, हाधी के सिर धूरि।।

(चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखें।) (4)

**जुलाई 2019:**

15. "भक्ति करै कोइ सूरमा, जाति बरन कुल खोय" –
कबीर के मत में सच्चा वीर कौन है?
(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखें।) (2)
16. यह दोहा पढ़ें।
साई इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।
इस दोहे का आशय स्पष्ट कीजिए।
(चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखें।) (4)

**मार्च 2020:**

17. दोहा पढ़ें और भाव लिखें।
साई इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।
(चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखें।) (4)

**दिसंबर 2020:**

18. दोहा पढ़ें और भाव लिखें।
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।

Do Not Copy
HSS REPORTER SINCE 2015

जो दिल खोजौं आपना, मुझ-सा बुरा न कोय।।
(चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखें।) (4)

Kite Victers Class 11: https://youtu.be/Zc_r26K6Jvo
Kite Victers Class 12: https://youtu.be/kgMwOO-_-70
Kite Victers Class 13: https://youtu.be/FRmYEQSVh1g

Do Not Copy

**आनंद की फुलझडियाँ** **अनंत गोपाल शेवडे**

अहिंदी भाषी हिंदी लेखकों में श्री अनंत गोपाल शेवडे के प्रेरक अनुभवों से युक्त रचना है आनंद की फुलझडियाँ। स्वार्थता छोडकर दूसरों की भलाई केलिए कार्य करते समय हरेक मानव का महत्व बढ़ता है। यदि अपनी मृदुभाषा और आचरण से क्षण मात्र केलिए सुख पहुँचा सकें तो हमारा जीवन धन्य होगा। जीवन को सकारात्मक दृष्टि से देखने केलिए आगे एक निबंध.....

| एक नज़र.... | | | |
|---|---|---|---|
| सं | **घटना** | **किन-किन पात्र से संबंधित** | **स्थान** |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | आम की गुठलियाँ | बूढ़ा आदमी | नौजवान | सड़क के किनारे |
| 2 | फूल-फलों के बीज फेंकना | वृद्ध संभ्रांत महिला | सहयात्री | रेलगाड़ी में |
| 3 | गरीब विद्यार्थी की मदद करना | अमेरिका के प्रसीड़ेंट | गरीब विद्यार्थी | अमेरिका में |
| 4 | टिकट केलिए छीना-झपटी | लेखक | टिकट बाबू | रेलवे स्टेशन में |
| 5 | क्लर्क की हस्तलिपि | लेखक | बैंक का क्लर्क | बैंक में |

**सारांश:**

जीवन के प्रति साकारात्मक दृष्टिकोण रखनेवाले अनंत गोपाल शेवड़े के प्रेरक अनुभवों से युक्त ललित निबंध है आनंद की फुलझड़ियाँ। इसमें पाँच भिन्न-भिन्न घटनाओं से समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता हैं। स्वार्थता छोड़कर परमार्थ केलिए काम करें तो मनुष्य जीवन सार्थक होता है। मृदु शब्द एवं सभ्य आचरण से क्षण मात्र केलिए सहजीवियों को सुख पहुँचा सकें तो हमारा जीवन धन्य होगा।

जगह-जगह जो हरे-भरे वृक्ष दिखाई देते हैं, उन सबका बीज हमारे पूर्वजों ने बोया था। आगामी पीढ़ी को सुख एवं आनंद पहुँचाने इन फल-वृक्षों का बीज बोया था।

रेलगाडी में यात्रा करते वक्त लेखक ने सुंदर फूल-फलों के बीज फेंकती हुई एक संभ्रांत महिला को देखा। उसको न मालुम कि उस रास्ते से फिर गुज़रूँ या नहीं, फिरभी वह इस अवसर का उपयोग करती है। यदि इसमें से कुछ जड़ पकड़ें तो ज़रूर दूसरों केलिए उपयोगी होगा।

अमेरिका के प्रेसिडेंट बेंजामिन फ्रैंकालीन के पास सहायता माँगे आए एक गरीब विद्यार्थी को उन्होंने बीस डॉलर दिए। आश्चर्य की बात यह है कि वे डॉलर एक चेन के रूप में आज भी अमेरिका में ज़रूरतमंदों के बीच घूम रहे है।

टिकट लेनेवाले यात्रियों की उपहास के बीच लेखक ने टिकट बाबू की परेशानियों को समझकर जो मधुर बात कही, उसका गहरा प्रभाव टिकट बाबू पर पड़ा। उस सहानुभूति से उसका हृदय मोम-सा हो गया और जल्दी-जल्दी टिकट देकर भीड छाँटना शुरु किया।

लेखक बैंक में हिसाब खोलने केलिए आए थे। वहाँ की क्लर्क का लिखावट बहुत सुंदर था। लेखक खुली मन से उसकी प्रशंसा की। क्लर्क का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। लेखक के थोडे शब्दों से उसके जीवन में क्षणमात्र केलिए सुख पहुँचाया।

दूसरों के गुणों को पहचानकर प्रशंसा करने से एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति जागृत होती है। संबंध सुदृढ़ एवं मधुर होते हैं।

**खंड़ पढ़िए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:**

**I. एक बूढा आदमी .....नाती-पोते खाएँगे।**

1) बूढ़ा आदमी क्या कर रहा था?
   बूढ़ा आदमी ज़मीन खोद रहा था।
   या
   बूढ़ा आदमी आम की गुठलियाँ बो रहा था।
2) बूढ़े आदमी की विशेषता क्या है?
   वह तो उतना बूढ़ा है कि उनके बाल सफेद हो गए थे।
3) बूढ़े को आम की गुठलियाँ बोते देखकर नौजवान क्यों आश्चर्य चकित हो गए?
   आदमी तो उतना बूढ़ा था। उनके बाल तो सफेद हो गए थे। उस बुजुर्ग का परिश्रम देखकर नौजवान आश्चर्य चकित हो गए।
4) 'इसके फल कब खाओगे'- कौन, किससे पूछा?
   नौजवान ने बूढ़े आदमी से पूछा।
5) खंड का संक्षेपण करके उचित शीर्षक दें।

**निस्वार्थ सेवा**

एक बूढ़ा आदमी आम का बीज बोते देखकर एक युवक ने पूछा कि इसके फल कब खा सकते है। बूढ़े ने तुरंत उत्तर दिया कि यह आम का पेड़ बनते समय उसके मीठे-मीठे फल मेरे आगामी पीढ़ी केलिए ज़रूर लाभदायक होंगे। शायद तुम भी खा सकते है।

**II. हमारे पूर्वजों की ..... हो उठेगा।**

1) हमारे पूर्वजों की मनोवृत्ति का फल क्या है?
   जो आमराई हम जगह-जगह देखते हैं, ये हमारे पूर्वजों की मनोवृत्ति का फल है।
2) 'हम जगह-जगह जो आमराई देखते हैं' - यह किस प्रवृत्ति का फल है?
   हमारे पूर्वजों की मनोवृत्ति का फल है।

HSS REPORTER SINCE 2015
Do Not Copy

3) 'हमारे पूर्वजों की इसी मनोवृत्ति का फल है, जो हम जगह-जगह आमराई देखते हैं'- कौन-सी मनोवृत्ति?

स्वार्थता को भूलकर दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाने की मनोवृत्ति। हमारे पूर्वजों में स्वार्थता नहीं था। वे जो कुछ करते हैं उन सब में एक दीर्घ-दृष्टि है। हम जगह-जगह बड़े-बड़े वृक्ष देख सकते हैं,जहाँ यात्रा के अवसर में ज़रा आराम केलिए बैठते है, ये सब हमारे पूर्वजों के परिश्रम का फल है। अपने सुख-सुविधाओं के बारे में वे सोचते नहीं। उन्होंने जो कुछ बोया था, वह आगामी पीढ़ी केलिए है।

4) उस बूढ़े का आगे का जीवन कैसे हो सकते हैं?

उस बूढ़े का जीवन एक परम सात्विक आनंद की दीप्ति से जगमगा उठा होगा और उसकी मृत्यु बहुत शांत और कष्टहीन होगी।

5) 'उस बूढ़े आदमी का जीवन एक परम सात्विक आनंद की दीप्ति से जगमगा उठा होगा' - कैसे?

उतना बुजुर्ग होकर भी वह स्वयं ज़मीन खोदकर आम के बीज बो रहा है। उस का फल अपने आगामी पीढ़ी केलिए है। वह तो, अपने सुख-सुविधाओं को भूलकर दूसरों को सुख एवं आनंद पहुँचाते है। इसलिए उस बूढ़े आदमी का जीवन एक परम सात्विक आनंद की दीप्ति से जगमगा उठा होगा।

6) किसकी मृत्यु बहुत शांत और कष्टहीन होगी? क्यों?

बूढ़े आदमी की मृत्यु बहुत शांत और कष्टहीन होगी क्योंकि उन्होंने अपनी स्वार्थी जीवन से कुछ ऊँचे उठकर दूसरों को सुख एवं आनंद पहुँचाते रहा।

7) यदि हम लोग इस वृत्ति को हृदयंगम कर लें तो क्या हो सकेगी?

यदि हम लोग इस वृत्ति को हृदयंगम कर लें तो इस दुनिया में अधिक सुख एवं आनंद की सृष्टि हो सकेगी।

8) हमें किस वृत्ति का हृदयंगम करना है?

अपने स्वार्थता से कुछ ऊँचा उठाकर दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाने की वृत्ति को हृदयंगम करना है।

9) किसमें कोई शक नहीं है?

यदि सभी लोग अपने स्वार्थता से कुछ ऊँचा उठाकर दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाने केलिए कोशिश करें तो इस दुनिया में अधिक आनंद की सृष्टि हो सकेंगी, इसमें कोई शक नहीं है।

10) हमारा जीवन सच्चे सुख के प्रकाश से आलोकित हो उठेगा, कैसे?

यदि सभी लोग अपने स्वार्थता से कुछ ऊँचा उठाकर दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाने केलिए कोशिश करें तो इस दुनिया में अधिक आनंद की सृष्टि हो सकेंगी। इससे हमारा जीवन भी सच्चे सुख के प्रकाश से आलोकित हो उठेगा।

11) खंड का संक्षेपण करें और शीर्षक दें।

**<u>निस्वार्थता</u>**

अपने स्वार्थ जीवन से ऊँचे उठाकर दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाएँ तो हम दुनिया में अधिक आनंद की सृष्टि हो सकेगी। हमारा जीवन भी सच्चे सुख और आनंद की दीप्ति से जगमगा उठा होगी।

## III. एक वृद्ध संभ्रांत .....उपयोग कर लूँ।

1) वृद्ध महिला क्या कर रही थी?

वृद्ध महिला रेलगाड़ी से यात्रा कर रही थी।

2) वृद्ध महिला क्या कर रही थी?

वृद्ध महिला रेलगाड़ी में खिड़की के पास बैठकर अपनी मुट्ठी भर कुछ चीज़ बाहर फेंकती जा रही थीं।

3) रेलगाड़ी से वृद्ध महिला क्या फेंक रही थी?

सुंदर फूलों और फलों के बीज फेंक रही थी।

4) वृद्ध महिला की उम्मीद क्या थी?

वृद्ध महिला रेलगाजडी से फूलों और फलों के बीज बाहर फेंक रही थी। वह इस उम्मीद से उसे फेंकते रहे कि अगर उसमें से कुछ बीज जड़ पकड़ लेंगे तो लोगों को फायदा होगा।

5) यदि उनमें से कुछ बीज जड़ पकड़े तो लोगों को क्या फायदा होगा?

यदि उनमें से कुछ बीज जड़ पकडे तो वहाँ से आने-जानेवाले लोगों को शीतल छाया मिलेगा, मीठे फल भी खा सकेंगा। यदि सुंदर फूलों के बीज है तो उसे देखनेवालों के मन में भी खुशी होगी।

6) इसलिए मैं इस संधि का उपयोग कर लूँ, संधि क्या है?

वृद्ध महिला को संदेह हैं कि वह फिर उसी रास्ते से गुज़रूँ या न गुज़रूँ। इसलिए वह अपने अवसर का, दूसरों की भलाई केलिए उपयोग करने का निश्चय किया।

7) 'इन में से कुछ अगर जड़ पकड़ लेंगे तो लोगों का इससे कुछ फायदा होगा'- वृद्ध महिला ऐसा क्यों सोचती

Do Not Copy

हैं?

वृद्ध महिला को संदेह हैं कि वह फिर उसी रास्ते से गुज़रूँ या न गुज़रूँ। इसलिए वह अपने अवसर का, दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाने केलिए उपयोग करते है।

8) खंड़ का संक्षेपण करके उचित शीर्षक दें।

**अवसर का सदुपयोग**

एक वृद्ध महिला रेलगाड़ी से यात्रा करते समय अपनी मुट्ठी से सुंदर फूलों और फलों के बीज बाहर फेंक रही थी। उनकी उम्मीद यह थी कि यदि उसमें से कुछ अगर जड़ पकडें तो लोगों को कुछ फायदा होगा।

## IV. आजकल के ..... कर सकते है।

1) दुनिया रहने लायक कैसे बने?

आज की नए पीढ़ी सदा रुपए-पैसे के पीछे दौड़ती है। स्वार्थता भरी इस दुनिया में कुछ लोग ऐसे भी है, जो निस्वार्थ जीवन बिताते है। वे परोपकारी भी थे। इस प्रकार दुनिया रहने लायक बनी।

2) हमें किसके परे रहना चाहिए?

भौतिकवाद और भोग-विलास के हाय-हाय से परे रहना चाहिए।

3) भौतिकवाद और भोग-विलास के हाय-हाय से परे कौन रहते हैं?

निःस्वार्थी और आदर्श-प्रिय लोग।

4) निःस्वार्थी और आदर्श-प्रिय लोग कौन हो सकते है?

भौतिकवाद और भोग-विलास के हाय-हाय से परे रहनेवाले, निःस्वार्थी और आदर्श-प्रिय हो सकते है।

5) हम कब रसातल तक पहुँच गए होते?

भौतिकवाद और भोग-विलास के हाय-हाय से परे रहनेवाले निःस्वार्थी और आदर्श-प्रिय लोग न होते तो हम रसातल तक पहुँच गए होते।

6) किसको देखकर हम मानव जाति के भविष्य पर विश्वास कर सकते हैं?

कुछ व्यक्ति ऐसे है, जो इस ज़माने के अंधकार में भी थोडा आनंद की फुलझडियाँ से दुनिया में प्रकाश फैलाते रहते है। उन्हें देखकर हम मानव जाति के भविष्य पर विश्वास कर सकते हैं।

7) खंड़ का संक्षेपण करें और उचित शीर्षक दें।

**मानव जाति का भविष्य**

निःस्वार्थ लोगों के कारण ही दुनिया रहने लायक बनी है। ऐसे लोगों के अभाव में हम रसातल तक पहुँच कर सकते हैं। अंधकार में भी आनंद फैलानेवालों पर इस दुनिया और मानव-जाति के भविष्य रहते हैं।

## V. अमेरिका के .....अच्छी बात है।

1) अमेरिका के प्रेसीड़ेंट बेंजमिन फ्रैंकलीन के यहाँ कौन आए? क्यों?

अमेरिका के प्रेसीड़ेंट बेंजमिन फ्रैंकलीन के यहाँ एक गरीब विद्यार्थी मदद माँगने केलिए आया।

2) 'अमेरिका के प्रेसीड़ेंट ने विद्यार्थी की मदद किया' – यह प्रस्ताव सही है या गलत?

सही है।

3) अमेरिका के प्रेसीड़ेंट ने गरीब विद्यार्थी की मदद कैसे की?

अमेरिका के प्रेसीड़ेंट ने गरीब विद्यार्थी को बीस डॉलर देकर मदद की।

4) 'लेकिन वह विद्यार्थी उस उपकार को न भूला'-इससे विद्यार्थी के कौन-सी चरित्रगत विशेषता व्यक्त होती है।

विद्यार्थी गरीब होकर भी ईमानदारी है। वर्ष कई ब त जाने पर भी वह उस उपकार को न भूला। जब अपने दिन फिरे वह उस रकम लौटाने केलिए अमेरिका के प्रेसीड़ेंट के पास गए।

5) वह बीस डॉलर बेंजमिन फ्रैंकलीन ने स्वीकार नहीं किया, क्यों?

बेंजमिन फ्रैंकलीन तो विद्यार्थी को वह छोटी रकम देकर भूल गए। इसलिए वह बीस डॉलर बेंजमिन फ्रैंकलीन ने स्वीकार नहीं किया।

6) विद्यार्थी रकम लौटाने आए तो फ्रैंकलीन ने क्या कहा?

विद्यार्थी रकम लौटाने आए तो फ्रैंकलीन ने कहा, 'मुझे याद तो नहीं हैं कि मैंने यह रकम आपको कब दी। लेकिन खैर आप इसे अपने ही पास रखिए और जब आपके पास कोई ऐसा ही ज़रूरतमंद आए तो उसे यह दे दीजिए।'

7) ज़रूरतमंद कौन-कौन हो सकते हैं?

इस स्वार्थता भरी दुनिया में कुछ लोग ऐसे है, जो अपनी बुनियादी ज़रूरतें से वंचित रहते हैं। बुनियादी ज़रूरतों के अंतर्गत भोजन, वस्त्र, आवास आदि आते है। बुनियादी ज़रूरतों से वंचित गरीब लोग ज़रूरतमंद हो सकते है।

Do Not Copy

8) उस बीस डॉलर अब किसके पास है?

अब भी वह बीस डॉलर अमेरिका में ज़रूरतमंदों के हाथों में घूमते रहते है।

9) अमेरिका के प्रेसीड़ेंट बेंजमिन फ्रैंकलीन के बारे में एक सुंदर बात सुनी जाती है, क्या है?

अमेरिका के प्रेसीड़ेंट बेंजमिन फ्रैंकलीन के पास मदद माँगने केलिए आए गरीब विद्यार्थी को उन्होंने बीस डॉलर दिए। प्रसीड़ेंट तो उस छोटी रकम देकर भूल गए। जब विद्यार्थी रकम वापस लौटाने आए तो उन्होंने स्वीकार नहीं किए। उसके पास रखकर ज़रूरतमंदों को देने का कहा। आद भी वह रकम अमेरिका में ज़रूरतमंदों के हाथों में घूम रही है।

10) खंड़ का संक्षेपण करें और उचित शीर्षक दें।

**ज़रूरतमंदों के हाथों में**

अमेरिका के प्रेसीड़ेंट बेंजमिन फ्रैंकलीन के पास मदद माँगने केलिए आए गरीब विद्यार्थी आए। उसको उन्होंने बीस डॉलर दिए। वह तो उस छोटी रकम देकर भूल गए। जब विद्यार्थी रकम लौटाने आए तो उन्होंने स्वीकार नहीं किए। उसे, उसके पास रखकर ज़रूरतमंदों को देने को कहा। आज भी वह रकम अमेरिका में ज़रूरतमंदों के हाथों में घूम रही है।

## VI. रुपया कमाना .....तो फिर कहिए।

1) सबकी पहुँच में क्या-क्या न हीं है?

रुपया कमाना और शिक्षा पाकर डिग्रियाँ हासिल करना सबकी पहुँच में नहीं है।

2) सब लोग क्या कर सकते है?

सब लोग चाहें तो आनंद और सुख की रश्मियाँ बिखेरकर दुनिया के दुख को कुछ-न-कुछ हल्का सकते हैं और जिन लोगों से हमारा संबंध है, उनके जीवन में कुछ-न-कुछ प्रसन्नता भी ला सकते हैं।

3) दुनिया के दुःख कैसे हल्का कर सकते हैं?

आनंद और सुख की रश्मियाँ बिखेरकर इस दुनिया के दुःख कैसे हल्का कर सकते हैं।

4) 'उनके जीवन में कुछ-न-कुछ प्रसन्नता तो ज़रूर ही ला सकते हैं'- किनके जीवन में?

जिन लोगों से हमारा संबंध है, उनके जीवन में।

5) हमारा जीवन किन-किन मुसीबतों से भरा पड़ा है?

हमारा जीवन लड़ाई, गरीबी, महँगाई, गुलामी जैसे मुसीबतों से भरा पड़ा है।

6) ज़िंदगी की लड़ाई को सहने लायक और जीवन को जीने लायक कैसे बना सकते है?

जीवन की मुसीबतों में कुछ-न-कुछ सुख और आह्लाद फैलाकर ज़िंदगी की लड़ाई को सहने लायक और जीवन को जीने लायक बना सकते है।

7) जीवन की मुसीबतों में कुछ-न-कुछ सुख और आह्लाद फैलाने से क्या हो सकते हैं?

ज़िंदगी की लड़ाई को सहने लायक और जीवन को जीने लायक बना सकते है।

8) खंड का संक्षेपण करें और उचित शीर्षक दें।

**खुशी भरे जीवन**

हम चाहें तो आनंद और सुख की रश्मियाँ बिखेरकर इस दुनिया के दुःख हल्का कर सकते हैं। जीवन की मुसीबतों में भी सुख और आह्लाद फैला सकते हैं और ज़िंदगी जीने लायक बना सकते हैं।

## VII. अपने काम से ..... शुरु कर दिया।

1) भीड़ खूब रहती थी, क्यों?

लड़ाई के कारण कंपनी ने गाड़ियों की संख्या कम कर दी थी, इसलिए भीड़ खूब रहती थी ।

2) छीना-झपटी होती थी, क्यों?

टिकट लेने केलिए छीना-झपटी होती थी।

3) टिकट लेने केलिए छीना-झपटी होती थी, क्यों?

लड़ाई के कारण कंपनी ने गाड़ियों की संख्या कम कर दी थी। भीड़ खूब रहती थी। इसलिए टिकट लेने केलिए छीना-झपटी होती थी।

4) टिकट बाबू के परेशानी का कारण क्या थी?

लड़ाई के कारण कंपनी ने गाड़ियों की संख्या कम कर दी थी। इसलिए टिकट लेने केलिए लोगों की अधिक भीड़ थी। टिकट काउडर की छोटी खिड़की से बहुत सारे हाथ अंदर घुस रहे थे। अनेक लोग एक साथ टिकट माँगना, यात्रियों की शिकायत भरी वाणी, उपहास, अपने काम की तनाव, टिकट लेने केलिए होनेवाली छीना-झपटी आदि देखने-सुनने के कारण टिकट बाबू परेशान थी।

5) तानेकशी शुरु हुई, क्यों?

Do Not Copy

टिकट बाबू जल्दी-जल्दी एक-एक आदमी को टिकट देते रहते थे। इतने में गाड़ी आने का वक्त हो रहा था। लोगों का धीरज छटने लगा और तानेकशी शुरु हुई।

6) तानेकशी शुरु हुई, वहाँ क्या-क्या सुनाए जा रहे थे?

वहाँ बहुत सारे आवाज़ सुनाए जा रहे थे। ये इस प्रकार हैं-'अरे भैया, दक्षिणा चढ़ाओ तब जल्दी टिकट मिलेगा।'

'बड़ी इनएफीशियेंसी है।'

'हम स्टेशन मास्टर से शिकायत करें।'

7) इन तानेकशी के बीच भी टिकट बाबू क्या कर रहा था?

टिकट बाबू इन तानेकशी को सुना-अनसुना करके अपना काम करते रहते थे।

8) टिकट बाबू किन बातों को सुना-अनसुना करके अपना काम करते रहते थे?

लड़ाई के कारण कंपनी ने गाड़ियों की संख्या कम कर दी थी। भीड़ भी ज़्यादा था। बाबू टिकट दे रहे थे। उधर गाड़ी आने का वक्त हो गया। इतने में लोगों का धीरज छूटने लगा। वहाँ तानेकशी एवं धमकियाँ शुरु हुई। टिकट बाबू इन बातों को सुना-अनसुना करके अपना काम करते रहते थे।

9) 'कभी-कभी नाराज़ हो जाते तो, अपनी नाराज़ी देर से टिकट देते रहे' - कौन?

टिकट बाबू।

10) टिकट बाबू नाराज़ थे, क्यों?

या

टिकट बाबू की नाराज़ी का कारण क्या है?

खिड़की के पास की भीड़, यात्रियों की तानाकशी, काम की पिसाई आदि के कारण टिकट बाबू नाराज़ थे।

11) 'कभी-कभी नाराज़ हो जाते तो, टिकट बाबू अपनी नाराज़ी कैसे प्रकट करती है?

वह अपनी नाराज़ी, जो ताने कस रहे थे, उन्हें देर से टिकट देते रहा।

12) 'टिकट देर से देकर निकालने की कोशिश करने लगे'- कौन? क्यों?

टिकट बाबू देर से टिकट देकर निकालने की कोशिश करने लगे, क्योंकि गाड़ी आने का वक्त होते ही वहाँ भीड़ का धीरज छटने लगा। इतने में वहाँ तानेकशी शुरु हुई। नाराज़ होकर टिकट बाबू जो ताने कस रहे थे, उन्हें देर से देकर निकालने की कोशिश करने लगे।

13) लेखक ने मुसाफिरों से क्या कहा?

लेखक ने मुसाफिरों से कहा, ज़रा ठहरिए, भाई साहब! देखिए बेचारा बाबू जितना फँस रहा है। इस लड़ाई ने रेलवे कर्मचारियों पर तो बेहद काम का बोझ डाल दिया है, जिसमें छोटे-छोटे क्लर्कों का तो मरण है।

14) बाबू फँस रहा हैं, क्यों?

लड़ाई ने रेलवे कर्मचारियों पर ज़्यादा काम का बोझ डाल दिया है। छोटे-छोटे क्लर्कों का काम तो मरण है। इसलिए बेचारा बाबू भी अपने काम में फँस रहा है।

15) 'टिकट बाबू पर इन शब्दों का अजीब असर पड़ा' - किनकी शब्दों का? क्यों?

लेखक की शब्दों का, क्योंकि टिकट बाबू अपने सामने घटित बातों को सुना-अनसुना करके अपना काम करते रहे। यदि नाराज़ हो जाते तो, वह देर से टिकट देकर अपनी नाराज़ी को दूर करते रहे। ये सब देखकर लेखक के मन में सहानुभूति उभर पड़ा। लेखक लोगों को शांत करने केलिए और टिकट बाबू की परेशानी को दूर करने केलिए कही गई मधुर बातों का गहरा प्रभाव टिकट बाबू पर पड़ा।

16) टिकट बाबू की शिकायत क्या थी?

टिकट बाबू की शिकायत यों है, - 'ऐसी पिसाई हो रहा है कि हिसाब नहीं। कंपनी से स्टाफ की संख्या बढ़ाने केलिए कहा तो 'न' में जवाब मिला। महँगाई-भत्ते केलिए दरखास्त दी तो कहते हैं विचार करेंगे। बड़ी मुसीबत है।'

17) टिकट बाबू की मुसीबतें क्या-क्या थी?

लड़ाई के कारण गाडियों की संख्या कम थी। गाड़ियों की कमी और लोगों की भीड़ के कारण पिसाई भी अधिक थी। महँगाई-भत्ता भी कम था।

18) टिकट बाबू पर लेखक की शब्दों का क्या असर असर पड़ा?

टिकट बाबू पर लेखक की शब्दों का अजीब असर असर पड़ा। उन्होंने उत्साह से जल्दी-जल्दी टिकट काटकर भीड़ छाँटना शुरु किया।

Do Not Copy
HSS REPORTER SINCE 2015

19) खंड़ का संक्षेपण करें और उचित शीर्षक दें।

**सहानुभूति का असर**

लेखक मुबंई जा रहा था। लड़ाई के कारण कंपनी ने गाड़ियों की संख्या कम कर दी थी, और भीड़ ज्यादा अधिक थी। टिकट बाबू तो इन बातों को सुना-अनसुना करके अपना कर रहे थे। लेखक ने भीड़ को शांत कराने की कोशिश की। लेखक की सहानुभूति भरे शब्दों का अजीब असर बेचारे टिकट बाबू पर पड़ा। वह उत्साह से टिकट काटकर भीड़ छाँटना शुरु किया।

## VIII. छोटी-सी घटना .....कुछ नहीं।

1) छोटी-सी घटना है, लेकिन एक सबक सिखाती है। घटना का वर्णन अपने शब्दों में करें।

लड़ाई के कारण गाड़ियाँ कम थी। टिकट लाने केलिए भीड़ तो ज़्यादा अधिक था। इसलिए टिकट बाबू परेशान थी। टिकट बाबू की परेशानी समझकर लेखक ने सहानुभूति दर्शाई तो वह उत्साह से खटाखट टिकट काटकर भीड़ छाँटना शुरु कर दिया।

2) छोटी-सी घटना है, लेकिन एक सबक सिखाती है। सबक क्या है?

बेचारे टिकट बाबू की परेशानी समझकर लेखक ने सहानुभूति दर्शाई। सहानुभूति के उन थोडे शब्दों ने उसे नई ताकत थी। उसका हृदय मोम-सा हो गया और वह जल्दी-जल्दी टिकट देकर भीड़ छाँटना शुरु किया।

यह घटना हमें सहानुभूति सिखाते हैं। सहजीवियों से सहानुभूति दर्शाना मनुष्य सहज है।

3) युद्ध के कारण महकमों का हाल कैसी थी?

युद्ध के कारण सभी महकमों में कर्मचारियों का अभाव था। इसलिए सब का काम बहुत चढ़ गया था।

4) 'मैं ने सहानुभूति दर्शाई तो उसका हृदय मोम-सा हो गया'-यहाँ किसने सहानुभूति दर्शाई? किससे?

लेखक ने टिकट बाबू से सहानुभूति दर्शाई।

5) सहानुभूति के उन थोडे शब्दों ने किसको नई ताकत दी? क्यों?

काम की तनाव, यात्रियों की तानेकशी, धमकियाँ आदि से टिकट बाबू का दिल कड़ा हो गया। इसलिए सहानुभूति के उन थोडे शब्दों ने उन्हें नई ताकत दी।

6) सहानुभूति के उन थोडे शब्दों का असर टिकट बाबू ने कैसे प्रकट किया?

सहानुभूति के उन थोडे शब्दों से उनका हृदय मोम-सा हो गया और उन्होंने लेखक को ही नहीं दूसरों को भी जल्दी-जल्दी टिकट देना शुरु किया।

7) टिकट बाबू का हृदय मोम-सा हो गया, कैसे?

ज़्यादा अधिक भीड़ और काम की पिसाई के कारण टिकट बाबू बहुत परेशान थी। उसकी परेशानी देखकर लेखक ने सहानुभूति दर्शाई। सहानुभूति भरे उन थोडे शब्दों से उसका हृदय मोम-सा हो गया।

8) टिकट बाबू को नई ताकत कैसे मिली?

काम की तनाव भरे घंटों में लेखक की मीठे वाणी और व्यवहार टिकट बाबू पर नया प्रभाव पड़ा। लेखक उसे खुश करने केलिए नहीं कहे गए। सच्चे हृदय से निकले सच्चे शब्दों का टिकट बाबू ने पहचान लिया। सहानुभूति के उन थोडे शब्दों ने उन्हें नई ताकत दी।

9) सच्चे हृदय से निकलनेवाले शब्दों का क्या असर होता है?

सच्चे हृदय से निकले सच्चे शब्दों से मन को सांत्वना तो ज़रूर मिलेगा।

10) उसपर किनका तुरंत असर पड़ा, क्यों?

सच्चे हृदय से निकलनेवाली वाणी का, क्योंकि उस सच्चाई से मन में सांत्वना ज़रूर मिलेगा।

11) 'उसपर उनका तुरंत असर पड़ा'- असर क्या है?

लेखक के सहानुभूति भरे शब्दों से टिकट बाबू को थोड़ी सांत्वना मिली और उन्होंने उत्साह से जल्दी-जल्दी टिकट देकर भीड़ छाँटना शुरु किया।

12) खंड का संक्षेपण करें और शीर्षक दें।

**कुछ सांत्वना दे दें!**

लेखक के सहानुभूति भरे शब्दों से टिकट बाबू का हृदय मोम-सा हो गया। सच्चे हृदय से निकले उन थोड़ी शब्दों की सच्चाई उन्हें समझ लिया। उसको थोड़ी सांत्वना ज़रूर मिली और उसमें उसका तुरंत असर पड़ा।

## IX. एक बार मैं ..... सुख तो पहुँच सका।

1) कौन हिसाब खोलने केलिए गया?

लेखक हिसाब खोलने केलिए गया।

Do Not Copy

2) लेखक ने बैंक में क्या देखा?

लेखक ने देखा कि बैंक के क्लर्क का अक्षर दरअसल सुंदर है।

3) लेखक ने क्लर्क से क्या कहा?

लेखक ने क्लर्क से कहा, 'ज़रा पासबुक दिखाइए तो, आपकी लिपि बहुत सुंदर दिखती है।' और उसने पासबुक नज़दीक से देखकर यह भी कहा, 'ब्यूटिफुल'।

4) क्लर्क का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा, क्यों?

बैंक के रूखे आँकडों से माथापच्ची करते-करते उसके दिन बीतता है। काम के नीरस घंटों में उसे आनंद का अनुभव नहीं हुआ था। इसलिए लेखक के मन से आई शब्द सुनकर क्लर्क का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा।

5) क्लर्क का दिन कैसे बीतता है?

बैंक के रूखे आँकडों से माथापच्ची करते-करते उसके दिन बीतता है।

6) 'शायद दूसरे क्लर्क उनके इस गुण के कारण उससे जलते हों'- गुण क्या है?

बैंक के क्लर्क के हस्तलिपि बहुत अच्छे है। इस कारण से शायद दूसरे क्लर्क उनके इस गुण के कारण उससे जलते हों।

7) लेखक को क्यों प्रसन्नता महसूस हुई?

बैंक क्लर्क का दिन आँकडों के बीच व्यस्त है। काम के नीरस घंटों में उसे आनंद का अनुभव नहीं हुआ होगा। लेखक के एक-एक शब्द उसे खुशी के शिखर तक पहुँचने लायक है। लेखक को भी बड़ी प्रसन्नता महसूस हुई कि उनके थोडे शब्दों से उस क्लर्क के जीवन में थोडा आनंद पहुँच सका।

8) खंडका संक्षेपण करें और शीर्षक दें।

**<u>आनंद का अनुभव</u>**

लेखक बैंक में अपना हिसाब खोलने केलिए गया। वहाँ उन्होंने देखा कि क्लर्क की लिपि बहुत सुंदर है। उन्होंने उसकी प्रशंसा की। क्लर्क का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। लेखक को भी बड़ी प्रसन्नता हुई कि उनके शब्दों ने उस क्लर्क के जीवन में थोडी-सी सुख पहुँचा सका।

**(1) वार्तालापः सहयात्री और संभ्रांत महिला।**

| | |
|---|---|
| सहयात्री | : आप क्या कर रही है? |
| महिला | : मैं इन चीज़ों को बाहर फेंक रहा हुँ। |
| सहयात्री | : क्या है, यह? |
| महिला | : ये सुंदर फूल-फलों का बीज हैं। |
| सहयात्री | : विचित्र है। |
| महिला | : क्यों? |
| सहयात्री | : इसका लक्ष्य क्या हैं? |
| महिला | : यदि इसमें से एक-दो जड़ पकड़े तो ..... |
| सहयात्री | : तो! आप इधर से फिर आएगी? |
| महिला | : संभावना नहीं। |
| सहयात्री | : फिर आपको क्या फायदा है? |
| महिला | : मुझे नहीं, कोई दूसरे इससे फायदा ज़रूर लेगा। |
| सहयात्री | : आपकी दीर्घ-दृष्टि श्लाघनीय है। |
| महिला | : धन्यवाद। |
| सहयात्री | : ज़रूर आप इधर से आएँ और इन्हीं को फूलते-फलते देखे। |
| महिला | : उस सुदिन की प्रतीक्षा में.... |
| सहयात्री | : हाँ, ईश्वर की कृपा से आज आपको मिलने का अवसर मिला। |
| महिला | : दूसरों की भलाई करने का अवसर न छोडें। इसका फल ज़रूर हमें मिलेगा। |
| सहयात्री | : जी हाँ। |
| महिला | :ईश्वर आपकी कृपा करें। |

**(2) विज्ञापनः रक्तदान के महत्व।**

*समभाव *सहिष्णुता *मानव-प्रेम *जीवनदान

**रक्तदान जीवनदान**

**रक्तदान है जीवन पूजा**

Do Not Copy

**इससे जैसा**
**न कोई दान है दूजा**
एक बूँद रक्त से, बचेगा कई अमूल्य जीवन
रक्तदान केलिए हाथ जोड़ो -------

(3) **रकम की आत्मकथांश।**

समाज की पूँजी अमीरों के हाथ में, पूँजी का समुचित वितरण से समाज का संतुलन, ज़रुरतमंद के हाथों में पूँजी का सौगुना मूल्य।

**मैं, वही रकम**

किसी को मुझे मालुम है? जी हाँ! मैं रकम हुँ। मेरा जन्म अमेरिका में हुआ है। वही रकम, जिसे अमेरिका के प्रसिडेंट ने उस गरीब विद्यार्थी को दिया है। वहाँ से मेरी यात्रा शुरु होती है।

मैं अमेरिका के प्रसिडेंट बेंजमिन फ्रैंकलीन के यहाँ, मेज़ के अंदर सो रहे थे। अमेरिका के प्रसिडेंट के डॉलर की क्या कमी? मैं बीस डॉलर! उस मेज़ के अंदर एक कोने में पड़ा। यहाँ से बाहर निकलकर कुछ करने की इच्छा तो ज़रूर था, लेकिन!

उस दिन एक गरीब विद्यार्थी कुछ मदद माँग कर आया। प्रेसिडेंट तो दयालु था। मेज़ के अंदर परखते समय मुझे मिला। उन्होंने मुझे उस गरीब विद्यार्थी को दिया। उसकी सहायता करके मेरा कई दिन बीत गया। पढ़ा-लिखाकर अच्छे काम मिलने पर वह मुझे वापस लौटने केलिए गया था। लेकिन प्रसिडेंट मुझे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि यदि आपके पास कोई ज़रूरतमंद आए तो उसे यह दीजिए। और फिर मैं उसके पास।

मेरा जीवन उसी तरह आगे चला। एक दिन एक बूढ़ा आकर अपने बेटे की चिकित्सा की मदद माँगकर वहाँ आया। मैं ने एक आस्पताल देखा। वहाँ कितने रोगी, कितने नए-नए रोग? मेरा मन द्रवित हो गया। कुछ साल बाद एक छोटी लडकी की पढ़ाई केलिए मैं फिर एक विद्यालय में। वहाँ छोटे बच्चे और पुस्तकों के बीच.... हाँ, जीवन का जितना सुंदर समय है.....वह लडकी आज एक इंजिनीयर है। वहाँ से अनाथ बच्चों के एक आश्रम में।

आज की स्वार्थता भरी दुनिया में मनुष्य का लक्ष्य केवल धनोपार्जन तक सीमित रहा है। ऐसे लोगों के साथ रहना मैं नहीं चाहता। दुनिया में बुनियादी ज़रूरतों से वंचित अनेक लोग है। उनके पास रहने पर मेरा मूल्य सौगुना बढ़ेगा। अमीर लोग मुझे दुरुपयोग करेगा।

अब मैं बहुत खुश हुँ। अनेक गरीब लोगों की सहायता करना, इससे बढ़कर कोई अन्य भाग्य नहीं है। कोई एक ज़रूरतमंद आए तो मैं ज़रूर यहाँ से जाऊँ। ऐसी प्रतीक्षा में.....

**परीक्षा केंद्रित कुछ और प्रश्न। इनके उत्तर स्वयं लिखने का प्रयास करें:**

(1) बूढ़ा आदमी और नौजवान के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।
(2) वृद्ध संभ्रांत महिला और सहयात्री के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।
(3) आम की गुठलियाँ बोने के बाद घर जाकर वह अपना डायरी लिखता है, जिसमें उस नौजवान के बारे में भी लिखा होगा। डायरी का पन्ना कल्पना करके लिखे।
(4) बूढ़े आदमी से मिलने के बाद घर जाकर नौजवान अपने उस दिन की डायरी में इस घटना का भी जिक्र करते हैं। डायरी का पन्ना कल्पना करके लिखें।
(5) बूढ़ा आदमी से मिलने की बाद घर जाकर नौजवान पत्नी से उसके बारे में कहते है। वार्तालाप कल्पना करके लिखें।
(6) बूढा आदमी से बोया हुआ गुठलियों में से एक अब बड़े होकर यात्रियों को छाया, मीठे फल तथा अनेक पक्षियों के आवाज़ स्थान देनेवाले बड़ा वृक्ष बना। वह वृक्ष अब अपनी आत्मकथा लिखने की कोशिश करते है। वृक्ष की सहायता करें।
(7) मान ले, आप रेलगाडी में यात्रा कर रहे है। बीच में आपने देखा कि एक वृद्ध महिला ने बीच-बीच में कुछ चीज़ें बाहर फेंकते रहते हैं। पूछने पर उत्तर मिला कि 'ये सुंदर फूल-फलों के बीज है।' फिर आप दोनों वन-संरक्षण के बारे में बताया। वार्तालाप कल्पना करके लिखें।
(8) संभ्रांत महिला से मिलने के बाद घर जाकर लेखक अपनी डायरी लिखते है। डायरी कल्पना करके लिखें।
(9) अमेरिका के प्रसिड़ेट बेंजामिन फ्रैंकालिन से कुछ मदद माँगने केलिए आए गरीब विद्यार्थी को उसने बीस डॉलर दिया। प्रेसिडेंट यह बात अपने निजी सहायक से बताते है। उन दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।
(10) अमेरिका के प्रेसिडेंट से बीस डॉलर की सहायता मिलने के बाद घर जाकर वह विद्यार्थी अपने माँ से उस घटना के बारे में कहते हैं। उन दोनों के बीच का वार्तालाप लिखें।
(11) विद्यार्थी अपने उस दिन की डायरी में उस बड़ी मदद के बारें में भी जिक्र करते हैं। डायरा का वह पन्ना कल्पना करके लिखें।
(12) अमेरिका के प्रसिडेंट से अपने मुलाकात के बारे में उस विद्यार्थी अपने मित्र को पत्र लिखते है। वह पत्र लिखें।
(13) अपने पास सहायता माँगी आए विद्यार्थी को अमेरिका के प्रसिडेंट ने बीस डॉलर दिए। लेकिन उस छोटी रकम के बारे में वह भूल गया। एक दिन विद्यार्थी उसे वापस देने केलिए आता है। उन दानों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

HSS REPORTER SINCE 2015
Do Not Copy

(14) प्रसिडेंट ने विद्यार्थी से डॉलर अपने पास रखकर ज़रूरतमंदों को देने को कहा। मान लें, आप उस विद्यार्थी है, और आपके पास एक ज़रूरतमंद आते है। दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(15) उस विद्यार्थी अब एक प्रिंसिपल है। अपने आत्मकथा लिखते वक्त उस छोटी उम्र में मिली रकम की याद करती है। वह आत्मकथांश लिखें।

(16) एक दिन अमेरिका के पूर्व प्रसिडेंट बेंजामिन फ्रैकालिन की मृत्यु की खबर समाचार पत्र में देखकर वह उदासीन होती है। वह अपनी पत्नी से उस पुरानी घटना के बारे में कहते हैं। वार्तालाप तैयार करें।

(17) टिकट बाबु परेशानी से टिकट बनाते जाते थे। लेकिन उस छोटी खिड़की से न जाने कितने-कितने हाथ घुस रहे थे और न जाने कितनी आवाज़ें आ रही है। टिकट बाबू के उस दिन की डायरी कल्पना करके लिखें।

(18) घर जाकर टिकट बाबू उस दिन की परेशानी के बारे में अपनी पत्नी से कहते है। संभावित वार्तालाप लिखें।

टिकट बाबू — शोभा, एक गिलास पानी लाओ।
शोभा — (पानी देते हुए) आप क्यों इतनी परेशान है?
.....

(19) एक ग्राहक ने टिकट बाबू की इनएफीशियेंसी के बारे में स्टेशन मास्टर से शिकायत किया। इस विषय में टिकट बाबू और स्टेशन मास्टर के बीच का वार्तालाप लिखें।

स्टेशन मास्टर — अरे, एक शिकायत मिला है।
टिकट बाबू — शिकायत, कौन दिए है?
.....

(20) लेखक और टिकट बाबू के बीच में हुई वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(21) टिकट बाबू के परेशानी, लेखक अपने डायरी में जिक्र करता है। वह पन्ना लिखें।

(22) रिटायर्ड होकर टिकट बाबू अपने आत्मकथा लिखने की तैयारी में है। उसके मन में फिर एक बार उस पुरानी घटना की यादें आती है। टिकट काउंडर में संभावित घटना टिकट बाबू के आत्मकथांश के रूप में लिखें।

(23) 'एक बार मैं बैंक में अपना हिसाब खोलने केलिए गया। क्लर्क मुझसे सवाल पूछता जाता था और पास बुक में दर्ज करता जाता था।' लेखक और क्लर्क के बीच का संभावित वार्तालाप लिखें।

क्लर्क — आपका नाम क्या हैं?
मैं — अनंत गोपाल शेवड़े।
.....

(24) 'मैं ने देखा, उसके अक्षर दरअसल बहुत अच्छे हैं।'इसके बाद के लेखक और क्लर्क क्या बताया होगा? कल्पना करके लिखें।

मैं — ज़रा पास बुक दीजिए।
क्लर्क — क्यों?
.....

(25) मैं ने कुछ मन ही मन और ज़ोर से कहा, 'ब्यूटिफुल'! उसका चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। इस घटना को सूचित करते हुअ क्लर्क अपने मित्र को पत्र लिखते है। पत्र कल्पना करके लिखें।

(26) वर्षों बाद क्लर्क अपनी आत्मकथा लिखते है। जिसमें बैंक की घटना का भी जिक्र करते हैं। वह आत्मकथांश लिखें।

(27) 'आनंद की फुलझडियाँ' में वर्णित घटनाओं में आपको किस घटना बहुत पसंद हुई, क्यों?

(28) आप अपने पढ़ाई और पुस्तकों के बीच लड़ते-लड़ते दिन बिताते थे। ऐसे नीरस घंटों में शायद इस तरह के आनंद का अनुभव हुआ होगा। ऐसे एक अनुभव का वर्णन करें।

(29) 'आनंद की फुलझडियाँ' हमें क्या संदेश देता हैं?

(30) 'आनंद की फुलझडियाँ' किस विधा की रचना है?
(उपन्यास, निबंध, कहानी, लघुकथा)

(31) 'आनंद की फुलझडियाँ' के लेखक कौन है?
(यशपाल, अनंत गोपाल शेवड़े, उदय प्रकाश)

(32) बूढ़ा आदमी क्या कर रहा था?
(ज़मीन खोद रहा था, खाना खा रहा था, टहल रहा था)

(33) बूढ़ा आदमी ज़मीन खोद रहा था, तभी वहाँ से कौन गुज़रा?
(सहयात्री, वृद्ध महिला, नौजवान)

(34) वृद्ध संभ्रांत महिला क्या कर रहे थे?

Do Not Copy

(गुठलियाँ बो रहे थे, बीज फेंक रहे थे, ज़मीन खोद रहे थे)

(35) हमारा जीवन सच्चे सुख के प्रकाश से आलोकित हो उठेगा, कैसे?

(36) अपने काम से एक बार मुंबई जा रहा था, कौन?
(लेखक, बूढ़ा आदमी, वृद्ध महिला)

(37) क्लर्क का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा, क्यों?

(38) मैं ने सहानुभूति दर्शाई तो उसका मन मोम-सा हो गया और उसने केवल मुझे ही नहीं बल्कि दूसरों को भी जल्दी-जल्दी टिकट देना शुरु किया। सहानुभूति के उन थोडे से शब्दों ने उसे नई ताकत दी। सच्चे हृदय से निकलनेवाली शब्दों का असर दूसरों को सांत्वना देते हैं। इस घटना के आधार पर अपना विचार प्रकट करें।

(39) हमारा जीवन मुसीबतों से भरा पड़ा है, क्यों?

(40) 'और उसे नज़दीक से देखकर मैंने कुछ मन ही मन और ज़ोर से कहा, "ब्यूटीफुल"!' यह वाक्य किसने किस से कहा?

(41) उन थोड़े शब्दों ने उसे नई ताकत दी, यहाँ किसके बारे में जिक्र हुआ है?
(बैंक क्लर्क, टिकट बाबू, बूढ़ा आदमी)

(42) टिकट बाबू को नई ताकत कैसे मिली?

(43) सच्चे हृदय से निकलनेवाली शब्दों का क्या असर टिकट बाबू पर पड़ा?

(44) टिकट लेने केलिए तानाकशी क्यों शुरु हुई?

**पिछले प्रश्न पत्रों में आए प्रश्नः**

(1) मान लिजिए, आनंद की फुलझड़ियाँ के लेखक निबंध का लेखक आत्मकथा लिखता है। आत्मकथा में टिकट के प्रसंग का उल्लेख है। निम्नलिखित सहायक बिंदु के आधार पर वह आत्मकथांश तैयार कीजिए।
सहायक बिंदुः लेखक का मुंबई जाना - टिकट काऊंडर के पास भीड़ लगना - टिकट बाबू का परेशान होना - लेखक द्वारा टिकट बाबू के प्रति सहानुभूति प्रकट करना
सितंबर 2015 (8)

(2) निम्नलिखित सहायक बिंदू के आधार पर वार्तालाप तैयार कीजिए।
संभ्रांत महिला रेलगाड़ी से कुछ चीज़ें फेंकती जा रही थी। तब सहयात्री और संभ्रांत महिला के बीच का संभावित वार्तालाप तैयार कीजिए।
**सहायक बिंदूः** रेलगाड़ी से चीज़ें बाहर फेंकना, सहयात्री द्वारा पूछा जाना, निःस्वार्थ सेवा, दुनिया में रहने लायक
मार्च 2017 (7)

(3) निम्नलिखित सहायक बिंदुओं के आधार पर आत्मकथांश तैयार कीजिए।
आम की गुठलियाँ बोनेवाले बूढ़े आदमी से युवक मिला। युवक की आत्मकथा में इसी प्रसंग का उल्लेख है। वह आत्मकथांश कल्पना करके लिखिए।
**सहायक बिंदूः** बूढ़े द्वारा आम की गुठलियाँ बोना, जगह जगह अमराई, बुजुर्गों का महत्वपूर्ण काम, निस्वार्थ सेवा
जुलाई 2017 (8)

**मार्च 2018:**

(4) 'आनंद की फुलझडियाँ', इस निबंध का अंश पढ़िए।
'मुझे भी बड़ी प्रसन्नता हुई कि मैं उन थोड़े-से शब्दों द्वारा उस क्लर्क के जीवन में किंचितमात्र भी क्यों न हो, सुख तो पहुँचा सका।'
बैंक की घटना के आधार पर टिप्पणी लिखिए।
**सहायक बिंदूः** लेखक का हिसाब खोलने केलिए बैंक जाना, क्लर्क की हस्तलिपि की तारीफ़ करना, कलर्क का खुश हो जाना
(चार - पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए।) (4)

**सूचनाः** निम्नलिखित खण्ड पढ़िए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

एक बूढ़ा आदमी, जिसके बाल ..... कैसा सुंदर स्वभाव है।

(5) नौजवान के सवाल का बूढ़े ने क्या जवाब दिया? (2)

(6) खंड का संक्षेपण कीजिए और उचित शीर्षक दीजिए। (6)

**मार्च 2019:**

(7) रेलगाड़ी में बैठकर महिला यात्री क्या क्या फेंक रही थी?
(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखे।) (2)

(8) एक बूढ़ा आदमी ज़मीन खोद रहा था। तब एक नौजवान वहाँ से गुज़रा।

Do Not Copy

'आनंद की फुलझड़ियाँ' नामक निबंध के आधार पर दोनों के बीच का संभावित वार्तालाप तैयार कीजिए।
**सहायक बिंदु:** पूर्वजों की मनोवृत्ति, दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाना (6)

**जुलाई 2019:**

(9) "मैं ने फौरन कहा, ज़रा पासबुक दिखाइए तो, आपकी लिपि बहुत सुंदर दिखती है।" उस क्लर्क का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। इस प्रसंग के बारे में बैंक का क्लर्क अपनी डायरी में लिखता है। उस दिन की डायरी तैयार करें। (6)
**सहायक बिंदु:** बैंक के रूखे आँकड़ों से माथा-पच्ची, काम के नीरस घंटे, अपनी लिपि की प्रशंसा सुनना, आनंद का अनुभव

**मार्च 2020:**

(10) 'आनंद की फुलझडियाँ' किस विधा की है?
(संपादकीय, निबंध, नाट्यरूपांतर) (1)

(11) महिला यात्री रेलगाड़ी से क्या फेंक रही थी?
(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखें।) (2)

(12) देखो, वह अमराई मेरे दादा ने लगाई दी तो उसके फल मैंने खाए - बूढ़े आदमी ने ऐसा क्यों कहा?
(चार या पाँच वाक्यों में उत्तर लिखें।) (4)

(13) वृद्ध महिला रेलगाड़ी से कुछ चीज़ें फेंकती जा रही थी। तब सहयात्री और वृद्ध महिला के बीच का संभावित वार्तालाप तैयार करें। (6)

(14) 'आप इसे अपने ही पास रखिए और जब आपके पास कोई ऐसा ही ज़रूरतमंद आए तो उसे यह दे दीजिए। बेंजमिन फ्रैंकलीन से मदद माँगनेवाला लड़का अपने मित्र को पत्र लिखता है। वह पत्र तैयार करें।
बेंजमिन फ्रैंकलीन से मुलाकात, पैसा माँगना, बेंजमिन फ्रैंकलीन का वचन (6)

**सूचना:** गद्यांश पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें।

एक बार मैं बैंक में अपने ..... आनंद का अनुभव नहीं हुआ था।

(15) लेखक बैंक में किसके लिए गया? (1)

(16) खंड का संक्षेपण करें और शीर्षक दें। (6)

**दिसंबर 2020:**

(17) 'आनंद की फुलझडियाँ' किस विधा की रचना है?
(निबंध, कविता, एकांकी) (1)

(18) 'आप इसे अपने ही पास रखिए और जब आपके पास कोई ऐसा ही ज़रूरतमंद आए तो उसे यह दे दीजिए। बेंजमिन फ्रैंकलीन से मदद माँगनेवाला लड़का अपने मित्र से बातचीत करता है। वह बातचीत तैयार करें।
बेंजमिन फ्रैंकलीन से मुलाकात, पैसा माँगना, बेंजमिन फ्रैंकलीन का वचन (6)

**सूचना:** गद्यांश पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें।

एक वृद्ध संभ्रांत महिला ..... संधि का उपयोग कर लूँ।

(19) संभ्रांत महिला रेलगाड़ी में बैठकर क्या कर रही थी? (1)

(20) खंड का संक्षेपण करें और शीर्षक दें। (6)

Kite Victers Class 18: https://youtu.be/hIZq9UYEJVA
Kite Victers Class 19: https://youtu.be/hIZq9UYEJVA
Kite Victers Class 20: https://youtu.be/aE1OxHkNMI8
Kite Victers Class 21: https://youtu.be/Ud5WJCxskLc

Do Not Copy

## पत्थर की बेंच

## चंद्रकांत देवताले

श्री चंद्रकांत देवताले पुरानी पीढ़ी के अग्रणी कवि है। उन्होंने अपने कविताओं से वर्तमान सामाज और परिवेश की विद्रूपताओं पर प्रहार करने का सफल प्रयास किया है। वर्तमान पीढ़ी की पुकार को देवताले ने वाणी देते हुए देवताले जी की कविता पत्थर की बेंच....

**एक नज़र**

| पत्थर की बेंच पर बैठनेवाले | वे क्या कर रहे हैं? | उनकी संवेदनाएँ क्या है? |
|---|---|---|
| रोता हुआ बच्चा | बिस्कुट खा रहे थे। | आँसू |
| थका युवक | सपनों को सहला रहा हैं। | थकान |
| रिटायर्ड बूढ़ा | दोपहर में सो रहा है। | विश्राम |
| वे दोनों (प्रेमी-प्रेमिका) | जिंदगी के सपने बुन रहे है। | प्रेम |

**सारांश:**

पुरानी पीढ़ी के अग्रणी कवि एवं समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर श्री चंद्रकांत देवताले की छोटी कविता है पत्थर की बेंच। इस कविता वर्तमान पीढ़ी की पुकार को वाणी देने ता सफल प्रयास किया गया है।

एक पार्क में पत्थर से बनाया हुआ एक बेंच खड़ा है। उस पार्क में सभी पीढ़ियों के लोग आते-जाते हैं।

बेंच पर बैठकर एक बच्चा रोते हुए बिस्कुट खा रहे है। एक थका युवक वहाँ बैठे है, वह अपने कुचले हुए स्वप्नों को सहला रहे हैं। एक रिटायर्ड बूढ़ा, दोपहर में वहाँ बैठकर हाथों से आँखें ढ़ाँपकर सो रहे हैं। दो व्यक्तियाँ, चाहे प्रेमी-प्रेमिका हो या पति-पत्नी, ज़िंदगी के सपने बुना रहे है।

वर्षों पुराना बेंच पर आँसू, थकान, विश्राम और प्रेम की स्मृतियाँ अंकित है।

बच्चे से बूढ़े तक, सभी पीढ़ी के लोग अपने सुख-दुःख में इस बेंच का सहारा लिया है। वर्षों पुरानी यादें उस पर अंकित है। कवि की आशंका यह हैं कि इस केलिए भी एक दिन हत्याओं की परंपरा शुरु हो सकता है। स्वार्थता से मानव इसे उखाड़ कर ले जाए या तोड़ दें। यह बेंच कब बनी, किसने बनवाई, इसके इतिहास क्या है, कौन इस पर पहली बार बैठा होगा आदि बातें अब भी अज्ञात है।

इसमें कवि लोगों को आश्रय देनेवाले एक पत्थर की बेंच का चित्र खींचता हैं। सार्वजनिक पार्क में स्थित यह बेंच वहाँ आनेवाले सभी लोगों का आश्रय रहा। मन के भार को हल्का करके थोड़ा सुख-शांती पाने केलिए ही लोग ऐसे सार्वजनिक स्थानों पर आते हैं।

**कवितांश पढ़ें और उत्तर लिखें:**

**I. पत्थर की बेंच .....की स्मृतियाँ।**

1) समानार्थी शब्द कविता से चुनकर लिखें।
   काटना - कुतरना  ढ़कना - ढ़ाँपना  अश्रु - आँसू
2) पत्थर की बेंच पर सबसे पहले कौन बैठा? वह क्या कर रहा था?
   पत्थर की बेंच पर सबसे पहले एक बच्चा बैठा। वह रो रहा था। वह बिस्कुट कुतरते-कतरते चुप हो रहा है।
3) थका युवक क्या कर रहा है?
   थका युवक अपने कुचले हुए सपनों को सहला रहा है।
4) रिटयार्ड बूढ़ा क्या कर रहा है?
   रिटयार्ड बूढ़ा दोपहर में अपने हाथों से आँखें ढ़ाँपकर सो रहा है। वह थोडा आराम केलिए वहाँ बैठा है।
5) पत्थर की बेंच पर बैठकर वे दोनों क्या कर रहे हैं?
   पत्थर की बेंच पर बैठकर वे दोनों ज़िंदगी के सपने बुन रहे हैं।
6) वे दोनों कौन-कौन होगा?
   वे दोनों प्रेमी-प्रेमिका होगा या पति-पत्नी।
7) पत्थर की बेंच पर क्या-क्या अंकित है?
   पत्थर की बेंच पर आँसु, थकान, आराम और प्रेम की स्मृतियाँ अंकित है।
8) पत्थर की बेंच पर कौन-कौन बैठे है? उनकी संवेदनाएँ क्या-क्या हैं?

Do Not Copy

पत्थर की बेंच पर एक रोता हुआ बच्चा बिस्कुट कुतरता हुआ बैठता है। एक युवक थकान को मिटाने केलिए, अपने कुचले हुए सपनों को सहलाते हुए बैठता है। एक रिटायर्ड बूठा दोपहर में अपने हाथों से आखें ढाँपकर, थोडा आराम केलिए बैठा है। दो व्यक्ति, चाहे पति-पत्नी हो या प्रेमी-प्रेमिका, ज़िंदगी के सपनें बुनाकर बैठी है।

उस पत्थर की बेंच पर पीढ़ियों की सुथ-दुःख, प्रेम-अवसाद, विश्राम-उत्साह आदि की संवेदनशील छवियाँ और स्मृतियाँ अंकित है।

9) सबों ने पत्थर की बेंच का सहारा लिया, क्यों?

पार्क सामाजिकता का संगम स्थान है। वहाँ अनेक लोग आते-जाते है। पत्थर की बेंच पर बैठने से लोगों को थोडा आश्वास मिलता है। थकान दूर हो जाते है, आराम भी मिलते हैं। खुली जगह पर पड़ी पत्थर की बेंच पर बैठकर शुद्ध हवा लगने से मन का बोझ दूर हो जाते है। इसलिए सबों ने पत्थर की बेंच का सहारा लिया।

10) कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

पुरानी पीढ़ी के अग्रणी कवि श्री चंद्रकांत देवताले की प्रसिद्ध कविता है 'पत्थर की बेंच'। इनकी कविताओं में एक ओर मानवीय संवेदनाओं की आवाज़ है तो दूसरी ओर वर्तमान सामाजिक विद्रूपताओं पर कठोर प्रहार भी किया है। प्रस्तुत कविता में इन्होंने वर्तमान पीढ़ी की पुकार को वाणी दी है।

'पत्थर की बेंच' कविता में एक पार्क की वर्षों पुरानी बेंच का चित्रण हुआ है। उस बेंच पर अनेक लोग, विभिन्न भावनाओं वाले लोग आकर बैठते है। इन में बच्चे, युवा, बूढ़ा आदि है।

बेंच पर एक रोता हुआ बच्चा बिस्कुट कुतरते हुए बैठती है। धीरे-धीरे उसका रोना बंद हो गया है। एक थका युवक अपनी थकावट को दूर करने केलिए वहाँ बैठी है। वह अपने कुचले हुए सपनों को सहला रहा है। एक रिटायर्ड बूढ़ा दोपहर में इस बेंच पर बैठकर अपने हाथों से आँखें ढाँपकर सो रहे है। वहाँ दो व्यक्ति, चाहे पति-पत्नी हो या प्रेमी-प्रेमिका, ज़िंदगी के सपने बुन रहे है।

उस बेंच पर बैठकर सब व्यक्तियों को ज़रा आश्वास भी मिलता है।

**II. इस पत्थर की बेंच .....की बेंच पर।**

(1) समानार्थी शब्द कविता से चुनकर लिखें।

परंपरा - सिलसिला बैठा - आसीन

(2) पत्थर की बेंच केलिए क्या शुरु हो सकता है?

पत्थर की बेंच केलिए हत्याओं की परंपरा शुरु हो सकता है।

(3) 'शुरु हो सकता है किसी दिन हत्याओं का सिलसिला' - कैसे?

पार्क जैसे सार्वजनिक जगहों में जो पत्थर की बेंच है, वह सामाजिकता का संगम स्थान है। वहाँ कई लोग आते-बैठते है। वहाँ बैठकर उसको ज़रा आश्वास भी मिला होगा। लेकिन ऐसे सार्वजनिक स्थान अब कम है। लोग कभी उसे उखाड़ ले जाता है या कभी तोड़ भी जा सकता है। वास्तव में यह इंसानियत का प्रतीक है।

(4) पत्थर की बेंच किसका प्रतीक हैं?

इंसानियत और सामाजिकता का प्रतीक है।

(5) 'पत्थर की बेंच' का कवि क्यों आशंकित है?

पत्थर की बेंच वर्षों पुराना है। बच्चा, युवा, बूढ़ा आदि सबके आश्रयदाता है। पीढ़ियों का सुख-दुख, प्रेम-अवसाद, विश्राम-उत्साह आदि इसमें अंकित है। इसे कब बनी, किससे बनवाई, इसके इतिहास क्या है आदि बातें अब भी अज्ञात है।

अब कवि इसलिए आशंकित है कि विकराल समय में स्वार्थी मानव इस बेंच केलिए भी लडाई शुरु हो सकते है। इसे उखाड ले सकते है या तोडा जा सकता है। इस बेंच के अस्तित्व पर कवि आशंकित है।

(6) पत्थर की बेंच इंसानियत का प्रतीक है, कैसे?

पत्थर की बेंच पर अनेक पीढ़ियों के लोग आसीन हुआ होगा। वहाँ बैठकर उसको ज़रा आश्वास भी मिला होगा। उस पर पीढ़ियों की सुथ-दुःख, प्रेम-अवसाद, विश्राम-उत्साह आदि की संवेदनशील छवियाँ और स्मृतियाँ अंकित है। ऐसा एक बेंच इंसानियत का प्रतीक ज़रूर होगा।

**'पत्थर की बेंच' कविता पर आस्वादन टिप्पणी।**

Do Not Copy

पुरानी पीढ़ी के अग्रणी कवि श्री चंद्रकांत देवताले की प्रसिद्ध कविता है 'पत्थर की बेंच'। इनकी कविताओं में एक ओर मानवीय संवेदनाओं की आवाज़ है तो दूसरी ओर वर्तमान सामाजिक विद्रूपताओं पर कठोर प्रहार भी किया है। प्रस्तुत कविता में इन्होंने वर्तमान पीढ़ी की पुकार को वाणी दी है।

'पत्थर की बेंच' कविता में एक पार्क की वर्षों पुरानी बेंच का चित्रण हुआ है। उस बेंच पर अनेक लोग, विभिन्न भावनाओं वाले लोग आकर बैठते है। इन में बच्चे, युवा, बूढ़ा आदि है।

बेंच पर एक रोता हुआ बच्चा बिस्कुट कुतरते हुए बैठती है। धीरे-धीरे उसका रोना बंद हो गया है। एक थका युवक अपनी थकावट को दूर करने केलिए वहाँ बैठी है। वह अपने कुचले हुए सपनों को सहला रहा है। एक रिटायर्ड बूढ़ा दोपहर में इस बेंच पर बैठकर अपने हाथों से आँखें ढाँपकर सो रहे है। वहाँ दो व्यक्ति, चाहे पति-पत्नी हो या प्रेमी-प्रेमिका, ज़िंदगी के सपने बुन रहे है। जिसमें बैठकर सब व्यक्तियों को ज़रा आश्वास भी मिलता है। कवि कहते है कि वह पत्थर की बेंच वर्षों पुराना है, जो सुख-दुख, प्रेम, थकान-आराम आदि का साक्षी है।

यह बेंच कब बनी, किसने बनी आदि बातें अब भी अज्ञात है। लेकिन समाज के सभी पीढ़ी के लोगों के सुख-दुखों में आश्रय और आश्वास देते हुए बेंच वहाँ खड़ा है।

लेकिन अब कवि को इस बेंच की अस्तित्व पर आशंका है। पुरानी मान्यताएँ मिट जानेवाले आज के युग में कभी इसे भी उखाड़ दिया जाएगा। बिना किसी कारण से लड़ाई चले जानेवाले युग है अब हमारे सामने। इस पत्थर की बेंच केलिए भी एक दिन लडाई शुरु हो सकता है। इसे भी उखाड़कर यहाँ से ले जाने की या तोड़ने के दिन सामने है। उनको भी पता नहीं होगा कि कौन इस पर पहली बार बैठा होगा।

इस कविता में कवि एक पत्थर की वर्णन किया है, जिसे अनेक लोगों ने सहारा लिया है। लोगों को सुख एवं शांति प्रदान करनेवाले ऐसे पार्क और पत्थर की बेंच सामाजिकता का संगम स्थान है। लेकिन आज के विकराल समय में स्वार्थी मानव ने स्वार्थता के कारण ऐसी सामाजिक जगहों पर भी हमला कर रहे है। सरल भाषा में कवि ने अपनी कविता में यही चित्रण किया है।

विषयः **समाज-निर्माण में सार्वजनिक जगहों का योगदान**

सामाजिकता का संगम स्थान - दूसरों के सुख-दुःख पर हमदर्दी - घटती सार्वजनिक स्थानों - स्वार्थ की जीत - प्रासंगिकता

**घटती सार्वजनिक जगहः घटती सामाजिकता**

मनुष्य एक सामाजिक जीव है। समाज से अलग होकर उसका कोई अस्तित्व नहीं है। समाज में ही वह पलता है, बढ़ता है। सुख-दुख से भरे इस जीवन में कई लोगों से उसकी मुलाकात होती है। लोगों के आपसी संबंध अटूट रहने केलिए सार्वजनिक स्थानों की ज़रूरत है।

सार्वजनिक पार्क, समुद्र-तट, मैदान आदि सार्वजनिक स्थानों में विभिन्न धर्म, आचार-विचार के लोग आते-जाते है। ऐसे संगम स्थानों में भिन्नताएँ भूलकर लोग आपस में मिलजुलकर रहते है। ऐसे मुलाकात से आपसी रिश्ता, सहयोग, समझदारी, प्रेम आदि बढ़ते है। एक दूसरे से परिचित होने से हम में उसके प्रति हमदर्दी जताते है और भाईचारा, सहानुभूति, प्यार, सहयोग, अपनापन आदि मानवीय मूल्य भी पैदा होने लगती है।

लेकिन आज जीवन की सुख-सुविधाएँ इतनी बढ़ गई है कि मनुष्य अधिक स्वार्थी और आत्मकेंद्रित बना है। आपसी संबंध का अभाव भी है। आज समाज में पार्क जैसे संगम स्थानों की संख्या कम होती जा रही है। साथ ही मनुष्य-मनुष्य को एक साथ मिलने-जुलने के अवसर भी। औद्योगीकरण के इस ज़माने में स्वार्थता से प्रेरित होकर मानव ऐसे सार्वजनिक स्थानों पर हस्ताक्षेप करते है। इससे प्राकृतिक संतुलन भी बिगड जा रहे है। आज ऐसे स्थानों पर बडे-बडे मकान, फ्लैट, षापिंग मॉल, रिसोर्ट आदि के निर्माण से सामाजिक मी घटती जा रहे है।

सार्वजनिक जगह सामाजिकता का संगम स्थान है। स्वार्थता भरी इस समाज में लोगों के आपसी मिलन केलिए ऐसे महत्वपूर्ण स्थानों की ज़रूरत है। घटती सार्वजनिक स्थानों आज के ज़माने की बड़ी चुनौती है, और आगामी पीढ़ी केलिए बहुत बड़ा नष्ट भी। हमारे आगामी पीढ़ी केलिए ज़रा कुछ देने की इच्छा है तो ऐसे संगम स्थानों का संरक्षण करें, इससे उन्हें ज़्यादा सुख-शांती मिले। सार्वजनिक स्थानों का संरक्षण समाज की माँग है, साथ ही आगामी पीढ़ी केलिए महत्वपूर्ण देन भी, जिससे हमें एक निःस्वार्थ पीढ़ी की सृष्टि करें। एक राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य केलिए आगामी पीढ़ी को सही दिशाबोध और रास्ता दिखाना हमारा कर्तव्य है। इस केलिए प्रयत्न करें तो हमारे देश का भविष्य सुरक्षित हो।

## पिछले वर्षों की परीक्षाओं के प्रश्नः

**मार्च 2017:**

**सूचनाः** निम्नलिखित कवितांश पढ़ें और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें।

इस पत्थर की बेंच केलिए भी ..... बेंच पर।

(1) इस कवितांश के कवि कौन है? (1)

(2) कविता के 'आसीन' शब्द का समानार्थी शब्द कोष्ठक से चुनकर लिखिए।
(खड़ा, बैठा, सुना) (1)

Do Not Copy

(3) कवि को किसका संदेह है? (1)

(4) कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखिए। (6)

**मार्च 2018:**

(5) ‘पत्थर की बेंच
जिसपर अंकित है आँसू, थकान
विश्राम और प्रेम की स्मृतियाँ’
पत्थर की बेंच पर क्या अंकित है?
(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखें।) (2)

**मार्च 2019:**

(6) ‘जिसपर अंकित है आँसू, थकान, विश्राम और प्रेम की स्मृतियाँ’ – पत्थर की बेंच पर क्या-क्या अंकित है? क्यों?
(चार या पाँच वाक्यों में उत्तर लिखें।) (4)

**जुलाई 2019:**

(7) ‘जिसपर अंकित है आँसू, थकान, विश्राम और प्रेम की स्मृतियाँ’ - पत्थर की बेंच पर क्या-क्या अंकित है?
(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखें।) (2)

(8) जीवन-वृत्त पढ़े।

**जीवन-वृत्त**

| | |
|---|---|
| नाम | : चंद्रकांत देवताले |
| जन्म | : 7 नवंबर, 1936 |
| जन्म स्थान | : बैतूल जिला, मध्यप्रदेश |
| प्रमुख रचनाएँ | : हड्डियों में छिपा ज्वर, दीवारों पर खून से, रोशनी के मैदान की तरफ |
| पुरस्कार | : मुक्तिबोध फैलोशिप, माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार, सृजन भारती सम्मान, कविता समय पुरस्कार |
| विशेषताएँ | : समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर<br>नूतन विचारधारा के वाहक |

इस जीवन-वृत्त के आधार पर चंद्रकांत देवताले के बारे में एक अनुच्छेद लिखें।
(चार या पाँच वाक्यों में उत्तर लिखें।) (4)

**मार्च 2020:**

(9) पत्थर की बेंच पर कौन-कौन हैं?
(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखें।) (2)

**दिसंबर 2020:**

(10) ‘पत्थर की बेंच’ कविता किसकी है?
(यशपाल, रामधारी सिंह ‘दिनकर’, चंद्रकांत देवताले) (1)

(11) बच्चा बिस्कुट कुतरते हुए कहाँ बैठता है?
(घर में, पत्थर की बेंच पर, स्कूल में) (1)

(12) पत्थर की बेंच पर क्या-क्या अंकित है?
(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखें।) (2)

Kite Victers Class 22: https://youtu.be/ZEEd6SJ_4y0
Kite Victers Class 23: https://youtu.be/wpgFiDhZNxY

Do Not Copy
SSLC REPORTER SINCE 2015

## जीवन-वृत्त (Profile)

जीवन-वृत्त किसी जाने-माने व्यक्ति,लेखक या साहित्यकार के जीवन का संक्षिप्त विवरण है। यह छोटी अनुच्छेद में लिखते है। यह जीवनी (Biography) से बिलकुल भिन्न है। किसी भी व्यक्ति के जन्म और जीवन का वर्णन संक्षिप्त में करें तो उसे जीवनी (Brief Life history/Profile) कहते हैं। लेखक के बारे में प्रश्न-पत्र में दी गई बातें ध्यान से पढ़कर जीवन-वृत्त लिखने की कोशिश करें। 6 या 8 अंक का प्रश्न होगा।

जीवन वृत्त के आधार पर लेखक के बारे में अनुच्छेद लिखते समय इन्हीं बातें ध्यान में रखें:

- कवि/लेखक/व्यक्ति के बारे में दिए विवरण ध्यान से पढ़े।
- सरल भाषा में एक अनुच्छेद में लिखने का प्रयास करें।

**आगे यह नमूने देखें:**

**जीवन-वृत्त पढ़ें और अनुच्छेद लिखें:**

| | |
|---|---|
| नाम | : जयशंकर प्रसाद |
| जन्म | : 30 जनवरी 1889 |
| जन्मस्थान | : वारणासी (उत्तर प्रदेश) |
| प्रमुख रचनाएँ | : झरना, आँसू, कामायनी, चंद्रगुप्त |
| विशेषताएँ | : साहित्य की विभिन्न विधाओं में सृजन |
| देन | :काव्य में अतिशय कल्पना का संचार |
| पुरस्कार | : मंगलाप्रसाद पारितोषिक |
| मृत्यु | : 14 जनवरी 1937 |

**उत्तर कैसे लिखें:**

**श्री ..... (जयशंकर प्रसाद) हिंदी के प्रतिभाशाली लेखक/रचनाकार थे। आपका जन्म ..... (30 जनवरी 1889) को हुआ। आपका जन्म स्थान ..... (उत्तर प्रदेश) के ..... (वारणासी) हैं। ..... (झरना), .....(आँसू), .....(कामायनी) और ..... (चंद्रगुप्त) आपकी प्रमुख रचनाएँ है। ..... (साहित्य की विभिन्न विधाओं में सृजन) आपके खास विशेषता है। ..... (काव्य में अतिशय कल्पना का संचार) में आपका महत्वपूर्ण देन है। आप ..... (मंगलाप्रसाद पारितोषिक) से पुरस्कृत है। ..... (14 जनवरी 1937)को आपकी मृत्यु हुई थी।**

**(Q) निम्न जीवन-वृत्त के आधार पर लेखक के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए।**

(1) **सुकेश साहनी:**

| | |
|---|---|
| नाम | : सुकेश साहनी |
| जन्म और जन्मस्थान | : 5 सितंबर 1956, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) |
| प्रमुख रचनाएँ | : डरे हुए लोग, ठंडी रजाई, मैम्मा और अन्य कहानियाँ |
| विशेषताएँ | : हिंदी लघुकथा क्षेत्र में सशक्त हस्ताक्षर |

Do Not Copy

| | |
|---|---|
| | टूटते सामाजिक मूल्यों पर गहरा आस्था<br>ग्राम संस्कति का भोला-भाला चित्रण |
| पुरस्कार | : डॉ परमेश्वर गोयल लघुकथा पुरस्कार<br>माता शरबती देवी पुरस्कार |

**सुकेश साहनी के बारे में अनुच्छेद:**

**सुकेश साहनी**

हिंदी लघुकथा क्षेत्र में सशक्त हस्ताक्षर श्री सुकेश साहनी का जन्म 5 सितंबर 1956 को उत्तर प्रदेश के लखनऊ में हुआ था। डरे हुए लोग, ठंडी रजाई, मैम्मा और अन्य कहानियाँ आदि उनके प्रमुख रचनाएँ है। टूटते सामाजिक मूल्यों पर गहरा आस्था और ग्राम संस्कति का भोला-भाला चित्रण आदि उनके काव्य की खास विशेषताएँ है। डॉ परमेश्वर गोयल लघुकथा पुरस्कार, माता शरबती देवी पुरस्कार आदि से वे सम्मानित भी थे।

(2) **चित्रा मुद्गल:**

| | |
|---|---|
| नाम | : चित्रा मुदगल |
| जन्म और जन्मस्थान | : 10 दिसंबर 1944, चेन्नै (तमिलनाडू) |
| प्रमुख रचनाएँ | : गिलिगडू, आवाँ, एक ज़मीन अपनी (उपन्यास)<br>भूख, लपटें (कहानी-संग्रह)<br>पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी (नाट्यरूपांतर) |
| विशेषताएँ | : बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा<br>स्त्री-पुरुष समभावना पर बल<br>नारी-उत्पीडन के प्रति विरोध |
| पुरस्कार | : इंदुशर्मा कथा सम्मान, व्यास सम्मान |
| देन | : उपेक्षित एवं उत्पीडित भारतीय नारी केलिए समर्पित साहित्य |

**चित्रा मुद्गल के बारे में अनुच्छेद:**

**चित्रा मुद्गल**

बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा श्रीमती चित्रा मुद्गल का जन्म 10 दिसंबर 1944 को तमिलनाडू के चेन्नै में हुआ था। गिलिगडू, आवाँ, एक ज़मीन अपनी आदि उनके प्रमुख उपन्यास है। उन्होंने भूख, लपटें जैसे कहानी-संग्रह, पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी जैसे नाट्यरूपांतर आदि अनेक रचनाओं का सृजन भी किए है। स्त्री-पुरुष समभावना पर बल और नारी-उत्पीडन के प्रति विरोध आदि उनके रचनाओं की विशेषता है। उपेक्षित एवं उत्पीडित भारतीय नारी केलिए समर्पित साहित्य उनकी देन है। इंदुशर्मा कथा सम्मान, व्यास सम्मान आदि से वे सम्मानित थे।

(3) **कबीरदास:**

| | |
|---|---|
| नाम | : कबीरदास |
| जन्म और जन्मस्थान | : 1398 ईं (काशी) |
| प्रमुख रचनाएँ | : बीजक -साखी, सबद, रमैनी |
| विशेषताएँ | : भक्तिकाल के निर्गुण ज्ञानाश्रयी कवि<br>एकेश्वरवादी, मानवता के प्रवर्तक, क्रांतिकारी भक्त कवि |
| देन | : जाति-पाँति, ऊँच-नीच तथा सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करके धार्मिक भेदभाव को दूर करने का आह्वान |
| मृत्यु | :1518 ईं (मगहर) |

Do Not Copy

**कबीरदास के बारे में अनुच्छेद:**

**कबीरदास**

भक्तिकाल के निर्गुण ज्ञानाश्रयी कवि श्री कबीरदास का जन्म 1398 ईं को काशी में हुआ। वे हिंदी साहित्य के क्रांतिकारी भक्त कवि थे। कबीर की रचना, 'बीजक', साखी, सबद, रमैनी नामक तीन भागों में विभक्त है। मानवता के प्रवर्तक कबीरदास एकेश्वरवादी थे। उन्होंने अपनी रचनाएँ द्वारा जाति-पाँति, ऊँच-नीच तथा सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करके धार्मिक भेदभाव को दूर करने का आह्वान दिया है। 1518 ईं को मगहर में उनकी मृत्यु हुई।

(4) **अनंत गोपाल शेवड़े:**

| | |
|---|---|
| नाम | : अनंत गोपाल शेवड़े |
| जन्म | : 1911 ईं |
| प्रमुख रचनाएँ | : निशागीत, ज्वालामुखी, मंगला, कोरे कागज़ |
| विशेषताएँ | : अहिंदी भाषी हिंदी लेखक<br>प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के मुख्य सचिव |
| देन | : हिंदी भाषा को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित करने में योगदान |
| मृत्यु | : 1979 ईं |

**अनंत गोपाल शेवड़े के बारे में अनुच्छेद:**

**अनंत गोपाल शेवड़े**

अहिंदी भाषी हिंदी लेखक श्री अनंत गोपाल शेवड़े का जन्म 1911 ईं में हुआ था। निशागीत, ज्वालामुखी, मंगला, कोरे कागज़ आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ है। उन्होंने प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के मुख्य सचिव रहा। हिंदी भाषा को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित करने में उनका योगदान महत्वपूर्ण है। 1979 ईं में उनका निधन हुआ।

(5) **चंद्रकांत देवताले:**

| | |
|---|---|
| नाम | : चंद्रकांत देवताले |
| जन्म | : 7 नवंबर 1936 |
| जन्मस्थान | : बैतूल जिला, मध्यप्रदेश |
| प्रमुख रचनाएँ | : दीवारों पर खून से, पत्थर फेंक रहा हुँ, उसके सपने |
| विशेषताएँ | : समकालीन कविता की सशक्त हस्ताक्षर<br>पुरानी पीढ़ी के अग्रणी कवि<br>नूतन विचारधारा के वाहक |
| देन | : कविता में पीढ़ियों का सुख-दुख, प्रेम-विरह की संवेदनशील स्मृतियाँ और भविष्य की आशंकाओं का अंकन |

**चंद्रकांत देवताले के बारे में अनुच्छेद:**

**चंद्रकांत देवताले**

समकालीन कविता की सशक्त हस्ताक्षर श्री चंद्रकांत देवताले का जन्म 7 नवंबर 1936 को मध्यप्रदेश के बैतूल

Do Not Copy

जिले में हुआ था। उन्होंने पुरानी पीढ़ी के अग्रणी कवि एवं नूतन विचारधारा के वाहक थे। दीवारों पर खून से, पत्थर फेंक रहा हुँ, उसके सपने आदि उनके प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। कविता में पीढ़ियों का सुख-दुख, प्रेम-विरह की संवेदनशील स्मृतियाँ और भविष्य की आशंकाओं का अंकन आदि हिंदी साहित्य केलिए उवका देन है।

## विज्ञापन (Advertisement)

नई वस्तुएँ, सेवाएँ आदि का सूचन देकर लोगों का ध्यान आकृष्ट करना विज्ञापन का लक्ष्य है। ग्राहकों पर उसके प्रति रुचि एवं विश्वास उत्पन्न करके उसे खरीदने या अपनाने की प्रेरणा देती है।

- संक्षिप्त और आकर्षक हो।
- विज्ञापित वस्तु/सेवा की खूबियों का जिक्र हो।
- चित्र, शीर्षक आदि से आकर्षक बना दें।
- सरल, प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग हो।

आगे हमें एक उदाहरण देखें....

एक नया घर बेचना है, इसकी बिक्री के लिए सहायक एक विज्ञापन तैयार करें।

- शहर के पास, पक्का मकान, आकर्षक निर्माण, बैंक लॉन की सुविधा

आपका सपनों का घर — 4 बी एच के (2 मंज़िलों में) 1800 वर्ग फुट

**बिक्री केलिए**

- शहर के पास (बाज़ार, बस अड्डा तथा रेलवे स्टेशन के निकट)
- लॉन सुविधा
- 24 घंटे पानी तथा बिजली सुविधा
- कार पार्किंग सुविधा
- स्वच्छ वातावरण

कीमतः सिर्फ 50 लाख (परक्राम्य)

आइए, अपनाइए..... आपका सपनों का वह घर

पूछताछ केलिएः 994.....45

(परक्राम्य – Negotiable, वर्ग फुट – Sq ft . पूछताछ केलिए – For enquiry)

Do Not Copy

## पोस्टर

पोस्टर क्या है? पोस्टर एक मीड़िया प्रकाशन है, जिसमें चित्र, लेखन या दोनों का संयोजन होता है, जो जनता को किसी संदेश के बारे में जानकारी प्रदान करने की लक्ष्य में बनाते है।

- आकर्षक हो।
- कम शब्दों का प्रयोग करना है, भाषा स्पष्ट एवं सरल होना है।
- कोई पंक्ति ऐसी लिखनी चाहिए जो 'स्लोगन' की तरह हो और पढ़नेवालों का ध्यान आकर्षित करके याद रह जानेवाली हो।
- चित्रों की सहायता से अधिक आकर्षक बनें।
- यदि आवश्यक हो तो दिनांक, स्थान, समय आदि का जिक्र हो।

प्रश्नः

कोरोना वायरस का दूसरी लहर काफी खतरनाक है। इस विषय के बारे में जनता को चेतावनी देने केलिए आपके स्कूल के एन एस एस की ओर से पोस्टरों बनाकर स्कूल के आसपास की जगहों को चिपकाने की योजना में है। उसके लिए एक आकर्षक पोस्टर तैयार करें।

- नोवल कोरोनाः लक्षण एवं बचाव के उपाय
- क्या करें? क्या न करें?
- व्यक्तिगत स्वच्छता, मास्क-सैनिटैस-आपसी दूरी

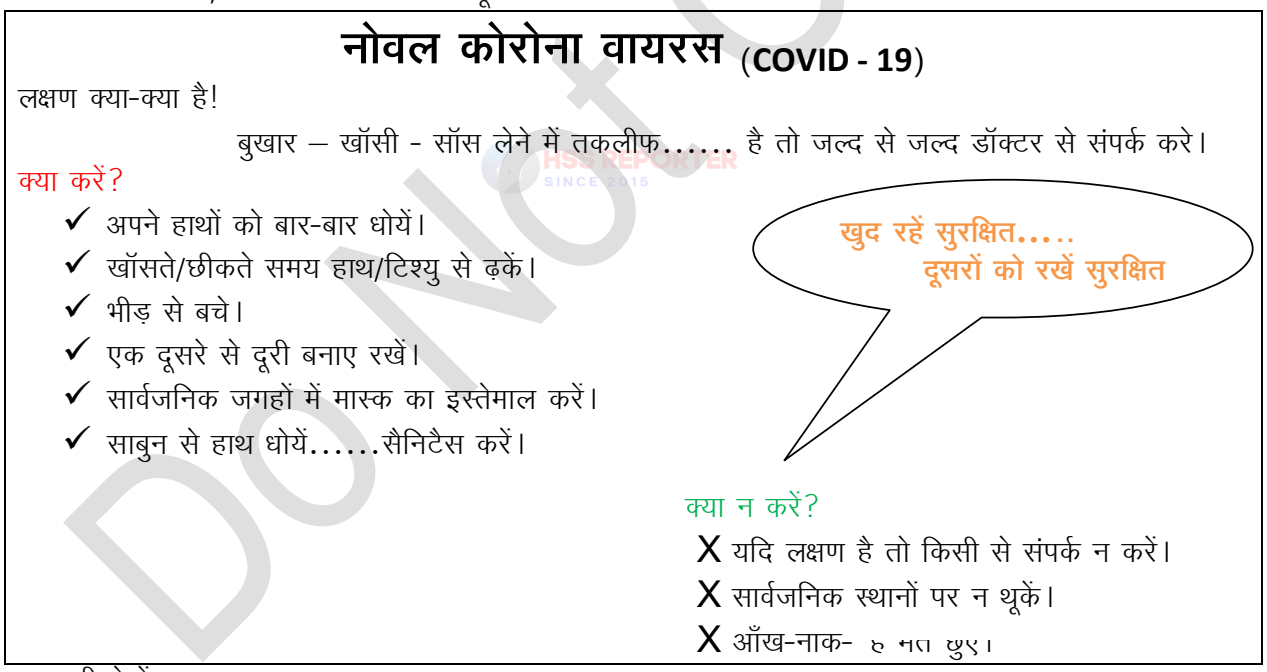


यह उदहरण भी देखेंः

प्रश्नः

'संपूर्ण कक्षा पुस्तकालय' – केरल की छात्रों केलिए शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों में आयोजित नया कार्यक्रम।

- सभी कक्षाओं में एक पुस्तकालय
- रचनात्मक पढ़ना पूरा पढ़ना
- शिक्षा विभाग और सामान्य शिक्षा संरक्षण अभियान का संयुक्त कार्यक्रम।

Do Not Copy

अपने स्कूल में इसका उद्घाटन शिक्षा मंत्री करनेवाला है। इसके लिए एक आकर्षक पोस्टर तैयार करें।

सरकारी उच्च माध्यमिक स्कूल, कोषिक्कोड

**संपूर्ण कक्षा पुस्तकालय तथा सांस्कृतिक शाम**

शिक्षा मंत्री की अध्यक्षता में

**एक छात्रः एक पुस्तक** पद्धति का उद्घाटन

कार्यक्रम

| | |
|---|---|
| दिनांक | : 5 जुलाई 2021 |
| समय | : शाम 4 बजे से |
| कार्यक्रम | : छात्रों के विविध कार्यक्रम, पुस्तक प्रदर्शनी |
| स्थान | : स्कूल सभागृह |

पढ़ाई से ज्ञान पढ़ें और बढ़े

ज्ञान से संस्कृति

**आप सबका हार्दिक स्वागत है**

## अनुवाद

अनुवाद करने केलिए प्रायः दैनिक जीवन से संबंधित छोटी-छोटी वार्तालाप अंग्रेज़ी में दिए होंगे। आपको इसे हिंदी में अनुवाद करके लिखना है। कठिन शब्दों का अनुवाद प्रश्न पत्र में होंगे। अभी तक 6 अंक का प्रश्न है, लेकिन इस साल के 160 अंकों के प्रश्न पत्र में इसका अंक 6 – 8 तक होने की संभावना है। अंग्रेज़ी का वह वार्तालाप ध्यान से पढ़कर उसका आशय समझकर हिंदी में अनुवाद करें।

प्रश्नः अंग्रेज़ी संवाद का हिंदी में अनुवाद करें।

Radha : Hi Geetha, why are you looking so sad?
Geetha : I am worried about my exam.
Radha : What about your preparation for the exam?
Geetha : I am weak in English.
Radha : Don't worry, you have to spend more time for English.
Geetha : Thank you.

(preparation - तैयारी, weak - कमज़ोर, worried - चिंतित)

इस तरह के वार्तालाप पूछेंगे।

राधा : हाय गीता, तुम इतनी दुःखी क्यों लग रही हो?
गीता : मैं अपनी परीक्षा के बारे में चिंतित हुँ।
राधा : परीक्षा की तैयारी कैसे है?
गीता : मैं अंग्रेज़ी में कमज़ोर हुँ।
राधा : चिंता मत करो, अंग्रेज़ी केलिए अधिक समय देना होगा।
गीता : धन्यवाद

इस तरह के छोटी वार्तालाप का हिंदी में अनुवाद केलिए प्रश्न होंगे। आशय ग्रहण करके लिखें।

## निबंध/संगोष्ठी केलिए आलेख

Do Not Copy

निबंध और संगोष्ठी केलिए आलेख - समकालीन विषयों पर निबंध/आलेख लिखने केलिए प्रश्न अवश्य होंगे। विषय से संबंधित सहायक बिंदु भी दी जाती है। आशय ग्रहण करके बिंदुओं का विकास करके निबंध/आलेख गद्य रूप में लिखना है। 8 अंक का यह प्रश्न लिखने से आपका स्कोर बढेगा।

- भूमिका, स्पष्टीकरण और उपसंहार हो।
- सहायक बिंदुओं का विकास करके अनुच्छेद तैयार करें।
- क्रमबद्ध हो।
- उचित शीर्षक भी दें।

एक उदाहरण देखें:
प्रश्नः
पिछले दो सालों से दुनिया कोरोना के सर्वव्यापी महामारी से पीड़ित है। अब स्कूल-कॉलजों में कक्षा चल नहीं सकते। सब कहीं ऑवलाइन क्लास शुरु हुई। ऐसे अवसर पर 'ऑनलाइन कक्षाः बढ़ती आवश्यकता' विषय पर संगोष्ठी में प्रस्तुत करने केलिए एक आलेख तैयार करें।
या
ऑनलाइन कक्षाः खूबियाँ और कमियाँ विषय पर एक निबंध तैयार करें।

- ऑनलाइन शिक्षाः आज की बढ़ती माँग
- खूबियाँ और कमियाँ
- चुनौतियाँ
- बेहतर बनाने का उपाय

## ऑनलाइन कक्षाः बढ़ती आवश्यकता

सर्वव्यापी महामारी के चपेट में आने के बाद दुनिया के सारे के सारे क्षेत्र इसके चंगुल में फँस पड़ा है। संपूर्ण लॉकडाउन के इस अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में समस्या गंभीर चिंता का विषय है। स्कूल-कॉलेज के छात्रों की पढ़ाई पर भी बुरा असर पड़ा है। अब ऑनलाइन शिक्षा एक वरदान बन गई। वर्तमान तकनीकी युग की देन है ऑनलाइन शिक्षा सुविधा। अंतर्जाल (Internet) के ज़रिए छात्र अपने घर बैठे अध्ययन सामग्री उपलब्ध कर लेते है। इसी दिशा में ऑनलाइन शिक्षा का काफी लाभदायक है।

ऑनलाइन शिक्षा केलिए कई एप्प आज प्रचलित है, जैसे 90 प्लेस, बाइजूस आदि। इसमें राज्य तथा सी बी एस सी पाठ्यक्रम के सभी विषयों की अध्ययन सामग्री उपलब्ध है, जिसमें वीड़ियो के सहारे मुश्किल पाठभाग भी आसावी से समझ सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा की खूबियों के बारे में सोचें तो छात्र घर बैठे ही अध्ययन सामग्री लेकर पढ़ते है। छात्र समय और धन का लाभ उठाते हैं, विभिन्न परीक्षाओं की तैयारी घर बैठकर ही कर सकते हैं। अध्यापक द्वारा ली गई क्लास को रिकार्ड करने की सुविधा भी है, ताकि छात्र को कभी भी उसे देखकर समझ सकते हैं। दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर गूगिल मीट, टीच मिंट आदि एप्पों के सहारे अपने छात्रों को देखकर कक्षा चल सकते हैं। नौकरी करनेवालों को आगे की पढ़ाई केलिए भी इसकी सुविधा इस्तेमाल कर सकें।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की कमियाँ क्या-क्या है? ग्रामीण परिवेश से छात्रों केलिए कंप्यूटर तथा अंतर्जाल एवं वाई-फाई की सुविधा कभी-कभी अप्राप्य है। लॉकडाउन जैसी परिस्थितियों में नौकरी के अभाव में अंतर्जाल का खर्चा उठाना मुश्किल होगा। स्मार्ट फोन, लॉपटोप, टी वी, कंप्यूटर आदि के अभाव में छात्र इसका पूर्णतः लाभ न उठ पाते है। स्कूल-कॉलेजों में विभिन्न छात्र-छात्राएँ एक साथ पढ़ाते समय एक प्रकार का प्रतियोगिता मनोभाव उन में होती है, जो अपने आप की क्षमता बढ़ाने केलिए सहायक होती है। इस तरह के प्रतियोगिता ऑनलाइन शिक्षा में काफी कम है। इलक्ट्रॉनिक गैजेट्स के लगातार उपयोग के कारण छोटी कक्षाओं के छात्रों में सिरदर्द होते है, कभी-कभी दृष्टि कम हो सकते है। कभी-कभी घरों में माता-पिता के अभाव में छात्र वाई-फाई का दुरुपयोग करने की संभावना भी है।

Do Not Copy

ऑनलाइन शिक्षा संबंधित चुनौतियों के बारे में देखें तो सबसे पहले यह समस्या उपस्थित होती है कि जहाँ अंतर्जाल उपलब्ध नहीं है, वहाँ के छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा अप्राप्य है। जिन विषयों में प्रायोगिक ज्ञान (Practical Knowledge) की ज़रूरत है, वह भी ऑनलाइन शिक्षा में मुश्किल है।

कोरोना से हम कब मुक्ति पा सकें, यह बात अभी तक अज्ञात है, इसलिए कि स्कूल-कॉलेजों में सामाजिक दूरी में रखने की परिस्थिति यह अच्छी विकल्प होगा। अंतर्जाल की उचित व्यवस्था को व्यापक करें ताकि ऑनलाइन शिक्षा का सबकी पहुँच में आना, अध्यापक को भी उचित तकनीकी प्रशिक्षण देना, आर्थिक विषमता से जूझनेवाले छात्रों को भी यदि स्मार्ट फोन, टी वी आदि उपलब्ध करने केलिए उचित कदम उठाए जाते तो सब छात्र ऑनलाइन शिक्षा का फायदा उठाएँ।

कोविद - 19 की खतरनाक स्थिति में ऑनलाइन शिक्षा एक वरदान ही है। इसमें ज़्यादा नुकसान अवश्य है, उसे सुधारने का उपाय सोचकर हर छात्र को इसका भागीजारी बनाकर इसके लाभ उठाने का अवसर मिलें तो यह काफी लाभदायक है।

## Lessons Out Of FOCUS AREA

## सूचना का अधिकार पत्र (Right Information Letter)

ग्यारहवीं कक्षा के हिंदी पाठ-पुस्तक के इकाई 1 के तृतीय पाठ 'यह हमारा अधिकार है'।

**ध्यान रखें:**

- सूचना के अधिकार पत्र लिखने केलिए दिए प्रश्न ध्यान से पढ़ें और प्रतिपादित विषय अच्छी तरह समझें।
- आवेदक का नाम (प्रेषक), यदि प्रश्न में है तो उसे लिखना है। नहीं तो 'नाम' व 'पता' लिखना है। (आपका नाम, पता या स्कूल का नाम लिखने की ज़रूरत नहीं।)
- किस विभाग को पत्र लिखना है, उसी के अनुकूल 'सेवा में' लिखना है।
- ऊपर दायीं ओर दस रुपए का डाक टिकट अनिवार्य है।
- सूचना का विवरण प्रश्न के रूप में लिखना है। प्रश्न एक या एक से अधिक हो सकता है। प्रश्नों के उत्तर लिखने की आवश्यकता नहीं।
- नीचे दायीं ओर आवेदक का हस्ताक्षर व नाम तथा बायीं ओर स्थान और तारीख अनिवार्य है।

आठ अंक का प्रश्न होगा। ध्यान से लिखें तो पूरे 8 अंक ज़रूर मिलेगा।

**यह प्रश्न देखें:**

सूचना: निम्न सुर्खियाँ पढ़िए:

केरल: कोविड़-19 की दूसरी लहर काफी खतरनाक

पिछले 40 दिनों में लगभग 5500 निरीहों की मृत्यु

केरल: मई 8 से जून 16 तक संपूर्ण लॉकडाउन्

दूसरी लहर: युवाओं को बनाया सबसे ज़्यादा शिकार

**कोरोना वायरस की दूसरी लहर का खतरा** लगातार बढ़ रहा है। **नियंत्रण केलिए** सरकार द्वारा क्या क्या कार्रवाइयाँ की गई है, उसकी जानकारी केलिए **अरविंद, 'पार्वती मंदिर', कलूर, कोच्चि** की ओर से **सार्वजनिक सूचना अधिकारी, स्वास्थ्य विभाग, केरल सरकार** के नाम पर सूचना अधिकार पत्र लिखता है। वह पत्र तैयार करें।

.....

उत्तर लिखने के पूर्व ज़रा ध्यान रखें:

इस प्रश्न पढ़ने से हमें क्या-क्या मालूम हुई? प्रश्न में परखें –

(1) प्रेषक/आवेदक का नाम और पता : अरविंद, 'पार्वती मंदिर', कलूर, कोच्चि

(2) सेवा में : सार्वजनिक सूचना अधिकारी, स्वास्थ्य विभाग, केरल सरकार

Do Not Copy

(3) विषय : कोरोना वायरस की दूसरी लहर का नियंत्रण

आप अपने प्रश्न-पत्र में इन्हीं बैंतों के नीचे रेखांकन (Underline) करें तो उत्तर लिखना आसानी होगा। अभी उत्तर लिखने की कोशिश करें।

.....

प्रेषक

**दस रुपए**

अरविंद,
'पार्वती मंदिर',
कलूर,
कोच्चि।

सेवा में

सार्वजनिक सूचना अधिकारी,
स्वास्थ्य विभाग,
केरल सरकार।

महोदय,

विषयः कोरोना वायरस की दूसरी लहर का नियंत्रण से संबंधित।

संदर्भः सूचना का अधिकार अधिनियम – 2005

(1) कोरोना वायरस के दूसरी लहर का नियंत्रण केलिए सरकार की ओर से क्या-क्या कार्रवाइयाँ की गई है?
(2) इस खतरनाक वायरस के बारे में जन साधारण को सचेच करने केलिए कौन-कौन से प्रावधान है?
(3) विभाग द्वारा जनता को चेतावनी देने केलिए कौन कौन-सी कार्रवाइयाँ की गई है?

कलूर,
10.05.2021

हस्ताक्षर
(अरविंद)

.....

**<u>एक और प्रश्न प्रश्नः</u>**

सूचनाः यह समाचार पढ़ें।

**<u>माता वृद्धाश्रम में: बच्चे के खिलाफ कानूनी कार्रवाई</u>**

तिरुवनंतपुरमः केरल महिला आयोग ने 70 साल की वृद्ध की संपत्तियाँ और सोने के जवाहरात बेचकर रुपए हथियाने के बाद उसे कोल्लम के एक वृद्धाश्रम में छोड़नेवाले उनके बच्चों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरु करने का फैसला किया। आयोग ने कहा है कि वह पालक्काड निवासी 70 वर्षीय वृद्ध को कानूनी सहायता कराएगा ताकि बच्चों द्वारा उससे ली गई संपत्ति वापस कराई जा सकें।

(जवाहरात - Gems , हथियाना - To grab)

आजकल के अखबारों में इस तरह के समाचार आप ज़रूर देखे होंगे। **<u>वृद्ध माँ-बाप का देखभाल</u>** बच्चों का कर्तव्य है। लेकिन आजकल के जिंदगी के भाग दौड और अणु-परिवार के वजह घरों में माँ-बाप संकट में है। वृद्धों के विरुद्ध होनेवाले ऐसे अत्याचारों के खिलाफ सरकार की ओर की गई कार्रवाइयों की जानकारी पाने केलिए **<u>सार्वजनिक सूचना अधिकारी, समाज कल्याण विभाग, केरल सरकार</u>** के नाम सूचना का अधिकार पत्र तैयार करें।

.....

यह प्रश्न पढ़ने से हमें क्या-क्या मालूम हुई? प्रश्न में परखें –

(1) प्रेषक/आवेदक का नाम और पता : नहीं दिया है। अतः नाम, पता लिखना है।
(2) सेवा में : सार्वजनिक सूचना अधिकारी, समाज कल्याण विभाग, केरल सरकार
(3) विषय : वृद्ध माँ-बाप का देखभाल

.....

Do Not Copy
HSS REPORTER SINCE 2015

प्रेषक

नाम,
पता।

**दस रुपए**

सेवा में

सार्वजनिक सूचना अधिकारी,
समाज कल्याण विभाग,
केरल सरकार।

महोदय,

विषयः वृद्धों के देखभाल से संबंधित।

संदर्भः सूचना का अधिकार अधिनियम – 2005

(1) केरल में वृद्धों के विरुद्ध होनेवाले अत्याचारों की रोकथाम केलिए सरकार की ओर से क्या-क्या कार्रवाइयाँ की गई है?
(2) वृद्धों के विरुद्ध अत्याचार करनेवाले बच्चों को मिलनेवाला अधिकतम दंड क्या है?
(3) यदि हमारे आस पडोस में ऐसे खबर सुनाई तो किस कार्यालय में सूचना देनी है?
(4) उस कार्यालय का दूरभाष उपलब्ध करा सकते हैं?

स्थान,
10.05.2021

हस्ताक्षर
(नाम)

.....

Do Not Copy
HSS REPORTER SINCE 2015

## फिल्मी समीक्षा

पाठ पुस्तक के इकाई 2, पाठ संख्या 2 फिल्मी समीक्षा है। अपनी मन पसंद फिल्म की समीक्षा लिखने केलिए ज़रूर एक प्रश्न, 8 अंक केलिए पूछे जाएगा। यदि आप लिखें तो ज़रूर पूरे 8 अंक आपको मिलेगा।

फिल्म के गुण-दोष के विवेचन अर्थात किसी भी फिल्म की समग्र विश्लेषण ही फिल्मी समीक्षा है। फिल्म की समीक्षा लिखते समय इन्हीं बातें पर ज़रा ध्यान रखें।

- ✓ फिल्म का कथासर, पात्र की भूमिका, निदेशक की भूमिका, संवाद, छायांकन, संपादन, गीत आदि संक्षिप्त चर्चा करके उस फिल्म की समग्रता पर अपना दृष्टिकोण प्रकट करना है।
- ✓ पाठ पुस्तक में ब्लैक फिल्म की समीक्षा दी गई है। उसको या अन्य किसी मनपसंद फिल्म की समीक्षा लिखना है। (हिंदी फिल्म न होनी चाहिए, किसी भी भाषा आप चुन सकें।

पाठ-पुस्तक के 39 – 40 पन्ने में दिए ब्लैक का एक संक्षिप्त रूप यहाँ आपके लिए प्रस्तुत है।
प्रश्नः किसी मनपसंद फिल्म की समीक्षा करें।

- फिल्म का कथासार – निदेशक की भूमिका – पटकथा, पात्र, छायांकन आदि – फिल्म के प्रति अपना दृष्टिकोण

### ब्लैकः स्पर्श जहाँ भाषा बनता है.....

संजय लीला भंसाली द्वारा निदेशित 'ब्लैक' एक संवेदनशील फिल्म है। यह हेलन केल्लर और उसकी टीचर आनि सुल्लिवन केलिए अर्पित है।

अपनी शिक्षक देवराज सहाय (अमिताभ बच्चन) की तलाश में भटकती मिशैल (राणी मुखर्जी) की संवेदना से फिल्म शुरु होती है। उसे पता चलता है कि देवराज एक आस्पताल में है। अंधी मिशैल सब कुछ खोकर उससे मिलने दौडती है तो अतीत जीवन की कहानी शुरु होती है।

मिशैल अंधी, बहरी, गूँगी लड़की थी। अपंगता से पीड़ित मिशैल जिद्दी और आक्रामक है। दुःखी माँ-बाप उसे सुधारने केलिए बहरों एवं अंधों के अध्यापक देवराज सहाय को नियुक्त करते हैं। सनकी एवं पियक्कड देवराज का मिशैल से व्यवहार पहले कठोर था। बाद में उसको घर से बाहर निकालकर प्रकृति से परिचय कराते है। मिशैल सुधारने लगी। बोलने-सुनने में क्षमता आई तो वह उसे स्कूल में भर्ती कराई। मिशैल को स्नातक बनाना उसका सपना था।

बीच में देवराज समझता है कि मिशैल का व्यवहार नया मोड़ लेता है तब वह कहीं खो जाता है। बारह वर्ष बीत गई। विस्मृति रोग से पीड़ित देवराज मिशैल को पहचानने में असफल रहा। गुरु की अवस्था में मिशैल टूट गई। पुरानी यादें दिलाकर देवराज की खोई स्मृतियों को जगाने में मिशैल सफल हो जाती है। वह देवराज का हाथ पकड़कर आगे निकलती है।

भवानी अय्यर, प्रकाश कपाड़िया और संजय लीला भंसाली की पटकथा गतिशील एवं हृदयस्पर्शी है। अपंग जीवन की कहानी दर्शकों के दिल को कचोटती है। संवाद पात्र, भाव एवं परिवेश के अनुकूल है। शिमला की शीतलता में इसका छायांकन रवि के चंद्रन ने किया है। ध्वन्यांकन रसूल पूक्कुट्टी का है। बेला सहगल ने सतर्कता से इसका संपादन कार्य किया है। एक मात्र गीत प्रसंगोचित है। पार्श्वसंगीत बेहतरीन है।

फिल्म में अमिताभ बच्चन, राणी मुखर्जी, आयशा कपूर की महत्वपूर्ण भूमिका है। देवराज की भूमिका बच्चन ने अन्वय बना दिया। राणी मुखर्जी अपंग जीवन की मर्म व्यथा को स्मरणीय बना दिया। छोटी मिशैल की भूमिका में आयशा कपूर ने जादू का काम किया। फिल्म की स्तरीयता का अधिकार निदेशक का है। हरेक क्षेत्र में उसका संस्पर्श है। चरमसीमा सकरुण एवं सारपूर्ण है। अपनी संपूर्ण क्षमता से संजय लीला भंसाली ने दर्शकों के दिल पर ब्लैक की प्रतिष्ठा की है। हिंदी फिल्म के इतिहास में मनोविकारों की यह आर्द्र कहानी ज़रूर एक मील पत्थर है।

Do Not Copy
HSS REPORTER SINCE 2015

## पारिभाषिक शब्दावली

पाठ पुस्तक के इकाई 4 के दूसरी पाठ समय के साथ हम भी.....
पाठ पुस्तक के पन्ने 94 में दिए अंग्रेज़ी -हिंदी पारिभाषिक शब्दावली पढ़ें। उन में से आठ शब्द प्रश्न पूछेंगे। 8 अंक का यह प्रश्न भी आपकी स्कोर बढ़ाने केलिए सहायक होगा।
प्रश्न के नमूनाः
1. सही मिलान करें।

| | |
|---|---|
| Categories | - खोज |
| Search | - अगला चरण |
| Editing | - प्रक्रिया |
| Process | - संकेत |
| Output | - ईक्षण |
| Format | - बहिर्पात |
| Next step | - श्रेणियाँ |
| Symbol | - प्रारूप |

उत्तरः

| | |
|---|---|
| Categories | - श्रेणियाँ |
| Search | - खोज |
| Editing | - ईक्षण |
| Process | - प्रक्रिया |
| Output | - बहिर्पात |
| Format | - प्रारूप |
| Next step | - अगला चरण |
| Symbol | - प्रारूप संकेत |

**********

Do Not Copy